NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D./ B. Pharma
BPT MPT D/BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
विजडम इंडिया
निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति
लखनऊ से प्रकाशित
EMAIL: sheelshukla100@gmail.com

वर्ष: 14 अंक: 108 लखनऊ, मंगलवार 03 दिसंबर 2024 मूल्य: 02 रूपये पृष्ठ- 08

धरती माता की रक्षा करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा : मुख्यमंत्री

लखनऊ(संवाददाता) रू मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारतीय संस्कृति वैदिक कालखण्ड से सम्पूर्ण सृष्टि की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का आह्वान करती रही है। हम सभी को वैदिक परम्परा तथा ऋषियों के मंत्रों का अनुसरण करते हुए धरती माता की रक्षा करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। इस कार्य से समाज तथा संस्थानों को भी जुड़ना पड़ेगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जीव सृष्टि को बचाने के लिए देश में वर्ष 2070 तक नेट जीरो (शून्य कार्बन उत्सर्जन) का लक्ष्य रखा है। इस दिशा मेंअनेक प्रयास प्रारम्भ किए गए हैं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता हो सकती है। संस्थान इस विषय पर शोध तथा नवाचार को आगे बढ़ाएं। विशेषज्ञ संस्थानों में जाकर पना योगदान दें। जब सभी लोग मिलकर अभियान चलाएंगे तो हम जीव सृष्टि के लिए सर्वाधिक उपयोगी धरती माता को बचाने में सफल होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि फरवरी 2024 में प्रधानमंत्री जी ने पी0एम0 सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना प्रारम्भ की। इसके अन्तर्गत रूफटॉप सोलर पैनल लगाने की व्यवस्था की जाती है। यह योजना रिन्यूअल एनर्जी को बढ़ावा देने तथा स्वच्छ ऊर्जा प्राप्त करने का माध्यम बनेगी। प्रदेश में नेट मीटरिंग तथा नेट बिलिंग की व्यवस्था की गई है। आप अपने घर में सोलर पैनल लगाइए। पावर कॉरपोरेशन के साथ आपका एक समझौता होगा। जितनी बिजली चाहिए, उतनी बिजली पावर कॉरपोरेशन आपको देगा, शेष बिजली की अतिरिक्त कीमत प्राप्त होगी। घरेलू उपभोक्ताओं के लिए बिजली प्राप्त करने तथा प्रदान करने तथा कामर्शियल सेक्टर के लिए अलग अलग दरें हैं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि देश में 500 गीगावॉट रिन्यूअल एनर्जी क्षमता प्राप्त करने के लिए राज्यों केअलग–अलग लक्ष्य तय किए गए हैं। इसके लिए एक बड़ा कार्यक्रम बनाया गया। सौर ऊर्जा नीति के अन्तर्गत प्रदेश सरकार द्वारा 22,000 मेगावॉट का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अभी तक 2,600 मेगावॉट से अधिक के संयंत्रों की कमिशनिंग हो गयी है। इसके अलावा, कुल 6,800 मेगावॉट से अधिक के सौर ऊर्जा प्लाण्ट निर्माणाधीन है, जो आगामी 1.5 से 02 वर्ष में पूर्ण हो जाएंगे। प्रदेश के तालाबों तथा बांधों में फ्लोटिंग सोलर पैनल स्थापित करने, एक्सप्रेस–वे तथा हाईवे के दोनों साइड तथा नहरों पर सोलर पैनल स्थापित करने के बड़े कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जा रहा है।

सरकार मशीनरी के दुरुपयोग से मुक्त पाक-साफ चुनाव बहुत बड़ी चुनौती : मायावती

लखनऊ बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने कहा कि सरकार मशीनरी के दुरुपयोग से मुक्त पाक–साफ चुनाव कल की तरह आज भी बहुत बड़ी चुनौती बना हुआ है। बसपा मुखिया मायावती ने शनिवार को उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड के पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारियों तथा जिला अध्यक्षों सहित पार्टी के अन्य नेताओं के साथ समीक्षा बैठक की। हाल ही में हरियाणा, झारखंड व महाराष्ट्र में हुए विधानसभा चुनाव परिणामों का उल्लेख करते हुए बसपा प्रमुख ने कहा कि देश में स्वतंत्र, निष्पक्ष तथा धनबल, बाहुबल और सरकार मशीनरी के दुरुपयोग से मुक्त पाक–साफ चुनाव कल की तरह आज भी बहुत बड़ी चुनौती बनी हुई है। आम जनता का चुनावी तंत्र से विश्वास की कमी देश के संविधान व लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी है। इसका जल्ध्द से जल्ध्द समुचित समाधान नध्किालना बेहतर। देश में संविधान के हिसाब से चेक एंड बैलेंस की जो व्यवस्था है, उसको लेकर हर लोकतांत्रिक व संवैधानिक संस्था को अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभानी होगी, तभी आम जनता के विश्वास को मजबूती मिलेगी और कानूनी प्रावधानों का सही लाभ लोगों को मिल पाएगा।संसद में चल रहे गतिरोध पर मायावती ने कहा कि जनता व देश के हित में संसद की कार्यवाही चलनी चाहध्ए। इसके लिए सरकार और विपक्ष दोनों को गंभीर होना जरूरी। उन्होंने कहा कि पूर्व में कांग्रेस की सरकार की तरह भाजपा की गरीब–विरोधी व धन्नासेठ समर्थक नीतियों एवं कार्यकलापों के विरुद्ध लोगों मेंआक्रोश व्याप्त है। इससे लोगों का ध्यान बांटने के लिए ही भाजपा नए जातिवादी, सांप्रदायध्कि व संकीर्ण हथकंडों का इस्तेमाल करती है और चुनाव में इसका लाभ भी ले लेती है। मायावती ने कहा किर चुनावों के समय में जनहित व जनकल्याण के किए गए लुभावने वादों को सरकार बन जाने पर भुला दध्यिा जाता है। इस प्रकार की राजनीति से आम जनता व देश का भला नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर परिनिर्वाण दध्विस के संबंध में6 दिसंबर को होने वाले कार्यक्रमों के बारे में बताया कि उत्तर प्रदेश में लखनऊ, कानपुर व अयोध्या मंडल के लोग यूपी. की राजधानी के गोमतीनगर इलाके में बसपा सरकार द्वारा निर्मित ष्डॉ. भीमराव अंबेडकर सामाजिक परिवर्तन स्थलष स्थित गुंबद आकार वाले ष्डॉ. भीमराव अंबेडकर स्थलष में उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे, जबकि मेरठ व दिल्ली के लोग नोएडा में राष्ट्रीय दलित प्रेरणा स्थल एवं ग्रीन गार्डनष में एकत्र होकर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। यूपी के बाकी 14 मंडलों के लोग अपने–अपने मंडल में ही बीएसपी के तत्वावधान मेंआयोजित होने वाले विचार संगोष्ठी कार्यक्रमों में शामिल होंगे।

संसद में आपकी आवाज को बुलंद करूंगी, वायनाड के लोगों से बोलीं प्रियंका गांधी वाड्रा

वायनाड। कांग्रेस महासचिव और सांसद प्रियंका गांधी वायनाड लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में जीत हासिल करने के बाद शनिवार को दो दिवसीय दौरे पर केरल पहुंचीं। इस दौरान उन्होंने एक विशाल जनसभा को संबोधित किया। प्रियंका गांधी ने चुनाव में जीत दिलाने के लिए निर्वानच क्षेत्र के लोगों को धन्यवाद दिया और कहा कि वह वायनाड के लोगों को कभी निराश नहीं करेंगी।प्रियंका गांधी ने वायनाड में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, सबसे पहले मैं आप सभी को आज यहां लाने और मुझे अपना सांसद बनाने के लिए तहे दिल से धन्यवाद देती हूं। आपने मुझे जो कुछ दिया है, उसके लिए मैं आप सभी के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहती हूं। असली मूल्य आपके प्यार और विश्वास में निहित है। संसद में आपके प्रतिनिधि के रूप में मैं आपकी आवाज को बुलंद करूंगी, आपकी समस्याओं को हल करने के लिए अथक प्रयास करूंगी और आपके विश्वासों, मूल्यों, आशाओं और आकांक्षाओं को हर दिन, अभी और हमेशा बनाए रखूंगी। उन्होंने पिछले पांच वर्षों में वायनाड के लोगों के लिए किए गए कार्यों के लिए अपने भाई राहुल गांधी को भी धन्यवाद दिया। प्रियंका गांधी ने वायनाड में सभा को संबोधित करते हुए कहा, श्मैं अपने भाई को पिछले पांच वर्षों में यहां किए गए सभी कार्यों के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। यह आपके उस विश्वास के कारण है कि आपने मुझ पर भरोसा किया है। मैं सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं नेताओं .. आपने मुझे जो प्यार दिया है उसके लिए मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूं। प्रियंका ने आगे कहा कि वह निर्वाचन क्षेत्र के लोगों से सीखने के लिए यहां आई हैं उन्होंने कहा कि वह यहां की समस्याओं से अवगत हैं। उन्होंने कहा, मैं आपसे सीखने के लिए यहां हूं। मैं आपकी समस्याओं को गहराई से समझने के लिए यहां हूं। बेशक, मैं रात्रि प्रतिबंध, मानव–पशु संघर्ष, स्वास्थ्य सेवाओं की आवश्यकता, बेहतर शैक्षणिक संस्थानों की आवश्यकता के बारे में जानता हूं। लेकिन मैं हूं अब इन सबके लिए लड़ने, आपके साथ काम करने और उन्हें ठीक से समझने के लिए मैं आपके घर आऊंगी, आपसे मिलूंगी, मेरे कार्यालय के दरवाजे खुले हैं.. मैं आपको निराश नहीं करूंगी। कांग्रेस नेता ने कहा कि पिछले 35 सालों में वह प्रचार करती रही हैं लेकिन यह पहली बार है जब उन्होंने चुनाव लड़ा है। प्रियंका ने कहा, ष्मुझे चुनाव प्रचार करते हुए 35 साल हो गए हैं और यह पहली बार है, जब मैंने चुनाव लड़ा है। इन वर्षों में, मैं इन अभियानों में लाखों लोगों से मिला हूं.. मैं कहना चाहती हूं कि मुझे उनमें से हर एक याद है आप, जिन्होंने वायनाड में मेरा इंतजार किया, मुझे आपकी हर मां, बच्चे याद हैं.. मुझे आपका हर एक आलिंगन, चुंबन, फूल याद हैं। कांग्रेस महासचिव ने इससे पहले 28 नवंबर को संविधान की प्रति हाथ में लेकर लोकसभा में सांसद के रूप में शपथ ली थी। दक्षिणी राज्य के प्रतिनिधि के रूप में शपथ लेते समय प्रियंका को केरल कसावु साड़ी पहने देखा गया। प्रियंका गांधी वाड्रा ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) के सत्यन मोकेरी को हराकर वायनाड लोकसभा सीट 4,10,931 वोटों के अंतर से हासिल की।

संभल मामलाः मुरादाबाद की सांसद रुचि वीरा के घर पर पुलिस का सख्त पहरा

मुरादाबाद उत्तर प्रदेश के संभल में हुई हिंसा को लेकर समाजवादी पार्टी (सपा) अपना एक दल घटना का मुआयना करने के लिए भेज रही थी। इसी क्रम में सपा की मुरादाबाद से सांसद रुचि वीरा संभल जाने की तैयारी में थीं। पुलिस ने उनके घर के बाहर सख्त पहरा बैठा रखा है। जामा मस्जिद के सर्वे के बाद भड़की हिंसा के बीच संभल जिला प्रशासन शांति और कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगातार निगरानी बनाए हुए है। इसी बीच मुरादाबाद की सपा सांसद संभल जाने के लिए तैयारी कर रही थीं। तभी पुलिस के एक दल ने उनके घर पर पहुंच कर उन्हें रोक दिया। सभी रास्तों पर पुलिस ने सख्त पहरा बैठा रखा है। राजधानी लखनऊ में शनिवार को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय के घर के बाहर पुलिस लगा दी है। साथ ही विधान परिषद में नेता प्रतिपक्ष लाल बिहारी यादव के आवास के बाहर भी पुलिस तैनात है। दरअसल सपा के डेलिगेशन को संभल जाना था। इससे पहले ही नेताओं के घरों के बाहर पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। सपा का एक दल शनिवार को नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडे की अगुवाई में संभल जा रहा था। पुलिस इसे लेकर पहले से ही सतर्क थी। माता प्रसाद के घर पर भारी संख्या में पुलिस पहरा दे रही है। उनसे घर पर रहने का अनुरोध किया था। ज्ञात हो कि विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडे के नेतृत्व में सपा का 15 सदस्यीय डेलिगेशन संभल जाने वाला था। यह सभी संभल में पीड़ितों से मिलकर जानकारी लेने जा रहा था। इसके बाद वह लोग जानकारी सपा मुखिया के साथ साझा करना था। फिलहाल प्रतिनिधिमंडल को आने से रोक दिया गया है और माता प्रसाद के घर के बाद पुलिस सुरक्षा तैनात है। इस पर सपा अध्यक्ष और सूबे के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भी इस मामले पर सोशल मीडिया मंच एक्स पोस्ट पर अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि ऐसे प्रतिबंध लगाना भाजपा सरकार के शासन, प्रशासन और सरकारी प्रबंधन की नाकामी है।

सीएम नीतीश ने कृषि यांत्रिकरण मेले का किया उद्घाटन, कहा, हम किसानों के हित के लिए कर रहे काम

पटना मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गांधी मैदान में आयोजित 4 दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि यांत्रिकरण मेले का (एग्रो बिहार–2024) का फीता काटकर उद्घाटन किया। उद्घाटन के पश्चात् मुख्यमंत्री ने कृषि यांत्रिकरण प्रदर्शनी एवं मेले का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान प्रदर्शनी में लगाए गए विभिन्न स्टॉलों का निरीक्षण किया। इस दौरान विभिन्न राज्यों से आए कृषि यंत्र निर्माता कंपनी के प्रतिनिधियों ने यंत्र के उपयोग एवं इससे मिलने वाली सुविधाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। प्रदर्शनी में लगाए गए नवीनतम कृषि यंत्र, फसल अवशेष प्रबंधन यंत्र, बागवानी से संबंधित कृषि यंत्र, विभिन्न नर्सरी, आधुनिकतम फसल के बीजों, कृषि विभाग की योजनाओं, क्रियाकलापों आदि के बारे में मुख्यमंत्री ने विस्तृत जानकारी ली। ज्ञातव्य है कि कृषि विभाग द्वारा 29 नवंबर से 2 दिसंबर, 2024 के बीच चार दिवसीय कृषि यांत्रिकरण प्रदर्शनी एवं मेला का आयोजन किया जा रहा है। यह मेला पूर्वी भारत का सबसे बड़ा यांत्रिकरण मेला है। वर्ष 2011 से हर वर्ष कृषि यांत्रिकरण मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस राज्य–स्तरीय कृषि यांत्रिकरण प्रदर्शनी एवं मेले में 125 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं। इस प्रदर्शनी में बिहार के अलावे दिल्ली, हरियाणा, गुजरात, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों के कृषि यंत्र निर्माता भाग ले रहे हैं। राज्य एवं राज्य के बाहर के वरीय पदाधिकारी, वैज्ञानिक, कृषि विशेषज्ञ एवं कृषि व्यवसाय से जुड़े उद्यमी भी मेले में भाग ले रहे है। प्रतिदिन राज्य के सभी जिलों से 4500 किसानों को सरकारी खर्चे पर मेला भ्रमण की व्यवस्था की गई है। मेले में प्रत्येक दिन किसान पाठशाला में किसानों को नवीनतम कृषि यंत्र, फसल अवशेष प्रबंधन के यंत्र, बागवानी से संबंधित कृषि यंत्र एवं उनके रख–रखाव के बारे में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कृषि विभाग की योजनाओं ध् क्रियाकलापों के बारे में प्रदर्शनी लगाई गई है। आधुनिक कृषि में कृषि यंत्रों का महत्वपूर्ण योगदान है। अत्याधुनिक कृषि यंत्रों को व्यवहार में लाये जाने से छोटे किसानों को खेती के काम करने में बहुत सहूलियत होती है। कृषि यांत्रिकरण योजना बिहार के सभी जिलों में लागू है जिसके अन्तर्गत खेत की जुताई, बुआई, निकाई, गुराई, सिंचाई, फसल की कटाई, इत्यादि कार्यों के लिए 110 प्रकार के कृषि यंत्रों पर अनुदान दिया जा रहा है। फसल अवशेष प्रबंधन से संबंधित यंत्रों को बढ़ावा देने के लिए उन पर 80 प्रतिशत तक अनुदान दिया जा रहा है। सरकार द्वारा जीविका समूह एवं प्रगतिशील किसान समूह को कृषि यंत्र उपलब्ध कराने के लिए श्कृषि यंत्र बैंकश योजना चलाई गयी है, जिसके अन्तर्गत 10 लाख रूपये तक का अनुदान दिया जा रहा है। वर्ष 2008 से ही राज्य में कृषि रोड मैप बनाकर कृषि विकास कार्यक्रम चलाए गए, जिससे फसलों, फलों एवं सब्जियों के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हुई। राज्य में धान, गेहूं एवं मकई की उत्पादकता पहले के मुकाबले लगभग दोगुनी हो गई है। साथ ही दूध, अंडा, मांस एवं मछली उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। मछली का उत्पादन ढाई गुना से अधिक हो गया है जिससे मछली के उत्पादन में बिहार लगभग आत्मनिर्भर हो गया है। वर्तमान में चौथे कृषि रोड मैप (2023 से 2028) का क्रियान्वयन शुरू हो चुका है, जिसमें कृषि प्रक्षेत्र के समग्र विकास हेतु लगभग 1 लाख 62 हजार करोड़ रूपये की स्वीकृति दी गई है। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने विभिन्न लाभुकों के बीच सांकेतिक रुप से कृषि यंत्रों का वितरण किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री को कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने पुष्प गुच्छ एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर स्वागत किया। विभिन्न लाभुकों ने भी मुख्यमंत्री को पेंटिंग्स भेंटकर स्वागत किया। कार्यक्रम के पश्चात् पत्रकारों से बात करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि कृषि यांत्रिकरण मेले का आयोजन बहुत पहले से हमलोग करा रहे हैं। नवंबर 2005 में सरकार में आने के बाद से कृषि क्षेत्र के विकास एवं किसानों के हित के लिए कई कदम उठाए गए हैं जिसका लाभ किसानों को मिल रहा है। किसानों के हित के लिए हमलोग लगातार काम कर रहे हैं। हमलोगों के सरकार में आने के पहले किसानों एवं कृषि क्षेत्र के विकास के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए। हमलोगों ने राज्य में कृषि रोड मैप बनाया और कृषि विकास कार्यक्रम चलाए गए, जिससे फसलों, फलों एवं सब्जियों के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि हुई। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों को कृषि कार्य में सहूलियत देने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। प्रदर्शनी में लगाए गए कृषि यंत्रों और कृषि विभाग की विभिन्न योजनाओं और क्रियाकलापों के बारे में जो जानकारी दी गई है उसको सभी लोग देखें और समझें।

स्वाति मालीवाल ने कालकाजी विधानसभा क्षेत्र का किया दौरा, बोली-नर्क जैसा हाल

नयी दिल्ली राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने शनिवार को सुबह कालकाजी का दौरा किया। जहां के लोगों ने टूटी सड़कोंऔर खराब बुनियादी ढांचे के बारे में चिंता जताई। मालीवाल वहां की भयावह स्थिति देखकर बहुत स्तब्ध रह गईं। उन्होंने खस्ताहाल सड़कों, पानी की किल्लत और कूड़े के ढेर का मुद्दा उठाया। राज्यसभा सांसद ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर सवाल उठाए। मालीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, सीएम आतिशी मार्लेना के विधानसभा क्षेत्र कालकाजी का नर्क जैसा हाल। राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने हाल ही में दिल्ली के बुराड़ी का दौरा किया था। मालीवाल ने इलाके का एक वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया था और पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और मौजूदा दिल्ली की सीएम आतिशी पर सवाल उठाए थे। वीडियो की शुरुआत में एक ई–रिक्शा को पानी से भरी और गड्ढों से भरी सड़क पर चलने के लिए संघर्ष करते हुए दिखाया गया था। इसके बाद वीडियो में और भी सड़क दिखाई गई, जो पानी से भरी और गंदी थीं। बुराड़ी की हालत पर हैरान मालीवाल कहती हैं कि समझ नहीं आता कि वहां लोग कैसे रहते हैं? जवाब में एक स्थानीय महिला भावुक होकर कहती है कि बिहार दिल्ली से बेहतर है। मालीवाल ने अपने पोस्ट में बताया था कि बुराड़ी के निवासियों ने उन्हें अपने क्षेत्र की दयनीय स्थिति को देखने के लिए उन्हें आमंत्रित किया था। इससे पहले दो नवंबर को आम आदमी पार्टी (आप) से राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल मुख्यमंत्री आतिशी के घर पहुंची थी और उन्होंने द्वारका इलाके से बोतल में भरकर लाया गया गंदा पानी सीएम आवास के गेट पर डाल दिया था। स्वाति मालीवाल ने आतिशी को चेतावनी देते हुए बताया है कि अभी तो ये सैंपल था। अगर हालात ठीक नहीं हुए तो घरों से टैंकर में भरकर गंदा पानी लाया जाएगा और मुख्यमंत्री के घर के बाहर उसे डाला जाएगा।

बस खाई में गिरी, बच्चे समेत 4 की मौत,खरगोन में 21 यात्री घायल

खरगोन खरगोन जिले में शनिवार को यात्री बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में गिर गई। हादसे में तीन महिलाओं और एक बच्चे की मौके पर मौत हो गई। 21 यात्री घायल हुए हैं। हादसा खरगोन जिला मुख्यालय से 42 किलोमीटर दूर बड़वानी जिले से लगे जिरातपुरा फाटे पर हुआ। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव और घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया है। जानकारी के मुताबिक बस खरगोन से दोपहर 12.10 बजे आलीराजपुर के लिए निकली थी। इसमें 25 से 30 यात्री सवार थे। इस दौरान जिरातपुरा फाटे के पास बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खाई में पलटी गई। सूचना के बाद मौके पर सेगांव पुलिस पहुंची और रेस्क्यू शुरू किया। कुछ देर बाद तहसीलदार भी घटनास्थल पर पहुंच गए। खाई में गिरी बस को 2 जेसीबी की मदद से सीधा कर नीचे फंसे लोगों को बाहर निकाला गया। सभी घायलों को ग्रामीणों की मदद से सेगांव अस्पताल लाया गया। यहां से 11 गंभीर घायलों को जिला अस्पताल पहुंचाया गया है। खरगोन एसपी धर्मराज मीना ने बताया कि बस सेगांव से करीब 500 मीटर आगे मोड़ पर पलटी। बस कंडक्टर को हिरासत में लिया गया है। दमोह के सलगजा के रहने वाले मानकलाल ने बताया कि हम बस में सवार होकर नर्मदा परिक्रमा पर निकले थे। बस पूरी तरह से भरी हुई थी। हम 15 लोग खंडवा से सवार हुए थे। बस गुजरात की तरफ जा रही थी। नर्मदापुरम, सिवनी से होते हुए बस खरगोन होते हुए आगे निकली थी, इसी दौरान हादसा हो गया। बस सवार वंदना सदावरते ने कहा मैं अपनी जेठानी के साथ बुरहानपुर से सिलावद जाने के लिए निकली थी। बस काफी स्पीड में थी। बस पलटने से मेरे सिर और हाथ में चोट आई है। कंडक्टर ने बस धीरे चलाने का कहा था। हमें तो समझ ही नहीं आया कि बस क्यों पलटी।

चुनावी तंत्र को नियंत्रित करने के लिए सत्ता और धन का दुरुपयोग हुआ, शरद पवार का बड़ा आरोप

मुंबई । राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के प्रमुख शरद पवार ने शनिवार को आरोप लगाया कि महाराष्ट्र में पूरे चुनावी तंत्र को नियंत्रित करने के लिए सत्ता और धन का दुरुपयोग हुआ जो पहले कभी किसी विधानसभा या राष्ट्रीय चुनाव में नहीं देखा गया। पवार ने यह बयान कार्यकर्ता डॉ. बाबा आढाव से मुलाकात के दौरान दिया। आढाव महाराष्ट्र में हाल में हुए विधानसभा चुनाव में कथित रूप से “ईवीएम के दुरुपयोग के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। आढाव (90) ने बृहस्पतिवार को समाज सुधारक ज्योतिबा फुले के पुणे स्थित निवास फुले वाडा मेंअपना तीन दिवसीय प्रदर्शन शुरू किया। विपक्षी महा विकास आघाडी (एमवीए) के सहयोगी दलों कांग्रेस, शिवसेना (उबाठा) और राकांपा (एसपी) ने हाल में हुए महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में ईवीएम में गड़बड़ी का आरोप लगाया है। इस चुनाव में महायुति को भारी जीत मिली थी। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा), शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के महायुति गठबंधन ने 288 सीट में से 230 सीट पर जीत दर्ज की।

विद्युत् उपभोक्ताओं के लिए लागू हुई एकमुश्त समाधान योजना

योजना तीन चरणों में 1531 दिसंबर से 31 जनवरी, 2025 तक कुल 47 दिनों तक लागू रहेगी 30 सितंबर, 2024 तक के बकाया विद्युत बिलों के सरचार्ज में मिलेगी छूट

लखनऊ।उत्तर प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने प्रधानमंत्री की प्रेरणा से और मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रदेश के सभी श्रेणी के उपभोक्ताओं के हितों के दृष्टिगत योगी सरकार की कल्याणकारी योजना ष्एकमुश्त समाधान योजना 2024–25ष् को लागू करने की घोषणा शनिवार को मऊ जिले में प्रवास के दौरान तमसा नदी के पावन तट पर घाट निर्माण एवं सौंदरीकरण व प्रकाश व्यवस्था कार्यों का उद्घाटन कार्यक्रम में की। योजना के तहत सभी श्रेणी के विद्युत उपभोक्ताओं को अपने विलंबित भुगतान अधिकार में छूट मिलेगी। उन्होंने उपभोक्ताओं से भी अपील की है कि योजना का लाभ लेने के लिए जल्दी आए और एकमुश्त भुगतान कर अपने बकाया बिलों में ज्यादा छूट का लाभ उठाएं।ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने बताया कि उपभोक्ताओं के लिए एकमुश्त समाधान योजना तीन चरणों में लागू होगी। यह योजना 15 दिसंबर,2024 से 31 जनवरी, 2025 तक अर्थात् कुल 47 दिनों तक लागू रहेगी। योजना का प्रथम चरण 15 दिसंबर से 31 दिसंबर तक कुल 16 दिन, दूसरा चरण 01 जनवरी से 15 जनवरी तक कुल 15 दिन, तीसरा चरण 16 जनवरी से 31 जनवरी तक कुल 16 दिन रहेगी। योजना का लाभ लेने के लिए उपभोक्ताओं को पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। पंजीकरण के समय 30 सितंबर,2024 तक के विद्युत् बिलों के मूल बकाए का 30 प्रतिशत राशि जमा करना अनिवार्य होगा। उपभोक्ताओं को 30 सितंबर, 2024 तक के बकाया विद्युत बिलों के सरचार्ज में छूट मिलेगी। उपभोक्ताओं को एकमुश्त भुगतान के साथ किस्तों में भी भुगतान का विकल्प मिलेगा।उपभोक्ताओं को 31 दिसंबर,2024 तक योजना के प्रथम चरण में अपने विलंबित बिलों का एकमुश्त भुगतान करने पर उनके सरचार्ज में सर्वाधिक छूट मिलेगा। एक किलोवाट भार तक के घरेलू उपभोक्ताओं को योजना के प्रथम चरण में विलंबित बिलों के एकमुश्त भुगतान करने पर उनके सरचार्ज में शतप्रतिशत छूट का लाभ मिलेगा। किसानों को उनके निजी नलकूप में 31 मार्च, 2023 तक के उनके बकाए विद्युत बिलों के विलंबित भुगतान अधिभार में छूट का लाभ लेने के लिए 07 मार्च, 2024 से पंजीकरण कराए जा रहे हैं, जिन्हें अभी इस छूट का लाभ मिलता रहेगा। सभी प्रकार के उपभोक्ता अपने नजदीकी विभागीय खंड, उपखंड कार्यालय, कैश काउंटर, जनसेवा केंद्र के माध्यम से या विभागीय वेबसाइट ू नचचबस.वतह पर लॉगिन कर योजना के लिए पंजीकरण कर सकते हैं।

योजना अंतर्गत घरेलू (एलएमवी–1), वाणिज्यिक (एलएमवी–2), निजी संस्थान (एलएमवी–4बी), औद्योगिक (एलएमवी–6), और स्थायी विच्छेदित उपभोक्ता इसके दायरे में शामिल हैं। योजना का मुख्य उद्देश्य बिजली उपभोक्ताओं को राहत देना और विलंबित भुगतान अधिभार में छूट प्रदान करना है। इसके तहत उपभोक्ताओं को एकमुश्त भुगतान या किश्तों में भुगतान के विकल्प दिए गए हैं। योजना में पहले चरण में एकमुश्त भुगतान करने पर उपभोक्ताओं को शतप्रतिशत तक की छूट मिलेगी। छूट की दर चरणों के अनुसार घटती जाएगी, जिससे पहले पंजीकरण कराने वाले उपभोक्ताओं को सबसे अधिक लाभ मिलेगा। इसके बाद उपभोक्ता अपने बकाया बिल का भुगतान एकमुश्त या किश्तों में कर सकते हैं। विलंबित भुगतान अधिभार में घरेलू उपभोक्ताओं के लिए एकमुश्त भुगतान पर प्रथम चरण में 100 प्रतिशत छूट, द्वितीय चरण में 80 प्रतिशत, और तृतीय चरण में 70 प्रतिशत छूट दी जाएगी। वहीं, किश्तों में भुगतान पर प्रथम चरण में छूट क्रमशः 75 प्रतिशत, 65 प्रतिशत और 55 प्रतिशत होगी। वाणिज्यिक, औद्योगिक, और निजी संस्थानों के लिए यह छूट क्रमशः 60 प्रतिशत, 50 प्रतिशत, और 40 प्रतिशत होगी।उपभोक्ता योजना का लाभ उठाने के लिए पंजीकरण विभागीय खंडध्उपखंड कार्यालय, जनसेवा केंद्र, या विभागीय वेबसाइट ू नचचबस.वतह के माध्यम से करा सकते हैं। पंजीकरण के लिए नवीनतम बिजली बिल और मोबाइल नंबर अनिवार्य होगा। भुगतान भी इन्हीं माध्यमों से एकमुश्त या किश्तों में किया जा सकता है। यदि उपभोक्ता पंजीकरण के बाद तय समय सीमा में भुगतान नहीं करता, तो उसे योजना का लाभ नहीं मिलेगा, और उसका अधिभार बढ़ा दिया जाएगा। योजना विवादित और न्यायालय में लंबित प्रकरणों का समाधान भी प्रदान करती है, जिसमें उपभोक्ता को भुगतान के बाद अपना केस वापस लेने का वचन देना होगा।इसके अतिरिक्त, नेवर पेड और लॉन्ग अनपेड उपभोक्ताओं से भुगतान प्राप्त करने पर कलेक्शन एजेंसियों को विशेष प्रोत्साहन दिया जाएगा। यह योजना उपभोक्ताओं को अधिकतम लाभ प्रदान करने के लिए डिजाइन की गई है। उपभोक्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे योजना का लाभ उठाने के लिए जल्द से जल्द पंजीकरण कराएं।

वरिष्ठ पत्रकार कुतुब उल्लाह के निधन पर पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जताया शोक

लखनऊ। वरिष्ठ पत्रकार कुतुब उल्लाह के निधन पर पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मंत्री माननीय अनीस मंसूरी जी ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि कुतुब उल्लाह ना केवल एक बड़े पत्रकार थे बल्कि एक बेहद अच्छे इंसान भी थे।

अनीस मंसूरी ने कहा, ष्कुतुब उल्लाह ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो योगदान दिया, वह हमेशा याद रखा जाएगा। उनकी लेखनी और निष्पक्ष पत्रकारिता समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत रही है। उनके निधन से न केवल पत्रकारिता जगत बल्कि समाज को भी अपूरणीय क्षति हुई है।ष्उन्होंने मरहूम कुतुब उल्लाह के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह परिवार को इस कठिन समय में धैर्य प्रदान करें और दिवंगत आत्मा को शांति दें।कुतुब उल्लाह का निधन पत्रकारिता जगत में एक बड़ी क्षति के रूप में देखा जा रहा है। उनके प्रशंसकों और सहयोगियों ने भी उनकी याद में श्रद्धांजलि अर्पित की।

पसमांदा मुस्लिम समाज की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनीस मंसूरी का बड़ा बयानरू संविधान की अनदेखी कर रही सरकार और न्यायालय

अनीस मंसूरी ने संभल की घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि वहां निहत्थे लोगों पर पुलिस ने गोलियां चलाईं, जिसके वीडियो प्रमाण मौजूद हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि बहराइच में जब दंगाई एक मुस्लिम परिवार के घर में घुसकर उपद्रव कर रहे थे, तब पुलिस ने गोलियां क्यों नहीं चलाईं?उन्होंने कहा, "यह दोहरे मापदंड को दिखाता है। देश में न्याय और कानून को ताक पर रखकर पुलिस और प्रशासन सरकार के इशारे पर काम कर रहे हैं।"अनीस मंसूरी ने बाबरी मस्जिद प्रकरण का जिक्र करते हुए कहा, "हम संविधान को मानने वाले लोग हैं। हमने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का सम्मान किया, भले ही वह हमारे पक्ष में नहीं था। सुप्रीम कोर्ट के जजों ने भी यह स्वीकार किया था कि विवादित स्थल पर बाबरी मस्जिद थी। यदि अयोध्या मामले में फैसला हिंदुओं के विरोध में आया होता, तो क्या वे इसे स्वीकार करते?"उन्होंने दावा किया कि देश में संविधान की रक्षा करने वाले असल लोग अल्पसंख्यक समुदाय के हैं, जो हर हाल में कानून और न्याय का पालन करते हैं।संभल की घटना पर मंसूरी ने आरोप लगाया कि यह सरकार द्वारा पूर्व नियोजित थी, जिसमें पुलिस ने सक्रिय सहयोग दिया। उन्होंने कहा, "यह घटना सरकार और पुलिस की मिलीभगत का परिणाम है, जिसका उद्देश्य अल्पसंख्यक समुदाय को दबाना और डराना है।"अनीस मंसूरी ने कहा कि देश में संविधान और लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाने का काम कोई और नहीं, बल्कि सरकार और न्यायालय कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि न्यायपालिका भी सरकार के प्रभाव में आकर निष्पक्षता छोड़ चुकी है।अनीस मंसूरी ने देश के सभी संवेदनशील नागरिकों से अपील की कि वे संविधान की रक्षा और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए एकजुट हों। उन्होंने कहा कि संविधान की रक्षा करना सिर्फ अल्पसंख्यक समुदाय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है।अनीस मंसूरी ने कहा कि संभल हत्याकांड में मारे गए लोगों में हमारे पसमांदा मुस्लिम समाज के भी तीन युवा हैं। हम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से और संभाल के जिला अधिकारी से मांग करते हैं कि वह पसमांदा मुस्लिम समाज के सात लोगों को वहां जाने की इजाजत दे।

वाराणसी में आयोजित 51 शक्तिपीठ महासमागम इक्यावन शक्तिपीठ तीर्थ के प्रतिनिधि मण्डल ने किया सहभाग

लखनऊसंवाददाता। 51शक्तिपीठ तीर्थ के चार सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने वाराणसी में आयोजित हो रहे 51शक्तिपीठों एवं द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दो दिवसीय महासमागम में भाग लिया। काशी के रुद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर में आयोजित इस माह समागम का उद्घाटन प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने किया। इक्यावन शक्तिपीठ तीर्थ के प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्त्व कर रहीं न्यास अध्यक्ष तृप्ति तिवारी ने बताया कि इस महासमागम में भारत, नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, तिब्बत और बांग्लादेश में अवस्थित सती के इक्यावन शक्तिपीठों और ज्योतिर्लिंगों के अधिष्ठातागण भाग ले रहे हैं। इस कार्यक्रम में समस्त शक्तिपीठों और ज्योतिर्लिंगों के परिपथ और समन्वय पर संत एवं विद्वज्जन चर्चा कर एक विस्तृत रूपरेखा बनाएँगे। लखनऊ से इक्यावन शक्तिपीठ तीर्थ के प्रतिनिधि मण्डल में ट्रस्टी वरद तिवारी, प्रधान पुरोहित आचार्य धनञ्जय पाण्डेय सम्मिलित हैं।

भगवान बुद्ध के उपदेश आज भी विश्व शांति के लिए और अधिक प्रसांगिक है

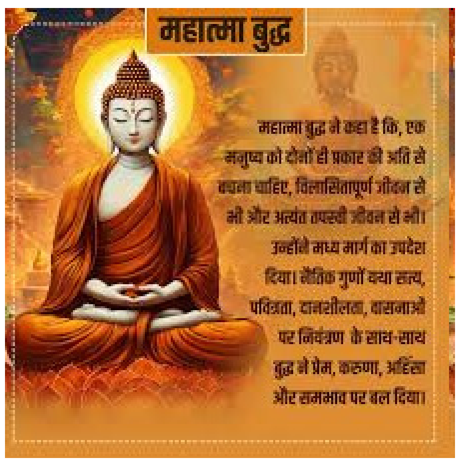

लखनऊ(संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि भगवान बुद्ध के उपदेश शांति का मार्ग अपनाने पर जोर देते हैं, उनके उपदेश आज की तनावभरी जिंदगी तथा विश्व शांति के लिए और अधिक प्रसांगिक है। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री न केवल शांति का संदेश दे रहे हैं बल्कि उस पर अमल भी कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया ने युद्ध दिया और भारत ने बुद्ध दिया। उन्होंने यह भी कहा कि जहां तथागत के शिष्य होंगे वहां शांति होगी, विपश्यना होगी। उन्होंने कहा, प्रत्येक परिवार में भगवान बुद्ध का एक अनुयायी होना चाहिए। अगर शांति, विकास, रोजगार चाहिए तो बुद्धं शरणं से उत्तम कोई दूसरा मार्ग नहीं है। केशव प्रसाद मौर्य शनिवार को लखनऊ की ग्राम पंचायत मवई पड़ियाना स्थित शाक्यमुनि बुद्ध विहार एवं भिक्षु प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित श्रामेरण प्रशिक्षण शिविर एवं धम्म देशना (मेडिटेशन) के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

मौर्य ने कहा कि भगवान बुद्ध, त्याग, तपस्या, सेवा और समर्पण का पर्याय हैं। आज पूरा विश्व महात्मा बुद्ध के विचारों पर चलने की अपील कर रहा है। पूरा संसार भारत को शांतिप्रिय एवं सद्भावना का दूत मानता है। तथागत भगवान बुद्ध के जीवन और दिखाए गए सत्य, अहिंसा, प्रेम व करुणा के मार्ग से 'विश्व– शांति एवं राष्ट्र– निर्माण' की प्रेरणा दुनिया को हमेशा मिलती रहेगी। मौर्य ने कहा कि केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार प्रदेश में भगवान बुद्ध से जुड़े स्थलों जैसे सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कौशाम्बी और संकिसा का निरन्तर विकास कर रही है। कौशाम्बी में विपश्यना केन्द्र निर्माण की तैयारी प्रगति के अंतिम चरण में है। इसके अलावा मठ और स्तूपों के विकास के साथ–साथ पर्यटक सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध ने तीन बातों पर जोर दिया था, जिसमें इच्छाओं का त्याग, क्रोध पर नियंत्रण तथा ज्ञान का विस्तार शामिल है। उनके उपदेशों पर अमल करते हुए जीवन में उतारने की आवश्यकता है। उ0प्र0 सरकार आम लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप हर कदम पर साथ खड़ी है। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध के रास्ते पर चलकर दुनिया में शांति स्थापित की जा सकती है। भगवान बुद्ध ने हमेशा अपने संदेशों में शांति का मार्ग अपनाने पर जोर दिया। उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की आवश्यकता है। भगवान बुद्ध से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल का प्रचार पूरी दुनिया में किया जा रहा है ताकि विश्वभर के अनुयायी उ0प्र0 की ओर आये। उप मुख्यमंत्री ने यहां पर कई निर्माण कार्यों का लोकार्पण भी किया। इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य राम चन्द्र प्रधान, भिक्षु नीलरतन सहित

भारी संख्या में भारी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

मंत्री मती गुलाब देवी ने राष्ट्रीय स्कूली एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2024-25 का किया समापन

खेलों से होता है विद्यार्थियों का समग्र विकास

मेहनत और अभ्यास से ही भविष्य में मिलेगी सफलता - माध्यमिक शिक्षा मंत्री

महाराष्ट्र बना अन्डर-17 बालकध्बालिका राष्ट्रीय विद्यालयीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता- 2024 का चैम्पियन

लखनऊ(संवाददाता)। खेल हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है, जिसके बिना अच्छे स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य की कामना नहीं की जा सकती है। हमारा उद्देश्य यही है कि खेलेंगे तो खिलेंगे। उक्त बातें प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) मती गुलाब देवी ने 68वीं राष्ट्रीय स्कूली एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2024–25 के समापन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने सभी विजेताओं को मेडल और ट्राफी देकर सम्मानित कर एवं शुभकामना दी। उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश को राष्ट्रीय स्कूली प्रतियोगिता की मेजबानी करने का अवसर मिला, जिसे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सकुशल सम्पन्न कराया गया। एक तरफ हम सब आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ नई शिक्षा नीति को मूर्त रूप देने के लिए तत्पर हैं। इस प्रक्रिया में पाठ्य सहगामी क्रिया–कलापों के अन्तर्गत हमारे खेलों की महती भूमिका होती है जो विद्यार्थियों के समग्र विकास का आधार भी है।

स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया के तत्वावधान में माध्यमिक शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा अंडर–17 आयु वर्ग के बालक बालिकाओं की 05 दिवसीय 68वीं राष्ट्रीय स्कूली एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2024–25 का गुरु गोबिन्द सिंह स्पोर्ट्स कालेज कुर्सी रोड लखनऊ में सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता के समापन दिवस पर पदक तालिका में 12 स्वर्ण, 02 रजत और 04 कांस्य पदक के साथ महाराष्ट्र शीर्ष पर, 04 स्वर्ण, 07 रजत और 06 कांस्य के साथ हरियाणा द्वितीय स्थान पर तथा उत्तर प्रदेश 04 स्वर्ण, 03 रजत एवं 03 कांस्य के साथ पदक तालिका में तीसरे स्थान पर रहा। सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया इसके पश्चात ध्वजावतरण और विजेता राज्य को हस्तान्तरित करने के साथ ही समापन की घोषणा की गयी।

इस अवसर पर राजकीय बालिका इण्टर कालेज, विकास नगर, लखनऊ एवं आर्यकन्या बालिका इण्टर कालेज, लखनऊ की छात्राओं के द्वारा खेल थीम पर शानदार नृत्य प्रस्तुति दी गयी। उप शिक्षा निदेशक लखनऊ मंडल मती रेखा दिवाकर ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए देश के विभिन्न प्रदेशों से आये हुए खिलाड़ियों, उनके कोच और मैनेजर और अभिवावकों एवं इस आयोजन में विभाग से लगाये गये समस्त अधिकारियों, कार्मिकों तथा प्रेस–मीडिया का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने लगातार पांच दिन तक उत्साह के साथ खेल कार्यक्रमों को सम्पन्न कराया।

एस0जी0एफ0आई0 के तत्वावधान में आयोजित 68वीं राष्ट्रीय स्कूल गेम्स प्रतियोगिता 2024 अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा, वित्त, गृह एवं अध्यक्ष स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया दीपक कुमार की अध्यक्षता और सचिव यूपी बोर्ड एवं सदस्य स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया भगवती सिंह के निर्देशन में आयोजित हुई। प्रतियोगिता के आयोजक संयुक्त शिक्षा निदेशक लखनऊ मंडल डॉ० प्रदीप कुमार के कुशल मार्गदर्शन में उप शिक्षा निदेशक लखनऊ मंडल मती रेखा दिवाकर, जिला विद्यालय निरीक्षक लखनऊ राकेश कुमार, जिला विद्यालय निरीक्षक (द्वितीय) राघवेंद्र सिंह बघेल, मंडलीय सहायक शिक्षा निदेशक बेसिक लखनऊ मंडल श्याम किशोर तिवारी, सह जिला विद्यालय निरीक्षक लखनऊ जयशंकर वास्तव, सह निरीक्षक आंग्ल भारतीय विद्यालय मती मनीषा द्विवेदी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी लखनऊ राम प्रवेश की देखरेख में प्रतियोगिता का भव्य आयोजन कुशलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

संभल में पीड़ितों पर दबाव डाल रहा प्रशासन, सपा नेता रविदास मेहरोत्रा का आरोप

लखनऊसंवाददाता। समाजवादी पार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल शनिवार को उत्तर प्रदेश के संभल हिंसा में मारे गए लोगों के परिजनों और घायलों से मिलने जा रहा था। सुरक्षा कारणों से सपा विधायक रविदास मेहरोत्रा को पुलिस ने रोक दिया तो वो वहीं धरने पर बैठ गए। रविदास मेहरोत्रा ने खास बातचीत की। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रशासन की ओर से जानबूझकर पीड़ितों और उनके परिवारों पर दबाव डाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम यह चाहते हैं कि हम संभल जाएं, क्योंकि वहां आज जांच आयोग आया हुआ है। लेकिन डीएम और एसपी अपने हिसाब से बयान दिलवा रहे हैं लोगों पर दबाव डालकर। हमें लगता है कि उत्तर प्रदेश में अघोषित रूप से आपातकाल जैसा माहौल है। मेहरोत्रा ने आगे कहा कि हम लोकतंत्र सेनानी हैं और लोकतंत्र की रक्षा के लिए हर संघर्ष करने को तैयार हैं। भाजपा की नफरत फैलाने वाली राजनीति को हम स्वीकार नहीं कर सकते। जब तक संभल के लोगों को न्याय नहीं मिलेगा, हमारा संघर्ष जारी रहेगा। इस बीच, सपा अध्यक्ष और प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट कर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने लिखा, प्रतिबंध लगाना भाजपा सरकार के शासन, प्रशासन और सरकारी प्रबंधन की नाकामी है। ऐसा प्रतिबंध अगर सरकार उन पर पहले ही लगा देती, जिन्होंने दंगा–फसाद करवाने का सपना देखा और उन्मादी नारे लगवाए तो संभल में सौहार्द–शांति का वातावरण नहीं बिगड़ता। भाजपा जैसे पूरी की पूरी कैबिनेट एक साथ बदल देते हैं वैसे ही संभल में ऊपर से लेकर नीचे तक का पूरा प्रशासनिक मंडल निलंबित करके उन पर साजिशन लापरवाही का आरोप लगाते हुए सच्ची कार्रवाई करके बर्खास्त भी करना चाहिए और किसी की जान लेने का मुकदमा भी चलना चाहिए। भाजपा हार चुकी है। बता दें कि संभल में हुई हिंसा की न्यायिक जांच के लिए सीएम योगी ने बीते दिनों आदेश दिए थे। राज्य के गृह विभाग के आदेश के अनुसार, हाई कोर्ट के रिटायर्ड जज देवेंद्र कुमार अरोड़ा की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय समिति को मामले की जांच का जिम्मा सौंपा गया है। समिति के दो अन्य सदस्य सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी अमित मोहन प्रसाद और पूर्व आईपीएस अधिकारी अरविंद कुमार जैन हैं। समिति को दो महीने के भीतर रिपोर्ट देने को कहा गया है।

एलडीए में 'सिंगल टेबल क्लीयरेंस डे' का आयोजन, 63 प्रकरणों का हुआ निस्तारण

लखनऊ(संवाददाता)।विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार के निर्देश पर शनिवार को प्राधिकरण में 'सिंगल टेबल क्लीयरेंस डे' का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत समस्त अनुभागों के अधिकारी व कर्मचारी फाइलों के साथ पारिजात सभागार में उपस्थित हुए। कार्यवाही के दौरान विभिन्न प्रकरणों से सम्बंधित कुल 63 फाइलों का निस्तारण किया गया।एलडीए सचिव विवेक श्रीवास्तव ने बताया कि उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार के निर्देशानुसार प्राधिकरण में लंबित फाइलों के निस्तारण के लिए शनिवार को सिंगल टेबल क्लीयरेंस डे का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत समस्त विशेष कार्याधिकारी, सहायक लेखाधिकारी, अनुभाग अधिकारी, लिपिक व अभियंता गण अपने अनुभाग की लंबित फाइलों के साथ सुबह 10:30 बजे मीटिंग हॉल में उपस्थित हुए। इस दौरान उपाध्यक्ष महोदय द्वारा स्वयं लंबित प्रकरणों की समीक्षा की गयी तथा फाइलों पर तुरंत निर्णय लेते हुए कार्यवाही सम्पादित करायी गयी।सिंगल टेबल क्लीयरेंस डे पर प्रस्तुत की गयी सभी लंबित फाइलों पर शत प्रतिशत कार्यवाही करते हुए कुल 63 फाइलों का निस्तारण किया गया। इसके अंतर्गत रिफंड के 08, रजिस्ट्री के 14, फ्री–होल्ड के 17 व नामांतरण की 24 पत्रावलियों का निस्तारण किया गया।

मायावती बोलीं, आगामी चुनाव की तैयारी में जुट जाएं कार्यकर्ता,

धर्म की आड़ में अपने राजनीतिक स्वार्थ में जुटी सरकारें

लखनऊसंवाददाता। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री बी.एस.पी. प्रमुख मायावती ने आज उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड राज्य के वरिष्ठ पदाधिकारियों तथा जिला अध्यक्षों सहित पार्टी के अन्य सभी जिम्मेदार लोगों के साथ उपचुनाव में मिली करारी हार के बाद पहली बैठक की। इस दौरान मायावती ने कहा कि धर्म की आड़ में अपनी राजनीति स्वार्थ में देश व प्रदेश की सरकार काम कर रही है। उन्होंने कार्यताओं आगामी आम चुनाव के लिए तैयारी बनाने की बात कही है। उन्होंने कहा कि देश व समाज को संकीर्ण जातिवादी एवं साम्प्रदायिक तत्वों की जड़ से निकालने के लिए खासकर दलित व अन्य अम्बेडकरवादी बहुजनों को एकजुट होकर सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्ति के लिए संघर्ष को और मजबूत और तीव्र करने की जरूरत है। मायावती ने कहा कि पूर्व में कांग्रेस की तरह ही वर्तमान में भाजपा की भी गरीब विरोधी व धन्नासेठ समर्थक नीतियों एवं कार्यकलापों के विरुद्ध लोगों में वही आक्रोश व्याप्त है, जिस पर से लोगों का ध्यान बांटने के लिए यह पार्टी भी किस्म किस्म के नये जातिवादी एवं साम्प्रदायिक हथकण्डों का इस्तेमाल करती रहती है और चुनाव में इसका लाभ भी ले लेती है। विशेषकर चुनावों के समय में जनहित व जनकल्याण के किए गए लुभावने वादों को सरकार बन जाने पर उनको ईमानदारी से निभाने के बजाय उन्हें पूरी तरह से भुला देने आदि की तरह इसी प्रकार की अन्य नकारात्मक एवं घिनौनी राजनीति से आम जनहित व देश का कुछ भी भला नहीं होता है बल्कि जन समस्या यथावत बरकरार है। उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं यूपी सरकार द्वारा भी संवैधानिक दायित्वों को निभाने के संवैधानिक कार्यों से अधिक धर्म को आड़ बनाकर अपनी राजनीति साधने में देश में कोई पीछे नजर नही आती है। यही कारण है कि आबादी के हिसाब से देश के सबसे बड़े राज्य यूपी व पड़ोसी राज्य उत्तराखंड में भी महंगाई की जबरदस्त मार झेल रहे सर्वसमाज के करोड़ों लोग गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा व पिछड़ेपन आदि का अंधकार जीवन जीने को लगातार मजबूर हैं यह अति–दुखद। देश में स्वतंत्र, निष्पक्ष तथा धनबल, बाहुबल व सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग से मुक्त पाक–साफ चुनाव कल की तरह आज भी बड़ी चुनौती। ऐसे में आम जनता का चुनावी तंत्र पर विश्वास की कमी संविधान व लोकतंत्र के लिए खतरे की घण्टी। इसीलिए संविधान के हिसाब से चेक एण्ड बैलेन्स की जो व्यवस्था है उसको लेकर सभी लोकतांत्रिक व संवैधानिक संस्थाओं को अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से निभानी होगी। इसके साथ ही, अडाणी समूह व संभल मस्जिद को लेकर उभरा विवाद ऐसे चर्चित मुद्दे हैं जिसको लेकर सरकार व विपक्ष में जबरदस्त तकरार और टकराव के कारण संसद की कार्रवाई सुचारू रूप से नहीं चलने से वर्तमान शीतकालीन सत्र का महत्व शून्य होना कितना उचित? यूपी व उत्तराखंड दोनों राज्य में पार्टी संगठन की मजबूती तथा सर्व समाज में पार्टी के जनाधार को बढ़ाने के लिए मण्डल और जिलेवार समीक्षा में उल्लेखित कमियों को दूर करने के लिए कहा और इस दौरान यह पाया गया कि, पूर्व में कांग्रेस की सरकार की तरह ही, वर्तमान में भाजपा की गरीब विरोधी व उनकी धन्नासेठ समर्थक नीतियों एवं कार्यकलापों के विरुद्ध लोगों में आक्रोश व्याप्त है जिस पर से लोगों का ध्यान बांटने के लिए ही यह पार्टी भी किस्म किस्म के नये जातिवादी, साम्प्रदायिक व संकीर्ण हथकण्डों का इस्तेमाल करती हैं और चुनाव में इसका लाभ भी ले लेती है।

नेशनल कम्पटीशन में सी.एम.एस. छात्र गोल्ड टॉपर

लखनऊ, 2 दिसम्बर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, स्टेशन रोड कैम्पस के कक्षा–5 के प्रतिभाशाली छात्र हमजा रहमान ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित ब्रेनोब्रेन वन्डरकिड प्रतियोगिता में गोल्ड टॉपर का खिताब अर्जित विद्यालय का गौरव बढ़ाया है। यह प्रतियोगिता शैक्षिक संस्था ब्रेनोब्रेन किड्स एकेडमी के तत्वावधान में आयोजित हुई। इस प्रतियोगिता में देश भर के लगभग 2000 विद्यालयों से 75000 से अधिक छात्रों ने प्रतिभाग किया जिसमें सी.एम.एस. स्टेशन रोड कैम्पस के इस प्रतिभाशाली छात्र ने मेन्टल मैथ्स, लॉजिकल एबिलिटी, जनरल नॉलेज एवं स्पीड टाइपिंग में अपनी दक्षता का प्रदर्शन करते हुए गोल्ड टॉपर होने का गौरव अर्जित किया है। प्रतियोगिता के आयोजकों ने सी.एम.एस. छात्र की बहुमुखी प्रतिभा की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए मेडल व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। सी.एम.एस. प्रबन्धक प्रो. गीता गाँधी किंगडन ने इस मेधावी छात्र के उज्जवल भविष्य की कामना की है।यह प्रतियागिता छात्रों को बौद्धिक क्षमता पर ध्यान केन्द्रित करने तथा त्वरित गति से समाधान ढूढ़ने एवं सीखने की क्षमता का विकास करने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। सी.एम.एस. अपने छात्रों को देश–विदेश में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग हेतु लगातार प्रोत्साहित करता रहता है। यही कारण है कि सी.एम.एस. छात्र सदैव ही विभिन्न रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतियोगिताओं में अपनी बहुमुखी प्रतिभा की छाप छोड़कर विद्यालय का गौरव बढ़ा रहे हैं।

24 घंटे 20 स्पेशल ड्रोन कर रहे महाकुम्भ की निगहबानी

एक क्लिक पर सामने आ जाएगा 25 सेक्टरों में चल रहा काम
एयरपोर्ट, रेलवे, बस स्टेशन, घाट, रोड, मंदिर, ब्रिज सभी पर पैनी नजर

प्रयागराज। महाकुम्भ में इस बार पौराणिक मान्यताओं के साथ साथ सबसे आधुनिक डिजिटल तकनीक भी देखने को मिलेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर महाकुम्भ में पहली बार इतने व्यापक स्तर की सुरक्षा के इंतजाम किए जा रहे हैं। जिसके तहत 20 ड्रोन लगातार महाकुम्भ की हर गतिविधि पर नजर रख रहे हैं। ये स्पेशल ड्रोन महाकुंभ में हो रही हर गतिविधि पर 24 घंटे फोकस किए हैं, जिससे यहां परिंदा भी पर न मार सके।संगम से लेकर महाकुम्भ में हो रहे एक एक विकास कार्य पर नजर रखी जा रही है। एयरपोर्ट, रेलवे, बस स्टेशन हो चाहे घाट, रोड, मंदिर, ब्रिज हों, सभी पर पैनी दृष्टि रखी जा रही है। योगी सरकार के निर्देश पर अत्याधुनिक सुरक्षा व्यवस्था का इंतजाम इतना सख्त है कि देश विदेश से यहां आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होने पाएगी। सबसे खास बात तो ये है कि एक क्लिक पर ही महाकुम्भ के 25 सेक्टरों के कोने–कोने की हर जानकारी से यह विशेष ड्रोन अपडेट रख रहे हैं।

श्रद्धालुओं के प्रयागराज आने से पहले ही ड्रोन के तीन प्रोजेक्ट शुरू

श्रद्धालुओं के लिए बेहतर सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर यहां विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी का स्पष्ट निर्देश है कि महाकुम्भ में देश विदेश से प्रयागराज आने वाले एक भी श्रद्धालु को किसी प्रकार की दिक्कत न आने पाए। इसी क्रम में मेला प्राधिकरण और प्रशासन की टीमें युद्ध स्तर पर तैयारियों में जुटी हैं। श्रद्धालुओं के प्रयागराज पहुंचने से पहले ही ड्रोन के तीन तरह के प्रोजेक्ट शुरू किए जा चुके हैं। जिससे महाकुम्भ में एक एक कोने की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था मुहैया कराई जा सके। जरूरत पड़ने पर इन स्पेशल ड्रोन की संख्या और भी बढ़ाई जा सकती है।

एक–एक विभाग में चल रहे नवनिर्माण पर रखी जा रही नजर

महाकुम्भ को अलौकिक बनाना मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकता है। इसी क्रम में एक–एक विभाग में चल रहे निर्माण कार्य की ड्रोन से देख रेख की जा रही है। इन्हीं विशेष ड्रोन की मदद से स्मार्ट सिटी, नगर निगम, पुलिस, चिकित्सालय, परिवहन समेत तमाम विभागों में हो रही गतिविधियों पर भी नजर रखी जा रही है।

एक एक सेकेंड का डेटा किया जा रहा सुरक्षित

महाकुंभ की एक एक गतिविधि पर नजर रखने के लिए ड्रोन लगाए गए हैं। 20 स्पेशल ड्रोन जल, थल, नभ में सुरक्षा की दृष्टि से अपनी पैनी नजर गड़ाए हैं। रिमोट से कंट्रोल होने वाले इन ड्रोन के माध्यम से किसी भी गतिविधि को बारीकी से देखने के लिए विशेष प्रशिक्षित टीमें लगाई गई हैं। सबसे खास बात यह है कि चप्पे चप्पे पर नजर रखने वाले यह ड्रोन अनलिमिटेड मेमोरी से लैस हैं, जिससे हर सेकेंड का डेटा सुरक्षित किया जा रहा है।

महाकुंभ में तेजी से हो रहा पांटून पुलों का निर्माण

पीएम के आगमन से पूर्व निर्धारित तिथि के अंदर काम पूरा करने में जुटी लोनिवि की टीम
अब तक 5 पांटून पुल हुए चालू, 3 दिसंबर तक 4 और पांटून पुल होगे चालू

प्रयागराज। प्रयागराज में आयोजित होने वाले महाकुम्भ 2025 के लिए पांटून पुलों का निर्माण जोरों पर है। 13 दिसंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन से पूर्व निर्धारित समयसीमा के अंदर सभी पुलों का निर्माण कार्य पूरा करने के लिए पीडब्ल्यूडी की टीम युद्ध स्तर पर काम कर रही है। फिलहाल 5 पांटून पुलों को क्रियाशील कर दिया गया है, जबकि 10 दिसंबर तक कुल 19 पुलों को क्रियाशील कर दिया जाएगा। शेष 11 पुलों के निर्माण कार्य में ड्रेजिंग का काम पूरा होने के बाद तेजी आएगी।

3 दिसंबर तक 9 पुल होंगे क्रियाशील

प्रयागराज पीडब्ल्यूडी के चीफ इंजीनियर ए.के. द्विवेदी ने बताया कि सभी पुलों का निर्माण कार्य तय समय के भीतर पूरा करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि पुलों की गुणवत्ता और सुरक्षा मानकों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यह पुल निर्माण परियोजना एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने बताया कि अब तक 5 पांटून पुलों का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है और इन्हें आवागमन के लिए शुरू कर दिया गया है। 3 दिसंबर तक इन 5 पुलों को मिलकर कुल 9 पुलों को क्रियाशील कर दिया जाएगा। प्रधानमंत्री के आगमन तक कुल 19 पांटून पुलों का निर्माण कार्य पूरा कर लिया जाएगा और सभी पुल पूरी तरह से संचालित होने लगेंगे। शेष 11 पांटून पुलों का निर्माण कार्य भी जल्द पूरा हो जाएगा। पीडब्ल्यूडी के अनुसार, ड्रेजिंग का काम पूरा होते ही शेष 11 पुलों के निर्माण का कार्य युद्धस्तर पर किया जाएगा।

शुरू हुआ आवागमन

वर्तमान में हरिश्चंद्र, ओल्ड जीटी उत्तरी, चक्र माधव, गांगुली शिवाला रोड और रेल से झूसी पुलों को लोगों की सुविधा के लिए क्रियाशील कर दिया गया है। इसमें बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों के साथ साथ साधु संत और प्रशासनिक अधिकारियों का आवागमन शुरू हो गया है। ये पुल प्रयागराज में यातायात और अखाड़ों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह झूसी में बनने वाले अखाड़े को परेड क्षेत्र से जोड़ेंगे, जिससे महाकुंभ में श्रद्धालुओं को सुविधा होगी।

5 टन तक का उठा सकते हैं भार

इस बार महाकुम्भ के लिए कुल 30 पांटून पुलों का निर्माण किया जा रहा है, जो अब तक की सबसे अधिक संख्या है। इन पांटून पुलों को 5 टन तक के भारी भार को सहन करने के लिए डिजाइन किया गया है। पुलों की मजबूती और सुरक्षा को लेकर किसी भी प्रकार की कोताही नहीं बरती जा रही है। हर पुल को कई परीक्षण प्रक्रियाओं से गुजारने के बाद ही संचालित करने की अनुमति दी जाती है। यह पुल इस तरह से डिजाइन किए जाते हैं कि इस पर एक बार में अनगिनत लोग रास्ता पार कर सकते हैं।

अयोध्या से प्रयागराज तक स्पेशल हेलीकाप्टर सेवा

प्रयागराज।महाकुंभ यूं ही नहीं विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन माना जाता है. इस बार 2025 में प्रयागराज में यह एक नई ऊर्जा और आधुनिकता के साथ होने जा रहा है. यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक होगा, बल्कि इसके साथ ही कई आधुनिक सुविधाएं भी जुड़ी होंगी, जो इसे और भी भव्य और दिव्य बनाएंगी. खासकर अयोध्या से प्रयागराज तक विशेष हेलीकॉप्टर सेवा की शुरुआत, तीर्थयात्रियों और श्रद्धालुओं के लिए यात्रा को सुविधाजनक बनाने का एक बड़ा कदम है. नई दिल्ली के अशोका होटल मेंआयोजित महाकुंभ–2025 के प्रील्यूड कार्यक्रम में केंद्रीय पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और उत्तर प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह मौजूद थे. इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार के संस्कृति मंत्री मुकेश कुमार मेश्राम ने महाकुंभ की तैयारियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी. गजेंद्र सिंह शेखावत ने उत्तर प्रदेश सरकार को इस भव्य आयोजन की तैयारियों के लिए बधाई दी और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार का पूरा सहयोग उत्तर प्रदेश सरकार को प्राप्त होगा. उन्होंने इस आयोजन को न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक और पर्यटन के नजरिए से भी एक ऐतिहासिक अवसर बताया. उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से की जा रही तैयारियों से यह स्पष्ट है कि महाकुंभ–2025 को एक आधुनिक और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया जाएगा, जिसमें तकनीकी और प्रशासनिक सुधारों के साथ–साथ श्रद्धालुओं को हर संभव सुविधा देने का प्रयास किया जाएगा.

आपदा प्रबंधन के उद्देश्य से रात्रि के समय भी किया जायेगा माक एक्सरसाइज

प्रयागराज।झंदंउत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल योगेंद्र डिमरी, पी.वी.एस.एम, ए.वी.एस.एम, वी.एस.एम, (से.नि.) की अध्यक्षता में आज दिनांक 30 नवम्बर 2024 को जनपद प्रयागराज में मेला प्राधिकरण के सभागार में महाकुम्भ 2025 के दौरान आपदा प्रबंधन की विभिन्न कार्यवाहियों की समीक्षा हेतु आयोजित होने वाले ज्ंइसम ज्वच ■ म•बपेम – मॉक एक्सरसाइज की तैयारियों पर विभिन्न विभागोंध्एजेंसियों के साथ चर्चा हेतु व्तपमदजंजपवद ंदक ब्वव्तकपदंजपवद ब्वदमितमदबम बैठक आहूत किया गया द्य

बैठक में वरिष्ट पुलिस अधीक्षक, महाकुम्भ श्री राजेश द्विवेदी, आई0पी0एस0, अपर जिलाधिकारी (वि0ध्रा0) प्रयागराज के साथ जनपद के अपर जिलाधिकारी, उपजिलाधिकारी, अग्निशमन विभाग, पुलिस यातायात, ंदबींत, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य एवं अन्य विभागों के अधिकारी तथा एन0डी0आर0एफ0, एस0डी0आर0एफ0 के साथ भारतीय रेलवे एवं भारतीय सेना के अधिकारी भी मौजूद रहे द्य बैठक की कार्यवाही एवं समन्वय ब्रिगेडियर अजय गंगवार, वरिष्ठ सलाहकार ने किया।बैठक को संबोधित करते हुये प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल योगेंद्र डिमरी ने बताया कि महाकुम्भ 2025 के दौरान बेहतर आपदा प्रबंधन को सुनिश्चित करने के लिए इंटीग्रेटेड रिस्पांस की आवश्यकता है द्य सभी विभाग अपने क्षेत्र में बेहतरीन कार्य कर रही हैं और आपदा प्रबंधन योजनाए भी तैयार हैय जरूरत इस बात की है कि सभी का आपस में समन्वय बेहतर हो ताकि किसी भी आपात स्थिति में रिस्पांस समयबद्ध रूप से किया जा सके द्य इसकी उद्देश्य से यू०पी०एस० डी०एम०ए०द्वारा इस वर्ष 01 ज्ंइसम ज्वच ■मतबपेम ंनत 02 मॉक एक्सरसाइज आयोजित की जायेंगीब्रिगेडियर अजय गंगवार, वरिष्ठ सलाहकार ने बताया कि किसी भी आपदा की स्थिति में सभी विभागों की आवश्यकता होती हैय उदाहरण के लिए लोक निर्माण विभाग द्वारा पान्टून पुल का निर्माण कराया जा रहा है परन्तु इस पर हुई किसी दुर्घटना में पुलिस, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य का सहयोग लेना पड़ता है द्य किसी अग्नि दुर्घटना में अग्निशमन विभाग के साथ पुलिस विभाग को भीड़ प्रबंधन के लिए कार्यवाही करनी पड़ती है द्य हम सब को आपसी सामंजस्य के साथ तैयारी करनी है द्य

अधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष के मॉक एक्सरसाइज में नवीन बात यह है कि मॉक एक्सरसाइज का 01 सत्र रात्रि के समय आयोजित किया जायेगा, जिससे रात्रि में आपदा के समय सभी विभागों की प्रतिक्रिया को देखा जायेगाद्य ज्ंइसम ज्वच ंनत मॉक एक्सरसाइज माह दिसम्बर 2024 और जनवरी 2025 के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया जायेगा द्य

मंत्री नन्दी के फ्लीट की बोलेरो गाड़ी ट्रैक्टर से टकराई

मंत्री की सुरक्षा में तैनात सीआरपीएफ के तीन जवान और ड्राइवर हुए घायल
संत कबीर नगर के कांटी चौकी के पास हुआ हादसा

संत कबीर नगर।आज गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण के 35वें स्थापना दिवस समारोह से लौटते समय प्रदेश के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी की फ्लीट दुर्घटना की चपेट में आ गई। जनपद संत कबीरनगर की कांटी चौकी के पास मंत्री की सुरक्षा में चल रही बोलेरो गाड़ी जिसमें सीआरपीएफ के जवान सवार थे, वो एक ट्रैक्टर से टकरा गई।ट्रैक्टर चालक की लापरवाही से हुए इस हादसे में सीआरपीएफ के तीन जवान घायल हो गए और बोलेरो के चालक नीरज को भी चोट आई। मंत्री नन्दी तत्काल घायल जवानों को अपनी गाड़ी में बिठाकर जनपद बस्ती स्थित श्री कृष्ण मिशन हॉस्पिटल पहुंचे। यहां घायलों का प्राथमिक उपचार किया गया। घटना में सीआरपीएफ दो जवानों के सर में और एक जवान के हाथ में चोट आई है। घटना की सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी बस्ती और सीओ सिटी अस्पताल पहुंचे। बस्ती के श्री कृष्ण मिशन हॉस्पिटल में घायल सीआरपीएफ जवानों और ड्राइवर का प्राथमिक उपचार कराने के बाद मंत्री नन्दी घायल जवानों को लेकर मेदांता लखनऊ के लिए रवाना हो गए।

महाकुम्भ के सफल आयोजन को आईसीसी सेंटर का हो रहा अपग्रेडेशन

1650 नये सीसीटीवी कैमरे, 40 वीएमडीएस, 100 स्मार्ट पार्किंग और एआई कंपोनेंट की मदद से की जाएगी महाकुम्भ में निगरानी

प्रयागराज। विश्व के सबसे बड़े मानवीय समागम महाकुम्भ 2025 में 45 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। सारे विश्व की निगाह महाकुम्भ के आयोजन पर लगी रहती है। ऐसे में उत्तर प्रदेश सरकार और प्रयागराज मेला प्राधिकरण सीएम योगी के मार्गदर्शन और निर्देशन में तैयारियां भी उसी अनुरूप कर रहा है। इसका स्पष्ट उदाहरण है महाकुम्भ मेले के सफल आयोजन और संचालन के लिए आईसीसी सेंटर को अपग्रेड करना। आईसीसी सेंटर का निर्माण कुम्भ 2019 में किया गया था लेकिन महाकुम्भ 2025 का आयोजन और भी भव्य और विशाल होने के कारण इसका उच्चीकरण किया जा रहा है। जिसका निरीक्षण स्वयं मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने अपने प्रयागराज दौरे में किया और अपग्रेडेशन कार्य को शीघ्र पूरा करने के निर्देश भी दिये।

भीड़ प्रबंधन की करेगा निगरानी

इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर, आईसीसीसी का निर्माण कुम्भ 2019 के सफल आयोजन के लिए किया गया था। इसका उद्घाटन स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। प्रयागराज मेला प्राधिकरण और प्रयागराज स्मार्ट सिटी आईसीसी सेंटर के माध्यम से एआई, चौटबॉट, लाईव सर्विलांस, सीसीटीवी कैमरों जैसी अत्याधुनिक तकनीकी की मदद से मेले का सफल संचालन करता है। महाकुम्भ 2025 का आयोजन पिछले सभी कुंभ, महाकुंभ मेलों के आयोजन से भव्य और विशाल होने के कारण आईसीसी सेंटर को अपग्रेड किया जा रहा है। सीएम योगी के विरासत और विकास के विजन के मुताबिक महाकुम्भ की प्राचीनतम परंपरा को अत्याधुनिक तकनीक के प्रयोग से सुगम और सुरक्षित बनाने का प्रयास हो रहा है। सीएम ने स्वयं अपने प्रयागराज दौरे में आईसीसी सेंटर के अपग्रेडेशन का निरीक्षण किया और शीध्र कार्य पूरा करने के निर्देश दिये।

एआई कंपोनेंट की मदद से की जाएगी निगरानी

प्रयागराज स्मार्ट सिटी और मेला प्राधिकरण देश के शीर्ष इंजीनियरिंग संस्थानों की मदद से आईसीसी सेंटर के अपग्रेडेशन का कार्य करा रहा है। महाकुम्भ 2025 के मद्देनजर लगभग 1650 नये सीसीटीवी कैमरे, 24 एपीएनआर कैमरे, 40 वीएमसीडी, 100 स्मार्ट पार्किंग, क्राउड मैनेजमेंट और व्हीकल काउंट के लिए 268 और 240 एआई कंपोनेट लगाये जा रहे हैं। इसके साथ ही शिकायत निवारण के लिए कॉल सेंटर में 20 सीटें बढ़ाई जा रही हैं। महाकुम्भ 2025 में आईसीसी सेंटर मेला, एमसीआर सेंटर, अरैल और झूंसी व्यूविंग सेंटर से पूरे मेले क्षेत्र का निरीक्षण किया जाएगा। साथ ही एआई कंट्रोल्ड सीसीटीवी कैमरों की मदद से 9 रेलवे स्टेशनों पर क्राउड मैनेजमेंट और निगरानी का कार्य किया जाएगा। 1 दिसम्बर से 1920 हेल्पलाइन का कार्य शुरू हो जाएगा।

रेलवे स्टेशनों पर महाकुंभ 2025 की तैयारियों का किया गया निरीक्षण

प्रयागराज।आज दिनांक 30 नवंबर 2024 को वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधकध्कोचिंग श्री हिमांशु शुक्ला ने महाकुंभ –2025 के दृष्टिगत अतिरिक्त यात्री सुविधाओं एवं भीड़ प्रबंधन की व्यवस्थाओं, रेल यात्रियों को हर संभव सुविधा प्रदान करने के लिए मंडल की टीम के साथ प्रयागराज छिवकी, नैनी और सूबेदारगंज स्टेशनों का निरीक्षण किया । इस अवसर पर सहायक वाणिज्य प्रबंधकध्कोचिंग श्री दिनेश कुमारय सहायक वाणिज्य प्रबंधकध्फ्रेट, श्री संजय कुमार गौतमय सहायक वाणिज्य प्रबंधकध्सामान्य, श्री अनिल कुमार गुप्ता एवं वाणिज्य निरीक्षक और पर्यवेक्षक भी उपस्थित थे यात्रियों की सुगम यात्रा के लिए समस्याओं के त्वरित निदान के लिए अधिकारियों व वाणिज्य निरीक्षक को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए । यात्री आश्रयों में लाइटिंग की व्यवस्था, कैटरिंग स्टाल पर खाने–पीने की व्यवस्था, साफ–सफाई, वेटिंग रूम और वेटिंग हाल में यात्रियों को बैठने की व्यवस्था एवं शौचालय की साफ सफाई के लिए निर्देश दिए गए । सर्कुलेटिंग एरिया में अव्यवस्थित गाड़ियों को द्वितीय प्रवेश द्वारा से पार्किंग एरिया में खड़ा करने की व्यवस्था करने को भी निर्देशित किया गया ।सभी कार्यालय के पंखों व कमरों की साफ सफाई तथा किताबों को व्यवस्थित रखने, स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने एवं गार्बेज के नियमित निस्तारण का निर्देश दिया ।महाकुंभ 2025 की जानकारियों को यात्रियों तक पहुँचाने के लिए प्रयागराज मंडल के सभी बड़े स्टेशनों पर व्यापक व्यवस्था की गई है। स्टेशनों पर एलईडी स्क्रीन पर कुंभ से सम्बंधित जानकारी और सुचना प्रसारित की जायेगी । इसी क्रम में खुसरो बाग का भी निरीक्षण किया । कुंभ मेला में भीड़ को नियंत्रित करने के लिए श्रद्धालुओं को खुसरो बाग में ठहरने की व्यवस्था का जायजा लिया ।

रसूलाबाद घाट का नाम चन्द्रशेखर आजाद घाट घोषित किया गया

प्रयागराज ।मुख्यमंत्री के 27 नवम्बर, 2024 को प्रयागराज आगमन पर नगर निगम परिसर के कण्ट्रोल रूम में सॉलिड वेस्ट निस्तारण कण्ट्रोल रूम, स्मार्ट सिटी के जन–शिकायत प्रणाली एप्प के लोकार्पण के अवसर पर रसूलाबाद श्मशान घाट का नाम परिवर्तन का विषय भी चर्चा में रहा। जिस पर महापौर उमेश चन्द्र गणेश केशरवानी द्वारा इस विषय में नगर आयुक्त को निर्देशित किया गया कि उपरोक्त विषय में अग्रिम कार्यवाही सुनिश्चित किया जाय। महापौर के निर्देश के कम में निगम परिषद रिकार्ड में पारित किये गए संकल्प में रसूलाबाद घाट नाम–परिवर्तन चन्द्रशेखर आजाद घाट सर्वसम्मति से पारित किया हुआ दर्ज पाया गया।महापौर द्वारा सर्वसम्मति से पारित सदन के संकल्प के अनुसार रसूलाबाद घाट का नाम चन्द्रशेखर आजाद घाट किये जाने का निर्देश देते हुए यह घोषित किया गया कि उक्त स्थल पर शीघ्र ही पत्थर का शिलापट्ट स्थापित करते हुए इसका अनावरण सुनिश्चित कराया जायेगा।

यात्रियों को स्वच्छ एवं उच्च गुणवत्ता वाला लिनन प्रदान करने को उमरे प्रतिबद्ध

प्रयागराज।सभी रेल यात्रियों को स्वच्छ एवं उच्च गुणवत्ता वाला लिनन प्रदान करने के लिए उत्तर मध्य रेलवे प्रतिबद्ध है। उत्तर मध्य रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी श्री शशि कांत त्रिपाठी ने बताया कि रेलवे का लिनन मैनेजमेंट एसी क्लास के यात्रियों की सुविधा और स्वच्छता को प्राथमिकता देता है। हर यात्री को गाइडलाइन्स के अनुसार 2 बेडशीट, 1 पिलो कवर और 1 ब्लैंकेट प्रदान किया जाता है, और इनका वाशिंग कार्य यात्रियों के अनुभव को सर्वोत्तम बनाने के लिए विशेष रूप से सावधानीपूर्वक किया जाता है।

लिनन की वाशिंग प्रक्रियारू

लिनन, पिलो कवर और तौलिए की वाशिंग प्रक्रिया इस प्रकार से संचालित की जाती है कि इन्हें हर उपयोग के बाद धोया जाता है, चाहे वह यात्रा के विभिन्न चरणों में ही क्यों न हो। उदाहरण के लिए, अगर कोई ट्रेन प्रयागराज से मुंबई जा रही है और पहले यात्री ने प्रयागराज से भोपाल तक यात्रा की, फिर दूसरा यात्री भोपाल से इटारसी और तीसरा इटारसी से मुंबई तक, तो तीन सेट लिनन का उपयोग होगा, और हर सेट को उपयोग के बाद वाश किया जाएगा। इस व्यवस्था के तहत यदि एक ट्रेन के यात्रा मार्ग में कई यात्री होते हैं, तो प्रत्येक यात्री को नया लिनन प्रदान किया जाता है और लिनन का उपयोग समाप्त होने के बाद हर सेट को धोकर फिर से इस्तेमाल किया जाता है।

ब्लैंकेट वाशिंग प्रावधानरू

ब्लैंकेट के संबंध में, श्री त्रिपाठी ने बताया कि यह प्रत्येक महीने धोए जाते हैं ताकि उनकी गुणवत्ता बनी रहे। पहले, 2010 से पहले ब्लैंकेट को हर तीन महीने में धोने का नियम था, लेकिन 2016 के बाद इसे हर महीने धोने का निर्णय लिया गया है। हालांकि, इस संबंध में यात्रियों से कई बार शिकायतें आई हैं, जिन पर रेलवे लगातार काम कर रहा है। ब्लैंकेट की मिसहैंडलिंग से बचने के लिए विशेष कदम उठाए जा रहे हैं, और यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि इसका उपयोग सावधानीपूर्वक हो।

लिनन की गुणवत्ता प्रबंधन और वाशिंग सुविधाएंरू

उत्तर मध्य रेलवे के पास प्रयागराज और ग्वालियर में दो लॉन्ड्री सुविधाएं उपलब्ध हैं, और अन्य स्थानों के लिए वाशिंग कार्य आउटसोर्स किया जाता है। हर लॉन्ड्री में एक सीनियर सेक्शन क्लर्क ‴(ै) नियुक्त होता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि धोया गया लिनन फटा हुआ न हो। इसके अलावा, लिनन की सफेदी की जांच वाइटोमीटर से की जाती है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह सफेदी मानकों के अनुरूप है।

यात्रियों को दो बेडशीट देने का उद्देश्यरू

यात्रियों को दो बेडशीट देने का उद्देश्य है कि वे एक बेडशीट को बिछाएं और दूसरी को ओढ़ें, ताकि ब्लैंकेट सीधे संपर्क में न आए। अब कई प्रीमियम ट्रेनों, जैसे प्रयागराज एक्सप्रेस और बुंदेलखंड एक्सप्रेस की फर्स्ट एसी क्लास में ब्लैंकेट को कवर करके दिया जाने लगा है, जिससे यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा और स्वच्छता सुनिश्चित की जाती है।

लिनन की उपयोगी अवधि और डेट स्टैम्पिंगरू

लिनन की ष्कॉर्डर लाइफष् यानी उसकी उपयोगी अवधि को ट्रैक करने के लिए हर लिनन पर डेट स्टैम्पिंग की जाती है। लिनन की उपयोगी अवधि 9 से 12 महीने होती है, जो उसकी गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

प्रयागराज जंक्शन पर महाकुंभ रेल महोत्सव-2025 आयोजित

आर्ट आफ लिविंग’ संस्था के सदस्यों ने रेल महोत्सव में दीं प्रस्तुतियां

प्रयागराज।दिनांक 28 नवम्बर, 2024 को प्रयागराज मण्डल द्वारा ‘महाकुंभ रेल महोत्सव–2025’ के अंतर्गत प्रयागराज जंक्शन के प्लेटफार्म संख्या –1 के बाहरी प्रांगण में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया । सांस्कृतिक संध्या का आयोजन 28 फरवरी, 2025 तक प्रत्येक गुरुवार को किया जाएगा । इस अवसर पर अपर मण्डल रेल प्रबंधकध्इन्फ्रा श्री नवीन प्रकाश, वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी–प्प श्री वैभव गुप्ता एवं महिला कल्याण समितिध् प्रयागराज की अध्यक्षा श्रीमती निधि बडोनी और उपाध्याक्षा श्रीमती तरुण प्रकाश भी उपस्थित रहीं द्य इस कार्यक्रम का मंच संचालन श्री मिथलेश कुमार ने किया इस कार्यक्रम में महिला कल्याण समितिध् प्रयागराज की उपाध्याक्षा एवं सहायक शिक्षिका श्रीमती तरुण प्रकाश की सौजन्य से आर्ट ऑफ लिविंग संस्था से श्री राकेश जायसवाल, श्री मती मीरा जायसवाल, श्री धर्मेन्द्र जी, श्री बृहस्पति पांडे एवं सुश्री रुपाली जैन ने शानदार प्रस्तुतियां दीं । श्रीमती तरुण प्रकाश आर्ट ऑफ लिविंग संस्था की सदस्या हैं द्य आर्ट ऑफ लिविंग संस्था के संस्थापक श्री श्री रविशंकर हैं द्य इस संस्था के 180 से अधिक देशों में केंद्र हैं। दिन प्रतिदन के तनाव और खिंचाव के बीच खुश रहकर जीवन का आनंद लेना ही आर्ट ऑफ लिविंग है। यह एक तकनीक है, जिसके माध्यम से तनाव और चिंताओं को दूर कर जीवन में खुशी और आनंद लाने की कला सीखी जाती है। आर्ट ऑफ लिविंग संस्था चिन्ता, अवसाद व तनाव से मुक्ति एवं आत्म–विकास के लियें कार्य करता है ।

मऊआइमा पुलिस ने दो वारण्टी अभियुक्तों को किया गिरफ्तार

प्रयागराज ।थाना मऊआइमा पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक–30.11.2024 को मा0 न्यायालय ए0सी0जे0(जे0डी0) कक्ष सं0–21 इलाहाबाद द्वारा निर्गत गिरफ्तारी अधिपत्र सम्बन्धित मु0नं0–1605ध्2008 धारा–498(।)ध्323ध्504ध्506 भा0द0सं0 से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त राजीव कुमार पुत्र सीताराम निवासी धनपारी का पूरा गदियानी थाना मऊआइमा कमिश्नरेट प्रयागराज व मा0 न्यायालय ए0सी0जे0एम0 कक्ष सं0–06 इलाहाबाद द्वारा निर्गत गिरफ्तारी अधिपत्र सम्बन्धित मु0नं0–2766ध्10 धारा–504ध्506ध्427 भा0द0सं0 से सम्बन्धित वारण्टी अभियुक्त रामसजीवन पुत्र भुल्लू निवासी ग्राम हटिया थाना मऊआइमा कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना मऊआइमा क्षेत्रान्तर्गत उनके निवास ग्राम क्रमशरू धनपारी का पूरा व हटिया के पास से गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी ।

हण्डिया पुलिस ने एक वांछित अभियुक्तको किया गिरफ्तार’

प्रयागराज।थाना हण्डिया पर पंजीकृत मु0अ0सं0–669ध्2024 धारा–108ध् 352ध्351(2)ध्85 भा0न्या0सं0 व 3ध्4 डी0पी0 एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त सुभाष चन्द्र वर्मा पुत्र जोखू लाल वर्मा निवासी ग्राम होलापुर हरीजन बस्ती थाना हण्डिया कमिश्नरेट प्रयागराज को थाना हण्डिया पुलिस टीम द्वारा आज दिनांक–30.11.2024 को थाना हण्डिया क्षेत्रान्तर्गत ग्राम होलापुर कांगापुर तिराहा के पास से गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी ।

विज्डम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, मंगलवार 03 दिसंबर 2024
sheelshukla100@gmail.com

दुनिया का सिरमौर बनने की ओर अग्रसर भारत

ललित गर्ग ।

भारत को स्वर्णिम भारत, अच्छा भारत, रामराज्य का भारत या दुनिया का सिरमौर इसलिये कहा जाता है कि यह वो देश है जहाँ से दुनिया ने शून्य को जाना। खेल, पर्यटन और फिल्मों से जिसको पहचाना जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत एवं उसके प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की साख एवं सीख के कारण भारत दुनिया का सिरमौर बनने की दिशा में अग्रसर है। प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में 5 दिन के विदेश दौरे में तीन देशों की यात्रा की और 31 ग्लोबल लीडर्स और वैश्विक संगठनों के प्रमुखों के साथ मुलाकात की। मोदी की विदेश यात्राओं से विश्व में भारत का न सिर्फ सम्मान बढ़ रहा है बल्कि दुनिया का हमारे देश के प्रति नजरिया भी बदल रहा है। भारत का हमेशा से मानना रहा है कि दुनिया के शीर्ष ताकतों को सिर्फ अपने बारे में नहीं सोचना चाहिए। आर्थिक रूप से संपन्न देशों को छोटे–छोटे देशों के हितों का भी उतना ही ख्याल रखना होगा। प्रधानमंत्री के एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य का मंत्र इस बात की ओर ही संकेत है। भारत में वैश्विक विकास को फिर से पटरी पर लाने, युद्धमुक्त दुनिया बनाने, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य और डिजिटल परिवर्तन जैसे वैश्विक चिंता के प्रमुख मुद्दों पर दुनिया की अगुवाई करने की क्षमता है। इस पहलू को अब दुनिया की तमाम बड़ी शक्तियां भी स्वीकार करने लगी हैं। मोदी ने बार–बार कहा है भारत "वसुधैव कुटुम्बकम" की भावना से काम करता है, जिसमें छोटे–छोटे देशों के हितों को पूरा करने के लिए समान विकास और साझा भविष्य का संदेश भी निहित है, जो भारत की आशावादी एवं समतामूलक सोच को दर्शाता है।

भारत को स्वर्णिम भारत, अच्छा भारत, रामराज्य का भारत या दुनिया का सिरमौर इसलिये कहा जाता है कि यह वो देश है जहाँ से दुनिया ने शून्य को जाना। खेल, पर्यटन और फिल्मों से जिसको पहचाना जाता है। जिसकी अंतरिक्ष में पहुँच, तकनीकी प्रतिभाओं से विश्व ने भी भारत का लोहा माना है। बिना रक्त क्रांति के जिसने पायी थी आजादी। भारत दुनिया को बाजार नहीं, एक परिवार मानता है। संतों के सान्निध्य में चलने वाली भारत की व्यवस्था पूरी दुनिया के लिए मार्गदर्शन हैं। मानव सभ्यता के 95 प्रतिशत समय तक भारत दुनिया को खनिज, मसाले और धातुओं के साथ ही धर्म, गणित एवं खगोलशास्त्र की अवधारणाएं देता रहा। जब सारी दुनिया भटकती है तब भारत उसका मार्ग प्रशस्त करता है। भारत टकराव और संघर्ष को मानवता के लिए खतरा मानता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि मौजूदा दौर में हमें अपने अस्तित्व ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिए लड़ने की जरूरत है। भारत ने अपनी विदेश नीति के जरिए हमेशा ही ये संदेश दिया है कि आज दुनिया जलवायु परिवर्तन, गरीबी, आतंकवाद, युद्ध और महामारी जैसी जिन सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना कर रही है, उनका समाधान आपस में लड़कर नहीं बल्कि मिलकर काम करके ही निकाला जा सकता है। आज दुनिया में ऐसी ही संवेदनशील अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण की चर्चा हो रही है जहां समाज कल्याण एवं जीडीपी विकास दोनों का सह–अस्तित्व हो और नागरिकों की प्रसन्नता सर्वोपरि हो। भारत ऐसी ही अर्थव्यवस्था यानी संवेदनशील वैभव के सदुपयोग को खुशहाल जीवन और दीर्घकालिक आत्मनिर्भर समाज का आधार मानते हुए आगे बढ़ रहा हैं। भारतीय सभ्यता सदा से धन और दान दोनों को सर्वोच्च मानती है। हमारे ऋषियों–मनीषियों ने वाकपटुता, सहायता करने की तत्परता, शत्रुओं से निपटने की बुद्धिमत्ता, स्मृति, कौशल, नैतिकता एवं राजनीति का ज्ञान आदि गुणों को सफल नेतृत्व का आधार बताया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन्हीं गुणों के बल पर भारत को दुनिया में अव्वल स्थान पर पहुंचाया हैं। भारत के पास सबसे मजबूत लोकतंत्र है, विविधता है, स्वदेशी एवं समावेश सोच, आदर्श जीवनशैली, वैश्विक सोच है और दुनिया इन्हीं आइडियाज में अपनी सभी चुनौतियों का समाधान देख रही है।आज अमेरिकी अपनी गिरती साख को लेकर चिन्तीत है। यूरोपीय संस्कृति ऐसी रही है, जिसमें उन वस्तुओं पर भी पैसा बहाया गया, जिनकी उन्हें कभी जरूरत ही नहीं थी। चीन ने कारोबार और नीतियों का ऐसा रास्ता अपनाया, जिसमें कोई नैतिकता नहीं। रूस अपने शत्रु को आंकने में गलती कर गया और एक अंतहीन से युद्ध में उलझकर रह गया। दुनिया में मची इस उथल–पुथल के बीच ऐसा लगता है कि केवल भारत ही ऐसी प्रमुख शक्ति है, जिसने ऐसा रास्ता चुना जो कूटनीतिक समझ और नैतिकता से भरा है। साथ ही, उसने एक स्थिर अर्थव्यवस्था के वैश्विक ब्रांड के रूप में खुद को स्थापित किया है, जिसके साथ दुनिया व्यापार करना चाहती है। ये सब इसी कारण संभव हुआ, क्योंकि हम अपनी संस्कृति से जुड़े हैं, हमारा नेतृत्व संस्कृति से जुड़ा एक महान् कर्मयोद्धा कर रहा है। दुनिया पिछले हजारों सालों से सुखों के लिए दौड़ रही है लेकिन इस दौड़ में हार चुकी है। अब उसकी नजर भारत पर है। देश को अपनी सारी शक्ति एकजुट करनी होगी। सारी दुनिया में कट्टरपंथ और उदारता के बीच लड़ाई चल रही है। कपट और सरलता के बीच संघर्ष चल रहा है। देश को अपने मूल्यों को स्थापित करने के लिए सेनापति की भूमिका निभानी होगी और उसके लिये उसकी तैयारी भी है।वर्तमान में भारत आर्थिक, सामरिक, वैज्ञानिक तथा ज्ञान के क्षेत्र में विश्व का सिरमौर बन रहा है, यह अच्छा संकेत है। अन्यान्य क्षेत्रों के साथ भारत सौर ऊर्जा के क्षेत्र में दुनिया का सिरमौर है। सौर ऊर्जा उत्पादन में भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा देश है। इसलिए सारा संसार भारत की ओर बड़ी आशा और विश्वास के साथ देख रहा है। परन्तु अनेकानेक विशेषताओं एवं विलक्षणताओं के बीच कुछ विसंगतियां एवं विषमताएं भी हैं। भारत की अस्मिता का प्रतीक मातृशक्ति की आज सर्वत्र अवमानना की जा रही है। चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता से जूझता हुआ हमारा भारतीय समाज भोगवादी संस्कृति का आदी हो चुका है। अपने देश में भारत के हित में विचार करनेवाले, समाज की उन्नति के संबंध में चिंतन करनेवाले लोगों की कमी नहीं है। फिर भी आज देश की व्यवस्था में राष्ट्रभक्तों का अभाव दिखता है, संकीर्ण राजनीति एवं सत्ता की दौड़ में मूल्यों को धुंधलाने की स्थितियां कमजोर करती है। यही कारण है कि संपूर्ण देश में एक असंतोष की भावना दिखाई देती है। सरकारी यंत्रणाओं के प्रति जनमानस का विश्वास प्रायः लुप्त होता जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में नये परचम फहराने वाले युवाओं, घर को संस्कारों से संवर्धित करनेवाली नारीशक्ति, संपूर्ण भारत के जीवन को पोषित करनेवाले हमारे अन्नदाता किसान भाइयों तथा खेतों, कारखानों तथा सर्वत्र मजदूरी करनेवाले श्रमिकों, वन–संस्कृति का जतन करनेवाले वनवासी भगिनी–बंधुओं के आत्मविश्वास, लगन तथा परिश्रम के जागरण से भारत दुनिया में अव्वल होने की दिशा में अग्रसर है। देश का शिक्षित, प्रबुद्ध तथा समृद्ध समाज को दीन–दलितों, अशिक्षितों तथा असहाय लोगों के उत्थान के लिए आगे आना होगा। अंतर्राष्ट्रीय संगठन डेलायट ने अपनी हालिया रिपोर्ट में वर्ष 2030 तक भारत के चीन और अमेरिका जैसी विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को पीछे छोड़कर दुनिया के सबसे बड़े उपभोक्ता बाजार के रूप में उभर कर सामने आने की आशा व्यक्त की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के मध्यम वर्ग का दायरा काफी तेजी से बढ़ रहा है जिसके कारण बाजार तक पहुंच रखने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ रही है। व्यापार की नीतियों में उदारीकरण और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश बढ़ने का असर उपभोक्ता बाजार पर दिख रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं और उत्पादों के निर्यात में बढ़ोत्तरी ने भी उपभोक्ता बाजार का आकार बढ़ाने में सहायता की है।हमें राष्ट्र को आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक तथा सामरिक दृष्टि से सबल बनाना होगा। भारत को दुनिया का सिरमौर देखने की कामना करने वाले लोगों से अपेक्षा है कि वे जागे, कुछ नया और अनूठा करें। आनेवाली पीढियां तुम्हें निहार रही हैं। भारत का भविष्य अब युवाओं पर ही निर्भर है। उठो, जागो और समस्त दायित्व अपने कंधों पर ले लो। और जान लो कि तुम ही अपने भाग्य के विधाता हो। जितनी शक्ति और सहायता चाहिए वह सब तुम्हारे भीतर है। अतः अपना भविष्य स्वयं गढ़ों। मानव चिंतन के शीर्ष पर रहने वाला भारतीय समाज 300 वर्षों के अंतराल के बाद अपने ऐतिहासिक गौरव को फिर से पाने के पथ पर अग्रसर है। मध्यकाल में राह भटकने के बाद आज देश की युवा पीढ़ी एक ऐसे भारत में आगे बढ़ रही है, जो अवसर, संस्कृति और प्रगति का देश है।

सम्पादकीय

धनपति का एजेंट बन धंधे दिलाने का राजधर्म

याद करें भारत में कौन सा राजा (सम्राट अशोक से लेकर पृथ्वीराज चौहान या मुस्लिम–अंग्रेज शासकों के कार्यकाल में), प्रधानमंत्री ऐसा हुआ, जिसने किसी उद्योगपति–व्यापारी की पैरोकारी को अपना राजधर्म बनाया? जवाब है कि ऐसा उदाहरण प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल के किसी भी राजा, प्रधानमंत्री का नहीं है। क्यों? इसलिए क्योंकि राजनीति का उद्देश्य व कर्तव्य समाज के सभी वर्गों में संतुलन बनाने का है। राजा–प्रधानमंत्री कितना ही भ्रष्ट हुआ हो उसने किसी पर मेहरबान हो कर उसे लाइसेंस, कोटा दे कर क्रोनी पूंजीपति बनाया हो लेकिन राजा खुद धनपति का एजेंट बन कर उसे काम धंधे दिलाने को राजधर्म बनाए ऐसा एक भी उदाहरण भारत के इतिहास में नहीं है! आखिर राजा, राजा होता है, उसकी गरिमा पूरी नस्ल, कौम और देश की आन–बान–शान का प्रतीक होती है! चीन, रूस, अमेरिका, जापान आदि तमाम देशों की सरकारें देश की समृद्धि, व्यापार, वाणिज्य के लिए कूटनीति करती हैं, करार करती हैं, शी जिनफिंग, पुतिन जैसे तानाशाह शासक क्रोनी पूंजीपतियों का खेला भी बनाते हैं लेकिन क्या कभी सुना कि इनमें से किसी ने किसी चाइनीज या रूसी उद्योगपति की पैरोकारी को अपना राजधर्म बनाया है?अमेरिका घोषित पूंजीवादी देश है लेकिन उसका प्राथमिक धर्म सबको बराबर के अवसर मुहैया कराने का है। पूरी दुनिया में अमेरिकी कंपनियों का दबदबा और धंधा है लेकिन कंपनियां, अमेरिकी खरबपति अपने बूते, अपनी तकनीक, अपने प्रोडक्ट, अपनी सर्विस, अपनी उद्यमशीलता और कॉरपोरेट कायदों–नियमों से बने हुए हैं। सच्ची प्रतिस्पर्धा में बिजनेस करते हैं। डोनाल्?ड ट्रंप ने पिछले कार्यकाल में अमेरिकी मोटरसाइकिल कंपनी हार्ले–डेविडसन को ले कर भारत पर दबाव बनाया था तो उसका आधार भारत–अमेरिकी व्यापार नीति में कस्टम ड्यूटी की असमानताओं के हवाले था न कि उस कंपनी की निज पैरोकारी थी। शी जिनफिंग हों या पुतिन, इनके इतने वर्षों के शासन में वहां के किसी भी एक ऐसे उद्योगपति का नाम नहीं है, जैसे भारत में नरेंद्र मोदी से गौतम अडानी का बना है! जिन कंपनियों और उद्योगपतियों को लेकर चर्चा थी कि चाइनीज कम्युनिस्ट पार्टी से फलां–फलां की किस्मत बनी उनमें एक भी शी जिनफिंग या पुतिन के माई बाप उद्योगपति के रूप में दुनिया में चर्चित नहीं है! उलटे कभी जो ऐसे नाम सुने भी गए वे या तो जेल में (हां, चाइनीज खरबपति) है या गुमनामी में चले गए हैं!

क्यों? इसलिए क्योंकि राजा, राजा होता है वह कैसे भला किसी सेठ को अपनी व्यवस्था, शासन, राजधर्म का पर्याय बनने दे सकता है। मगर भारत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गौतम अडानी को अपने राजधर्म में, जब तक सूरज–चांद रहेगा तब तक अडानी का राज चलेगा वाली जो परिघटना रची है वह विश्व के इतिहास में अनहोनी है।

और यह भारत का वैश्विक कलंक है! अमेरिका, यूरोप और वैश्विक वित्तीय जगत में अडानी ग्रुप की आज बदनामी का सत्य अपनी जगह है लेकिन क्या विश्वास करेंगे कि अफ्रीका के केन्या में भारत को लेकर क्या नैरेटिव बना हुआ है? बतौर भारतीय मेरे और आपके, 140 करोड़ लोगों के वजूद में केन्या में सुनाई दिए इस वाक्य पर जरा गौर करें– भ्रष्ट भारतीय आखरिकार यहां आ ही गए। मुझे भरोसा नहीं हो रहा है कि ये सब हो रहा है। हमारे राष्ट्रपति जो केन्या से बहुत मोहब्बत करते हैं, उन्होंने 30 साल के लिए एयरपोर्ट अडानी को दे दिया है। अडानी सुन लीजिए अगर 2027 में हम राष्ट्रपति चुने गए तो आपको यहां से भागना होगा। हम भ्रष्टाचार से नफरत करते हैं, इसलिए आपसे भी नफरत करते हैं।उफ! यह भावना। तभी केन्या के राष्ट्रपति ने जब संसद में अडानी के ठेके को रद्द करने की घोषणा की तो सारे सांसदों ने खड़े हो कर ऐसे तालियां बजाई मानों कोई ऐतिहासिक काम हुआ हो, भ्रष्टाचार से आजादी मिली हो!क्या इसका यह मतलब नहीं है कि भारत अब भ्रष्टाचार एक्सपोर्ट कर रहा है! एक अदानी से दुनिया में भारतीय भ्रष्ट भारतीयथ करार दिए जा रहे है!और वैश्विक सुर्खियां है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गौतम अडानी के धंधे को अपना राजधर्म बना रखा है। श्रीलंका हो, बांग्लादेश हो, ऑस्ट्रेलिया हो, अमेरिका हो या यूरोप और वैश्विक वित्तिय व्यवस्था में सर्वत्र गौतम अडानी की चर्चा है। उनके साथ उनके बतौर प्रमोटर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नाम है! और अडानी का अर्थ क्या? ष्भ्रष्ट भारतीय आखिरकार यहां आ ही गए।ज्ञ

संघ परिवार और भाजपा की बुद्धि भले न माने कि ष्भ्रष्ट भारतीयथ की वैश्विक चर्चा भारत की भी बदनामी है। और तभी सोशल मीडिया पर यह देखने–सुनने में मिल रहा है कि अडानी भारत का राष्ट्र गौरव है तथा हिंदू आइडिया ऑफ इंडिया के जगत सेठ की बदनामी एक वैश्विक साजिश है। दुनिया जलीभुनी हुई है भारत के नवोदित खरबपति से! मतलब बुद्धि–विवेक को ताक पर रख कर राष्ट्रधर्म पर इस तरह विचार! तभी नामुमकिन नहीं है कि आने वाले समय में संघ परिवार के बौद्धिक यह साहित्य भी रचने लग जाएं कि इक्कीसवीं सदी हिंदुओं के महाराणा प्रताप और उनके भामाशाह गौतम अडानी की थी और इन्होंने दुनिया में पताका फहराते हुए कैसे–कैसे पापड़ बेले!

बहरहाल, असल बात है इस इक्कीसवीं सदी में हम हिंदुओं के विवेक को यह क्या हुआ जो उनके शासन का राष्ट्रधर्म एक उद्योगपति के सरंक्षण व प्रमोशन का! ऐसा न रामजी, पांडवों के समय में था। न सम्राट अशोक या विक्रमादित्य या चंद्रगुप्त मौर्य व पृथ्वीराज चौहान के समय था। न ही अकबर, जहांगीर, अंग्रेज के दरबार में था तो न नेहरू, अटल बिहारी, मनमोहन सिंह के समय था।अभी एक फिनोमिना अमेरिका में इलॉन मस्क का होता हुआ है। अमेरिकी इतिहास में भी पहली बार है जो राष्ट्रपति के अनुयायी के रूप में प्रशासन की भावी दशा–दिशा में मस्क अपना रोल बनाने की संभावना लिए हुए हैं। इससे अमेरिका के भीतर, पूरी पश्चिमी सभ्यता में चिंता और बहस है। कल ही गार्डियनथ में यह पढने को मिला कि आधुनिक जर्मनी में सबसे लंबा शासन करने वाली पूर्व चासंलर एंजिला मर्केल ने अमेरिकी सरकार में इलॉन मस्क को ले कर भारी चिंताथ जाहिर की। क्यों?

हेमंत सोरेन ने बचाई इंडिया की लाज

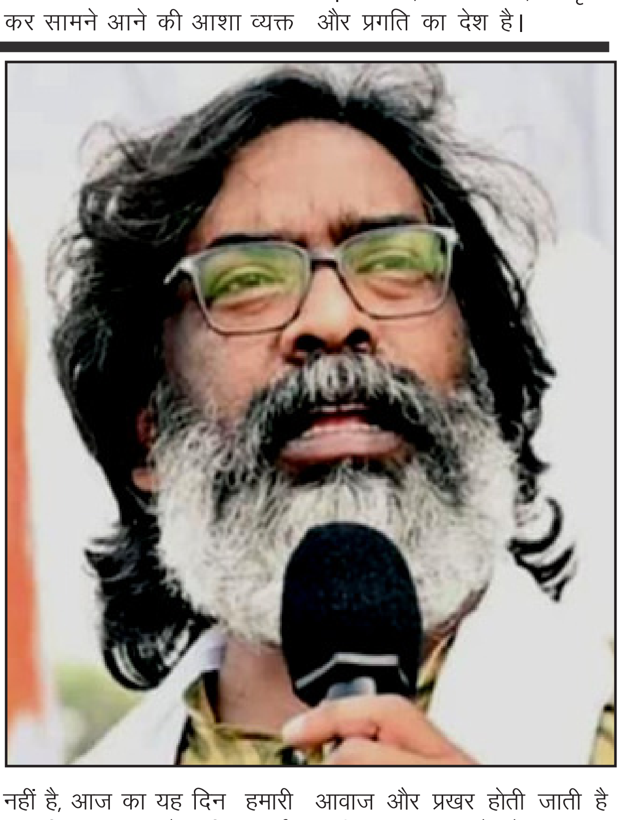

eहाराष्ट्र विधानसभा चुनाव और उत्तर प्रदेश के उपचुनाव में विपक्षी दलों के गठबंधन इण्डिया का फालूदा निकल गया। महाराष्ट्र में चुनाव के समय सीटों के बंटवारे को लेकर ही महाविकास अघाड़ी (एमवीए) के तीनों घटक झगड़ रहे थे। इंडिया के सहयोगी सपा ने भी महाराष्ट्र में प्रत्याशी घोषित कर दिए थे। इतना ही नहीं मतदान के दौरान ही कांग्रेस और शिवसेना में मुख्यमंत्री पद को लेकर बयानबाजी होने लगी थी। वहां की जनता ने एमवीए को सबक सिखा दिया। इसके विपरीत झारखंड में हेमंत सोरेन ने दिल्ली में डेरा डाल कर सहमति बनाई। लालू प्रसाद यादव की पार्टी राजद को भी संतुष्ट कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि यहां इंडिया गठबंधन ने भाजपा और उसके गठबंधन को धूल चटा दी। अब 28 नवंबर को चौथी बार झारखंड के मुख्यमंत्री की कमान संभाल रहे हेमंत सोरेन ने सोशल मीडिया पर लिखा, आदरणीय बाबा दिशोम गुरुजी और मां का संघर्ष एवं आशीर्वाद हमारी ताकत है। अब और मजबूती के साथ झारखण्ड के हक–अधिकार के लिए काम होगा। बीर पुरखों के सपनों और राज्यवासियों के आशाओं आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए अब तक सरकार पूरी संवेदनशीलता और नई ऊर्जा के साथ काम करेगी। जय झारखण्ड! जय जय झारखण्ड!

हेमंत सोरेन और उनकी पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) ने कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और वाम दलों (सीपीआई –एमएल) के साथ इंडिया गठबंधन के तहत चुनाव लड़ते हुए बड़ी जीत दर्ज की। इस चुनाव में आदिवासी अस्मिता, स्थानीय मुद्दे, और हेमंत सोरेन के व्यक्तिगत नेतृत्व ने गठबंधन की सफलता में अहम भूमिका निभाई। रांची जिले में इंडिया गठबंधन ने बहुत अच्छा प्रदर्शन करते हुए 7 में से 5 सीटें जीती हैं। भाजपा को केवल 2 सीटों से संतोष करना पड़ा। रांची सीट पर भाजपा के चंद्रेश्वर प्रसाद सिंह जीते, जबकि खिजरी और कांके सीट कांग्रेस के खाते में गईं। तमाड़ और सिल्ली सीटों पर झामुमो ने जीत हासिल की। 'इंडिया' गठबंधन में शामिल कांग्रेस और झामुमो ने मिलकर भाजपा को कड़ी टक्कर दी। रांची सीट पर भाजपा के चंद्रेश्वर प्रसाद सिंह ने जीत हासिल कर पार्टी का खाता खोला। कांके विधानसभा सीट पर कांग्रेस ने 39 साल बाद जीत हासिल की है। कांग्रेस के सुरेश कुमार बैठा ने 968 वोटों से जीत हासिल की। 1980 और 1985 में कांग्रेस ने यहां जीत हासिल की थी। उसके बाद 1990 से भाजपा लगातार जीत रही थी।

झारखंड विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के अच्छे प्रदर्शन पर पार्टी के झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने बयान दिया है। मीर ने कहा कि कांग्रेस को लेकर अफवाह फैलाने वालों को जनता ने जवाब दे दिया है। कांग्रेस को मिले जनादेश को उन्होंने सम्मानजनक बताया है, हालांकि उन्होंने माना कि पार्टी को इससे अधिक सीटें मिलने की उम्मीद थी। गुलाम अहमद मीर ने कहा कि कांग्रेस को मिली सीटें कम नहीं हैं क्योंकि भाजपा सिर्फ कांग्रेस से ही लड़ रही थी। उन्होंने कहा कि कई और दल भी थे जो कांग्रेस के खिलाफ चुनाव लड़ रहे थे। सरकार बनाने को लेकर मीर ने कहा था कि गठबंधन के विधायकों की बैठक होगी, जिसके बाद ही आगे की रणनीति तय होगी। इंडिया गठबंधन की बैठक रांची में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की आवास पर हुई। बैठक में गठबंधन में शामिल सभी दलों के नवनिर्वाचित विधायक शामिल हुए। हेमंत सोरेन को ही नेता चुना गया। सहयोगियों के साथ हेमंत सोरेन ने राज्यपाल से मुलाकात की। इस्तीफा देने के बाद हेमंत सोरेन ने सरकार बनाने का दावा पेश किया। झारखंड चुनाव में गठबंधन को 56 सीटों पर जीत मिली है। राज्यपाल ने उनके आग्रह को स्वीकार करते हुए नई सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। इस प्रकार 28 नवंबर को राज्य के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में हेमंत सोरेन ने चौथी बार शपथ ली है। हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली जेएमएम ने 81 सदस्यीय झारखंड विधानसभा में 56 सीटों पर बहुमत दर्ज करने के साथ इंडिया ब्लॉक को जीत दिलाई है। इस बार के झारखंड चुनाव में हेमंत सोरेन के नेतृत्व में 'इंडिया' गठबंधन ने शानदार प्रदर्शन किया है। इंडिया गठबंधन के लिए झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) ने सबसे ज्यादा 34 सीटों पर जीत दर्ज की है। वहीं एनडीए को 24 सीटों पर ही विजय मिली है।

झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 में इंडिया गठबंधन के लिए राजद के चार प्रत्याशियों ने भी जीत दर्ज की है। राजद ने राज्य की चार विधानसभा सीटों देवघर, गोड्डा, विश्रामपुर और हुसैनाबाद में जीत दर्ज की है। देवघर में राजद के सुरेश पासवान ने 39721 वोट से जीत दर्ज की है। जबकि गोड्डा से राजद नेता संजय प्रसाद यादव ने 21471 वोट से जीत हासिल की। वहीं विश्रामपुर में राजद उम्मीदवार नरेश प्रसाद सिंह 14587 वोट के मार्जिन से विजय हासिल की। बात करें हुसैनाबाद सीट की तो यहां राजद प्रत्याशी संजय कुमार सिंह यादव ने 34 हजार से ज्यादा वोट से जीत दर्ज की है। झारखंड चुनाव में इंडिया गठबंधन की जेएमएम का वोट शेयर 23.43 फीसदी रहा, कांग्रेस का 15.57 फीसदी, आरजेडी का 3.44 फीसदी और भाकपा (माले) का 1.89 फीसदी। वहीं अकेले भाजपा का सीट शेयर 33.17 फीसदी रहा है।

शपथ लेने से पहले हेमंत सोरेन ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, जोहार साथियों, आज का दिन ऐतिहासिक होगा– एक ऐसा दिन जो हमारे सामूहिक संघर्ष, प्रेम–भाईचारे की भावना और न्याय के प्रति हम झारखंडियों के प्रतिबद्धता को और मजबूत करेगा। उन्होंने आगे लिखा, झारखंड की महान धारा ने हमेशा से विरोध और संघर्ष को जन्म दिया है और झामुमो – भगवान बिरसा, भगवान सिदो–कान्हू, अमर शहीद तेलंगा खड़िया, फूलो–झानो, पोटो हो, शेख भिखारी समेत अनगिनत वीरों के संघर्षों से भरी उसी विरासत को समेटे हर दिन आगे बढ़ रहा है। आज का यह दिन राजनीतिक जीत के बारे में नहीं है, आज का यह दिन हमारी सामाजिक न्याय के प्रति संघर्ष, सामाजिक एकता को प्रखर करने की हर रोज लड़ी जानी वाली लड़ाई को दोहराने का दिन है। आज का यह दिन यह भी बताता है कि लोकतंत्र पर बढ़ते दबाव के बीच झारखंड की महान जनता एक साथ खड़ी है। आज हर गांव, हर शहर में एक आवाज गूंज रहा है– अधिकार, समानता, एकता मतलब झारखंडियत की आवाज।

हेमंत सोरेन ने आगे लिखा, इसमें कोई संदेह न रखें– हमारी एकता ही हमारा सबसे बड़ा हथियार है। हमें न विभाजित किया जा सकता है, न ही शांत किया जा सकता है। जब जब वे हमें पीछे धकेलते हैं, हम आगे बढ़ते हैं। जब जब वे हमें शांत करना चाहते हैं, हमारी हूल, उलगुलान, क्रांति की आवाज और प्रखर होती जाती है क्यूंकि हम झारखंडी हैं, और झारखंडी झुकते नहीं है।आज जब सामाजिक संरचना में गहरी दरारें पैदा हो रही हैं, तब हमें अपने पूर्वजों की उस एकता और हर झारखंडी को साथ ले कर चलने के संकल्प को पुनः दोहराना होगा। अपने अबुआ सरकार के लिए हर एक झारखंडी को बधाई। हमारी लड़ाई अटल है, अविराम है। संघर्ष जारी है और आखिरी साँस तक रहेगा।

शपथ ग्रहण समारोह कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे,पार्टी नेता राहुल गांधी, एनसीपी प्रमुख शरद पवार, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, उनके मेघालय समकक्ष कॉनराड संगमा, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान और हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू मौजूद थे। ¼fgQ½

मध्य प्रदेश को रेल विभाग के तोहफे

Mk- मोहन यादव ने मध्य प्रदेश में हाल ही में सम्पन्न हुए दो विधानसभा सीटों के उपचुनाव में बुधनी सीट वापस ले ली है। यह प्रतिष्ठा की सीट थी। उसी सीट से पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान विजयी होकर विधानसभा में पहुंचते थे। इसके साथ ही विजयपुर सीट पर भी उपचुनाव हुआ था। यह सीट कांग्रेस के हिस्से में गयी है। इस प्रकार उपचुनाव के नतीजे भाजपा के लिए सामान्य रहे हैं। मोहन यादव की सरकार राज्य में विकास योजनाओं पर ध्यान दे रही है। इस मामले में रेल मंत्रालय ने उनकी मदद की है। केन्द्र सरकार की कैबिनेट बैठक में मध्य प्रदेश के लिए 7,927 करोड़ की मल्टी ट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान की गयी है। इससे धार्मिक, सांस्कृतिक और इको पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। प्रदेश में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। डा. मोहन यादव ने जनजातीय वर्ग के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण कदम बढ़ाए हैं। इसके लिए 40804 करोड़ का बजट में प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय कैबिनेट द्वारा रेल मंत्रालय की 7 हजार 927 करोड़ रुपये लागत की 3 मल्टी ट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी प्रदान करने पर प्रधानमंत्री मोदी और केन्द्रीय कैबिनेट का आभार व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि रेल लाइन के विस्तार से धार्मिक, सांस्कृतिक एवं इको पर्यटन को प्रोत्साहन मिलेगा। इस पहल से प्रदेश में ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग (खंडवा), खजुराहो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, असीरगढ़ किला और रीवा किला जैसे विभिन्न आकर्षणों तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित होगी, जिससे श्रद्धालुओं और पर्यटकों को सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि इससे प्रदेश में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। मुख्यमंत्री ने परियोजनाओं की स्वीकृत के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री का आभार माना।

केंद्रीय मंत्री–मंडल ने रेल मंत्रालय की 3 परियोजनाओं को मंजूरी दी, जिनकी लागत 7 हजार 927 करोड़ रुपये है। इनमें जलगांव–मनमाड चौथी लाइन (160 किमी), भुसावल–खंडवा तीसरी और चौथी लाइन (131 किमी) तथा प्रयागराज (इरादतगंज) मानिकपुर तीसरी लाइन (84 किमी) शामिल हैं। ये परियोजनाएं 3 राज्यों अर्थात महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के 7 जिलों को कवर करेंगी। इससे भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 639 किलोमीटर की वृद्धि होगी। निर्माण अवधि के दौरान लगभग एक लाख मानव–दिनों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार उत्पन्न होंगे। इससे कोयला परिवहन और यात्री ट्रेनों के लिए निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी और मालगाड़ी के यात्रा समय में कमी करने में भी मदद मिलेगी। स्वीकृत परियोजना खंडवा और चित्रकूट जैसे 2 आकांक्षी जिलों में कनेक्टिविटी बढ़ाएगी, जिससे लगभग एक हजार 319 गांवों और लगभग 38 लाख आबादी को सेवा मिलेगी। मुंबई–प्रयागराज–वाराणसी रूट पर अतिरिक्त यात्री ट्रेनों के संचालन को सक्षम करके कनेक्टिविटी को बढ़ाएगा। नासिक (त्र्यंबकेश्वर) और वाराणसी (काशी विश्वनाथ) के ज्योतिर्लिंग के साथ प्रयागराज, चित्रकूट, गया और शिरडी जैसे धार्मिक स्थलों की यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों को लाभ होगा। अजंता और एलोरा गुफाएँ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, देवगिरी किला, यावल वन्यजीव अभयारण्य, केवटी फॉल्स और पुरवा फॉल्स आदि जैसे विभिन्न आकर्षणों तक बेहतर पहुँच के माध्यम से प्रकृति प्रेमियों और इतिहास में रूचि रखने वाले पर्यटकों को भी सुविधा होगी और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।मध्य प्रदेश की दो विधानसभा सीटों (विजयपुर और बुधनी) पर हुए उपचुनाव के नतीजे 23 नवम्बर को आ गए। एमपी की दो सीटों में एक सीट पर बीजेपी को झटका लगा है। बीजेपी ने विजयपुर की सीट पर पर्यावरण मंत्री रामनिवास रावत पर भरोसा जताया था। हालांकि, उनको इस इस चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। इस सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी मुकेश मलहोत्रा की जीत हुई है। सीहोर जिले की बुधनी विधानसभा सीट को बीजेपी का गढ़ माना जाता रहा है। यहां पर हुए उपचुनाव में बीजेपी को जीत मिली है। बुधनी में भाजपा से रमाकांत भार्गव और कांग्रेस के राजकुमार पटेल के बीच मुख्य मुकाबला था। बीजेपी के प्रत्याशी रमाकांत भार्गव ने कांग्रेस के प्रत्याशी को 13848 वोटों से शिकस्त दी है। बीजेपी प्रत्याशी रमाकांत भार्गव को 107269 वोट मिले हैं, वहीं, कांग्रेस के प्रत्याशी राजकुमार पटेल को 93421 वोट मिले।राज्य में हिन्दुत्व की अलख जग रही है। इंदौर की एक मस्जिद पर लगे गजवा–ए–हिंद के पोस्टर को लेकर पिछले दिनों काफी हल्ला मचा। विवाद के बाद पोस्टर मस्जिद से हटा लिया गया, लेकिन अब उसके जवाब में भगवा–ए–हिन्द के पोस्टर भंवरकुआ क्षेत्र में हिन्दूवादियों ने लगाए। जिन पर लिखा है–बटेंगे तो कटेंगे,एक है तो सेफ हैं। हिन्द राष्ट्र संगठन नामक संस्था ने यह पोस्टर क्षेत्र के कई घरों के आंगन की दीवारों पर लगाए है। संगठन के प्रदेशाध्यक्ष राजेश शिरोडकर का कहना है कि पिछले दिनों शहर में गजवा–ए–हिंद के पोस्टर नजर आए थे। हमारा संगठन भी हिन्दू परिवारों को संगठित और जागरुक कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जनजातीय वर्ग के कल्याण के लिए बड़ा कदम उठाया है. वित्त वर्ष 2024–25 में राज्य सरकार ने अनुसूचित जनजाति (उप योजना) के लिए 40 हजार 804 करोड़ रूपये का बजट पारित किया है. जनजातियों के समग्र विकास के लिए पारित यह बजट पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 3,856 करोड़ रूपये ज्यादा है. ।

शिक्षक समाज के लिए होता है पथ प्रर्दशक : रोली सिंह

–समिति बना कर किया जाएगा शिक्षकों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण : वेद गुप्ता
–उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ पांडे गुट के जनपद सम्मेलन का हुआ आयोजन

अयोध्या (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ पांडे गुट का 54 वां जनपदीय सम्मेलन एम पी एल एल आदर्श इंटर कॉलेज अयोध्या में संपन्न हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह, जिपंअ प्रतिनिधि आलोक कुमार सिंह रोहित व नगर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन करके किया। एस एस वी इंटर कॉलेज के छात्रों ने सरस्वती वंदना व स्वागत गीत की प्रस्तुति की। सम्मेलन में पधारे हुए अतिथियों का स्वागत जिलाध्यक्ष वीरेंद्र बहादुर सिंह व संयोजक अनिल कुमार मिश्र ने माल्यार्पण, स्मृति चिन्ह व अंग वस्त्र देकर किया। सम्मेलन में जिला पंचायत अध्यक्ष रोली सिंह ने कहा कि गुरुजनों के समक्ष मुझे उपस्थित होने का अवसर मिला यह मेरा सौभाग्य है। शिक्षक समाज के लिए पथ प्रर्दशक होता है। विधायक वेद प्रकाश गुप्ता ने कहा कि शिक्षकों की समस्याएं हमारी समस्याएं हैं इसके निस्तारण के लिए शिक्षकों की एक समिति बनाकर संबंधित अधिकारियों को बुलाकर समस्याओं का त्वरित निस्तारण कराया जाएगा। आलोक कुमार सिंह ने कहा कि शिक्षक अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए छात्रों के उत्कृष्ट चरित्र का निर्माण कर रहे हैं जो देश के लिए अत्यंत हितकारी है। सम्मेलन को संबोधित करते हुए संगठन के मंडलीय मंत्री उदय नारायण तिवारी ने कहा कि हमारा संगठन भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए ही बना हुआ है और भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए हम लोग सदैव तैयार रहते हैं। जिलाध्यक्ष वीरेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि संगठन अपने संघर्षों के बल पर निरंतर उपलब्धियां को प्राप्त करता जा रहा है उन्होंने आवाहन किया कि इसी तरह एकत्रित व संगठित होकर किसी भी प्रकार की समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है।

सम्मेलन को वरिष्ठ उपाध्यक्ष सतीश सिंह, दान बहादुर सिंह प्रधानाचार्य के के यादव प्रदेश महामंत्री घनश्याम तिवारी आदि मुख्य वक्ताओं ने संबोधित किया सम्मेलन में विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी संगठन द्वारा शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले छः शिक्षक शिक्षिकाओं श्रीमती किरण सिंह सहायक अध्यापक आर्य कन्या इंटर कॉलेज ,श्रीमती सुमन श्रीवास्तव सहायक अध्यापक बापु बालिका इंटर कॉलेज, प्रधानाचार्य भोपाल सिंह जनता इंटर कॉलेज जयसिंह मऊ, उदय नारायण तिवारी प्रवक्ता राजकरण इंटर कॉलेज अयोध्या ,ओम प्रकाश वर्मा प्रवक्ता आर डी इंटर कॉलेज सुचितागंज ,विनोद शंकर मिश्र सहायक अध्यापक एसएसबी इंटर कॉलेज अयोध्या को सम्मानित किया । अंत में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं प्रधानाचार्य वरुण प्रताप सिंह ने भारी संख्या में उपस्थित प्रधानाचार्य शिक्षकों शिक्षिकाओं के प्रति आभार वक्त करते हुए कहा कि एकत्रित रहिए संगठित रहिये आह्वान करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की।

नगर निगम के विस्तारित क्षेत्र की 62 सड़कों का होगा कायाकल्प

-22 करोड़ 38 लाख 76 हजार आएगी निर्माण की लागत

अयोध्या(एजेंसी)। नगर निगम के सीमा विस्तारित क्षेत्र की 62 सड़कों का विकास किया जाएगा। इसकी लगात 22 करोड़ 38 लाख 76 हजार आएगी। जिसके लिए नौ करोड़ 11 लाख 68 हजार रुपये की प्रथम किश्त अवमुक्त कर दी गई है। मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना के तहत इसका निर्माण किया जाएगा। निर्माण होने वाली सड़के प्रमुख रुप से साकेतनगर वार्ड, कपूरी ठाकुर वार्ड, कौशलपुरी वार्ड, कृष्णानगर वार्ड, शिवनगर वार्ड, चित्रगुप्तनगर वार्ड, अवैद्यनाथ वार्ड, लाला लाजपतराय वार्ड, पंडित दीनदयाल वार्ड, हनुमतनगर वार्ड, महाराणा प्रताप वार्ड, जनौरा वार्ड, पुरुषोत्तमनगर वार्ड, दर्शननगर वार्ड, चौधरी चरण सिंह वार्ड, झलकारी बाई वार्ड, श्यामा प्रसाद मुखर्जी वार्ड की है। जल्द इन सड़को का निर्माण शुरु कर दिया जाएगा।

महापौर महंत गिरीश पति त्रिपाठी ने कहा कि नगर निगम के सर्वांगीण विकास की अवधारणा को धरातल पर उतारने की प्रतिबद्धता के साथ लगातार कार्य किया जा रहा है। अच्छी सड़के किसी क्षेत्र के विकास का पैमाना होती है। विकास की रश्मि पूरे नगर निगम को प्रकाशित करने, जनता की हर अपेक्षाओं को पूरा करने के प्रयासों को तीव्र गति प्रदान की गई है। मोहल्लों की इन सड़को व नालियों का निर्माण होने से आवागमन की सुविधा बढ़ने के साथ जलनिकासी की भी व्यवस्था काफी अच्छी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि अयोध्या को विकास की दृष्टि की सवोत्तम नगरी बनाने की परिकल्पना में जनअपेक्षा को शामिल करते हुए नगर निगम अपना योगदान लगातार दे रहा है। अयोध्या विश्व पयर्टन के मानचित्र पर आ गयी है। रामनगरी को देश का सबसे सुन्दर व स्वच्छ बनाने की सोच को जन सहयोग के माध्यम से धरातल पर उतारा जाएगा।

एक पात्रिय नाट्य प्रतियोगिता में कृष्ण कुमार अव्वल

कुमारगंज–अयोध्या (एजेंसी)आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के सामुदायिक महाविद्यालय में लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की 148वीं जयंती के अवसर पर एक पात्रिय नाट्य प्रतियोगिता आयोजित की गई। "राष्ट्रीय एकता" थीम पर यह प्रतियोगिता प्रदेश की कुलाधिपति व राज्यपाल अनंदीबेन पटेल के निर्देश व कुलपति डा. बिजेंद्र सिंह के दिशा निर्देशन में आयोजित की गई।

प्रतियोगिता का शुभारंभ वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. संजय पाठक, सामुदायिक महाविद्यालय की अधिष्ठाता डा. साधना सिंह व अन्य पांच विश्वविद्यालयों से पहुंचे शिक्षक अतिथियों ने जल भरो के साथ किया। इस प्रतियोगिता में अलग–अलग जगहों से कुल छह विश्वविद्यालयों ने प्रतिभाग किया। "राष्ट्रीय एकता" थीम पर प्रतियोगी छात्र–छात्राओं ने नाट्य के जरिए देश को सुरक्षित रखने व एकता के भाव को सबके सामने प्रदर्शित किया। नाट्य प्रस्तुति के जरिए छात्रों ने बताया की किस प्रकार हमारा भारत देश "एक हैं तो सेफ हैं"। प्रतियोगिता में प्रत्येक छात्र को बोलने के लिए मात्र सात मिनट का समय दिया गया। प्रतियोगिता में आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय अयोध्या की ओर से श्रेया राय, डा. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या से संस्कृति मिश्रा, सिद्धार्थ विश्व विद्यालय कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर से कीर्ति उपाध्याय, महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विवि गोरखपुर से रवि अग्रहरि, मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय गोरखपुर से नितिन गुप्ता, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर की ओर से कृष्ण कुमार मिश्रा ने प्रतिभाग किया। जिसमें दीनदयाल उपाध्याय विवि गोरखपुर के कृष्ण कुमार मिश्रा ने प्रथम, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कीर्ति उपाध्याय दूसरे व आचार्य नरेंद्र देव कृषि विवि की श्रेया राय ने तीसरा स्थान हासिल किया। यह प्रतियोगिता उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. संजय पाठक के संयोजन में आयोजित की गयी। मंच का संचालन सह प्राध्यापक डा. सुप्रिया ने किया। इस मौके पर सह छात्र कल्याण अधिष्ठाता डा. एस.पी. सिंह, डा. विभा यादव, डा. विभा परिहार, डा. देवनारायण पटेल, डा. अतुल यादव, डा. प्राची सहित अन्य शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं मौजूद रहे।

मृतक व्यक्तिभी महाविद्यालय का शिक्षक

-महाविद्यालय अनुमोदित शिक्षकों की सूची में मृतक का नाम शामिल करते हुए वेतन के नाम पर गबन का आरोप

मिल्कीपुर–अयोध्या(एजेंसी)। मिल्कीपुर विधानसभा क्षेत्र स्थित श्री राम जानकी महाविद्यालय रामनगर अमावा सूफी में हुए फर्जी बाड़े का जिन्न एक के बाद एक निकलता जा रहा है। डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या से संबद्ध श्री राम जानकी महाविद्यालय रामनगर अमावा सूफी में अनुमोदित शिक्षकों की सूची में मृतक व्यक्ति का नाम शामिल कर उसके नाम से भुगतान प्राप्त किए जाने का बड़ा मामला प्रकाश में आया है। जहां जानकारी के बाद उच्च न्यायालय इलाहाबाद के अधिवक्ता एवं खंडासा थाना क्षेत्र के इछोई गांव निवासी पवन कुमार पांडे ने प्रदेश के मुख्यमंत्री से शिकायत कर प्रकरण में कार्यवाही की गुहार की है। शिकायतकर्ता एडवोकेट पवन कुमार पांडे ने मुख्यमंत्री कोऑपरेटिव शिकायती पत्र में आरोप लगाया है कि वह वर्तमान में इलाहाबाद में ही रहकर उच्च न्यायालय इलाहाबाद में वकालत करता है और भारत सरकार का सीसीसी भी रह चुका है। उन्होंने डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या से संबंधित (123) श्री राम जानकी महाविद्यालय रामनगर अमावा सूफी अयोध्या के प्रबंधक व प्राचार्य ने अन्य लोगों के साथ विचार विमर्श करने के उपरांत विभिन्न लोगों की मदद से पहले दिनांक 1 जुलाई 2017 को फर्जी वह कोर्ट रचित प्रपत्रों के जरिए हिंदी विषय हेतु कोड नंबर आर एम एल 9148 के तहत विनोद कुमार पुत्र लालता प्रसाद जिनकी जन्म तिथि 1 जुलाई 1985 है, का अनुमोदन करते हुए नियुक्ति की और बाद में उनके निधन के पश्चात भी उनको दिए जाने वाले वेतन को फर्जी तरीके से भुगतान दर्शाकर उसका गबन कर लिया है। शिकायतकर्ता का कहना है कि मृतक शिक्षक का नाम महाविद्यालय के अनुमोदित शिक्षकों की सूची में क्रमांक 136 पर अंकित है। उक्त मृतक शिक्षक खंडासा थाना क्षेत्र के ही शिवदासपुर ग्रंट बनकटवा का निवासी था। जिसकी मृत्यु विगत कोरोना काल में ही हो चुकी है। बताते चलें कि उक्त अधिवक्ता के प्रकरण में ऐसे ही खांडसा थाने में तैनात एक दरोगा राहुल कुमार पांडे द्वारा मुकदमे की विवेचना के दौरान मृतक व्यक्ति का बयान अंकित कर दिया गया था। मामले में अधिवक्ता की शिकायत के बाद वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा उक्त दरोगा को निलंबित भी किया जा चुका है। अब देखना है ऐसे गंभीर मामले मे विश्वविद्यालय प्रशासन आखिर कौन सी कार्यवाही करेगा और उस कार्यवाही की जद में कौन–कौन आएंगे। फिलहाल ऐसे गंभीर फर्जी बाड़े की जानकारी मिलते ही क्षेत्र में चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है।

घर के अंदर फंदे से लटकता मिला छात्रा का शव

मिल्कीपुर–अयोध्या(एजेंसी)। इनायत नगर थाना कोतवाली क्षेत्र के अस्थना पूरे गोरवा गांव में शुक्रवार की सुबह घर के अंदर एक बारहवीं की छात्रा का शव फंदे से लटकता मिला है। सूचना पर पहुँची पुलिस व फॉरेंसिक टीम ने घटना की गहनता से जांच–पड़ताल शुरू कर दिया है। बता दें कि अस्थना पूरे गोरवा गांव निवासी राम अभिलाख यादव की 17 वर्षीय पुत्री कमलेश का संदिग्ध परिस्थितियों में कमरे में फंदे से शव लटकता मिला है। घटना की जानकारी मिलते ही पूरे गांव में सनसनी फैल गई तथा परिवार में मातम छा गया है। परिजनों का कहना है कि वृहस्पतिवार की रात को भोजन करने के बाद रोज की तरह अपने–अपने कमरे में सभी सोने चले गए। किशोरी अपनी मां के पास रात में सोई थी। सुबह जब मां नींद से जागी तो देखा बेटी उनके साथ विस्तर पर नहीं है। बेटी को अपने साथ विस्तर पर न देखकर मां इधर उधर खोजने लगी। खोजते–खोजते कमरे में पहुंची तो देखा बेटी कमरे में बल्ली से फंदे के सहारे लटकी है। जिसके बाद मां जोर–जोर से रोने व चिल्लाने लगी। मां की रोने–चिल्लाने की आवाज सुनकर परिवार व आस–पास के लोग इकट्ठा हो गए। जिसके बाद घटना की जानकारी परिजनों द्वारा पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही थाने के उपनिरीक्षक आलोक कुमार सिंह व रवीन्द्र सिंह पुलिस फोर्स के साथ मौके पर पहुंचकर फॉरेंसिक टीम को बुलाया और शव को नीचे उतरवाकर पंचनामा के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज कर घटना की गहन जांच–पड़ताल शुरू कर दिया है। उपनिरीक्षक आलोक कुमार सिंह ने बताया प्रथम दृष्टया आत्म हत्या प्रतीत हो रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा।

प्रधान पति व अन्य चार लोगों पर मुकदमा दर्ज करवाने को लेकर अड़े पंचायत सचिव

-पंचायत सचिवों का दूसरे दिन भी जारी रहा धरना प्रदर्शन

मिल्कीपुर–अयोध्या(एजेंसी)। ग्राम प्रधान व ग्राम विकास अधिकारी के मध्य हुए विवाद को लेकर कार्रवाई न होने से ग्राम विकासध पंचायत अधिकारी लामबंद होकर मिल्कीपुर ब्लाक मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन शुक्रवार को दूसरा दिन हो चुका हैं लेकिन अभी तक मुकदमा दर्ज नहीं किया गया हैं। बीते सप्ताह में शनिवार को ग्राम पंचायत पलिया मुतालके कुचेरा के ग्राम प्रधान पति विजय सिंह व उनके साथियों के द्वारा ग्राम पंचायत अधिकारी सूरज सिंह व उनके ड्राइवर से मिल्कीपुर विकास खण्ड स्थित आवास सह कक्ष के बाहर अभद्रता व मारपीट की गई थी। पीड़ित पंचायत सचिव ने प्रधान पति व उनके चार साथियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करने के लिए थाना कोतवाली इनायत नगर पुलिस को शिकायती प्रार्थना पत्र दिया था परंतु एक सप्ताह बीतने के बाद भी कार्रवाई न होने से नाराज मिल्कीपुर के समस्त ग्राम पंचायतध्ग्राम विकास अधिकारीयों ने ब्लाक मुख्यालय पर कार्य को बहिष्कार करते हुए तीन दिवसीय शांतिपूर्ण ढंग से गुरुवार को धरना प्रदर्शन शुरू किया, प्रधान पति और उनके अन्य साथियों पर मुकदमा दर्ज करवाने की मांग को लेकर शुक्रवार को धरना दूसरे दिन भी जारी रहा।

इस धरना प्रदर्शन को विकास खण्ड में कार्यरत समस्त अधिकारियों व कर्मचारी का समर्थन प्राप्त है। धरना कर रहे संगठन के पदाधिकारियों ने आरोपी प्रधान पति व उनके चार साथियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज करवाने को लेकर जिलाधिकारी को संबोधित ज्ञापन विकास खण्ड कार्यालय में दिया गया है जिसमें मुख्य आरोपी व उनके चार साथियों पर मुकदमा दर्ज करते हुए गिरफ्तारी की मांग की गई है। संगठन के ब्लाक अध्यक्ष आदित्य कुमार ने बताया कि यह धरना प्रदर्शन जिले के सभी ब्लाकों में चल रहा है धरना प्रदर्शन शनिवार तक जारी रहेगा यदि इस बीच भी कार्रवाई नहीं हुई तो सीडीओ कार्यालय के सामने सोमवार से धरना प्रदर्शन किया जाएगा। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संगठन के जिला महामंत्री हरगोविंद वर्मा, ब्लाक महामंत्री दीपेंद्र सिंह, एडीओ पंचायत सुरेंद्र कुमार, एडीओ समाज कल्याण शशांक चतुर्वेदी, राम सुभाय, राजेंद्र यादव, आशीष मिश्रा, हंसराज सिंह, संदीप कुमार, ज्योति यादव, मिथिलेश सहित ब्लाक के अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

अयोध्या में शुरू हुई अंतरराष्ट्रीय क्रोनोमेडिसिन कांफ्रेंस

-देश-विदेश से सैकड़ों की संख्या में पहुचे चिकित्सक, करेंगे दर्शन-पूजन
-10वीं कांफ्रेंस के लिए जैसलमेर में ही अयोध्या का हुआ था चुनाव

अयोध्या।(एजेंसी) भव्य मंदिर में रामलला के विराजमान होने के बाद दूर–दूर से श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे हैं। वे न सिर्फ रामलला का दर्शन कर रहे हैं बल्कि योगी सरकार द्वारा सजाई गई रामनगरी का दीदार भी कर रहे हैं। इसी कड़ी में धरती के भगवान माने जाने वाले चिकित्सक भी अब देश–विदेश से किसी न किसी बहाने अयोध्या पहुंच रहे हैं। शुक्रवार से राजर्षि दशरथ मेडिकल कॉलेज गंजा में शुरू हुई अंतरराष्ट्रीय क्रोनोमेडिसिन इसका जीता–जागता उदाहरण रहा। दरसअल अयोध्या में पहली बार अंतरराष्ट्रीय क्रोनोमेडिसिन 2024 कांफ्रेंस हो रही है। इस कांफ्रेंस में प्रदेश से ही नहीं बल्कि देश–विदेश से चिकित्सक शामिल होने के लिए पहुंचे हैं। आयोजन के सचिव व मेडिकल कॉलेज के मेडिसिन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वीरेंद्र वर्मा ने बताया कि पिछली बार इसका आयोजन राजस्थान के जैसलमेर में हुआ था। राम मंदिर निर्माण के बाद चिकित्सकों ने अयोध्या में इस कांफ्रेंस को कराने का आह्वान किया था। सभी रामलला के दर्शन व अयोध्या को देखना भी चाहते थे। यही कारण रहा है कि कांफ्रेंस अयोध्या में कराई गई है। तकरीबन 800 से 1000 के बीच चिकित्सक इसमें शामिल हो रहे हैं।संरक्षक व मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि कांफ्रेंस का शुभारंभ समारोहपूर्वक किया गया। यह 1 दिसंबर तक चलेगी। इसमें विदेश से 14 चिकित्सक पहुंच रहे हैं। 10 अमेरिका से ही हैं। उन्होंने बताया कि यूएसए के अमेरिका कॉलेज ऑफ फिजिशियन की वाइस प्रेसिडेंट डॉ. मुक्ता पांडा, यूएसए से डॉ. देवेंद्र अग्रवाल, चेन्नई से डॉ. कृष्णा शेषादोई, अमेरिका से डॉ. सुरेश सी त्यागी, यूएसए से डॉ. देवाशीष बगेची, डॉ. के राय चौधरी, डॉ. सीबा चौधरी, यूएस से डॉ. रामेश्वर नाथ चौधरी, डॉ. समेन्द्र नाथ, डॉ बानिक, यूके से डॉ. परिजाल डे व संगीता डे के अलावा देश के नामी गिरामी चिकित्सक शामिल हो रहे हैं। इसके अलावा पद्मश्री डॉ. कमलाकर त्रिपाठी, बीएचयू के डायरेक्टर प्रो. डॉ. एनएस संखवार, एम्स के डायरेक्टर प्रो. डॉ. अजय सिंह भी शामिल होने के लिए पहुंच रहे हैं। सभी अयोध्या दर्शन को भी जाएंगे। पहले दिन कांफ्रेंस में डॉ. नर सिंह वर्मा, डॉ. दिनेश व डॉ. अनुज महेश्वरी समेत नामी–गिरामी चिकित्सकों ने क्रोनोमेडिसिन के बारे में बताया। उन्होंने चिकित्सकों से मरीजों को दिनचर्या ठीक करने के बारे में बताने को कहा है।

एनसीएल में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा 40वां स्थापना दिवस

कंपनी और परिधीय समुदाय के साथद्द साथ विकास को कटिबद्ध है एनसीएल-साईराम

सोनभद्र(एजेंसी)। गुरुवार को भारत सरकार की मिनीरत्न कंपनी नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एनसीएल) के मुख्यालय सहित सभी परियोजनाओं एवं इकाइयों में 40वां स्थापना दिवस समारोह हर्ष के साथ मनाया जा रहा है। सुबह में मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान खनिक मूर्ति पर माल्यार्पण व श्रम शहीदों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि देने के साथ 40वें स्थापना दिवस का शुभारंभ हुआ। एनसीएल सीएमडी, बी. साईराम ने बतौर मुख्य अतिथि ध्वजारोहण किया।

पंजरेह भवन प्रांगण में आयोजित समारोह के दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनसीएल के भूतपूर्व सीएमडी क्रमशः ए. के. दास, एस. वी. चाओजी, टी. के. नाग, बी. आर. रेड्डी, पी. के. सिन्हा, एनसीएल के निदेशक (कार्मिक) मनीष कुमार, निदेशक (वित्त) रजनीश नारायण, निदेशक (तकनीकीध संचालन) जितेन्द्र मलिक, निदेशक (तकनीकीध्परियोजना एवं योजना) सुनील प्रसाद सिंह एवं मुख्य सतर्कता अधिकारी, एनसीएल पंकज कुमार, श्रमिक संघ के जेसीसी सदस्य – सीएमएस से अजय कुमार, बीएमएस से श्यामधर दुबे, एचएमएस से अशोक कुमार पांडे, सीएमओएआई महासचिव सर्वेश सिंह उपस्थित रहे। साथ ही मुख्यालय के महाप्रबंधकगण एवं विभागाध्यक्ष व अन्य अधिकारी व कर्मचारीगण भी उपस्थित रहे।

उन्होंने टीम एनसीएल से आपसी सामंजस्य के साथ आगे बढ़ने का आह्वान किया। विभागीय क्षमता उपयोगिता में उत्कृष्टता हासिल करने हेतु एनसीएल के खनिकों के साथ कंपनी के इमेज निर्माण में श्रमिक एवं अधिकारी संघ प्रतिनिधियों की भूमिका को सराहा। अपने संबोधन में सीएमडी एनसीएल ने देश की ऊर्जा संरक्षा को बनाए रखने में योगदान देने के लिए परिधीय समुदाय द्वारा किए जा रहे त्याग को अप्रतिम बताया व साथ ही यह भरोसा दिया कि कंपनी और समुदाय के साथदृसाथ विकास की भावना को लेकर एनसीएल प्रबंधन कटिबद्ध है। गौरतलब है कि 40वें स्थापना दिवस के अवसर पर केंद्रीय कार्यक्रम सायंकाल को सिंगरौली स्टेडियम में आयोजित किया जाएगा जिसमें विशिष्ट क्षेत्रों व उत्कृष्ट एनसीएल कर्मियों को सम्मानित किया जाएगा। तत्पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जाएगा।

माड़ा थाना क्षेत्र में रेता एवं शराब का अवैध कारोबार पकड़ा जोर

सिंगरौलीध्सोनभद्र।(एजेंसी) माड़ा थाना क्षेत्र में रेत, शराब एवं गांजा का अवैध कारोबार चरम सीमा पर पहुंचा है। आरोप है कि पुलिस की मिलीभगत से यह कारोबार काफी फल–फू ल रहा है। थाना प्रभारी उपनिरीक्षक अवैध कारोबार पर नियंत्रण पाने पूरी तरह से विफल साबित हुये हैं। इनके कार्यकाल में अवैध के कारोबारी व चोर उच्चकों के बल्ले–बल्ले हैं।

दरअसल माड़ा थाना निरीक्षक विहीन है। करीब आठ महीने से थाने की कमान उपनिरीक्षक के हवाले है।

ई0वी0एम0 व वी0वी0 पैट गोदाम का डीएम ने किया मासिक निरीक्षण

सोनभद्र(एजेंसी)। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट परिसर में स्थापित ई0वी0एम0 व वी0वी0 पैट गोदाम का मासिक निरीक्षण किये, इस दौरान गोदाम की सुरक्षा के साथ ही आवश्यक व्यवस्था का जायजा लिया गया। मुख्य निर्वाचन अधिकारी के निर्देशों के क्रम में जिलाधिकारी द्वारा मासिक व त्रैमासिक निरीक्षण किया जाता है, जिसकी रिपोर्ट भी मुख्य निर्वाचन अधिकारी को भेजा जाता है। निरीक्षण के दौरान गोदाम में लगे सी0सी0टी0वी0 के माध्यम से बारी–बारी से ई0वी0एम0 व वी0वी0 पैट के कक्षों की स्थिति का जायजा लिया गया और सुरक्षा व्यवस्था में लगे सुरक्षा बलों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हुए सम्बन्धित को आवश्यक दिशा–निर्देश भी दियें।

पशु तस्करी करने वाले दो गिरफ्तार वाहन सीज

सोनभद्र(एजेंसी)। राबर्ट्सगंज पुलिस द्वारा 11 अदद (06 गाय,03 बछिया,02बछड़ा) 1अदद मैजिक मय 02 नफर अभियुक्त को किया गिरफ्तार पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा के निर्देशन मे अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) कालू सिंह तथा क्षेत्राधिकारी नगर डॉ चारू द्विवेदी के आदेश के क्रम मे गुरुवार को उ0नि0 बृजेश कुमार मय हमराह हे0का0 शिवकुमार यादव, हे0का0 अरविन्द कुमार का0 अनुज कुमार मय सरकारी वाहन सं0 न्च् 64ळ 0309 ग्राम सुकृत में मामूर थे कि मुखबिर खास ने आकर सूचना दिया कि साहब एक मैजिक जिसका नम्बर न्च् 64 ।ज् 6587 है जिसमें पशु तस्कर कुछ पशुओं को घोरावल से लादकर आ रहे है, और चौनपुर जायेगे, थोडी ही देर में पहुचने वाले है, यदि जल्दी किया जाए तो पकडे जा सकते है, मुखबिर की इस सूचना पर विशवास करके मुखबिरी सूचना से हमराहीगणों को अवगत कराकर मय हमराह मय मुखबिर को सुकृत बैरियरध् स्पीड ब्रेकर के पास पहुँचा, वाहन को किनारे लगाकर वाहनो की चेकिंग करने लगे, कि कुछ देर बाद ही एक मैजिक जिसका नं0 न्च् 64 ।ज् 6587आती दिखाई दी कि नजदीक आने पर रुकने का इशारा किया गया तो भागना चाहा, कि एक बारगी दबिश देकर हिकमत अमली से ब्रेकर के पास पकड लिया गया। वाहन को किनारे कराकर गाडी चला रहे व्यक्ति से नाम पता पूछते हुए भागने का कारण पूछा गया तो अपना नाम 1.महेश कुमार पुत्र स्व0 अशोक कुमार नि0 बृन्दावन थाना नौगढ़ जनपद चन्दौली उर्म करीब 19 वर्ष ,2. रिशु यादव उर्फ विकाश यादव पुत्र स्व0 योगेन्द्र यादव नि0 सतोहा नकवई थाना नौगढ़ जनपद चन्दौली उर्म करीब 20वर्ष बताया तथा भागने के बारे में बता रहा है कि साहब इस मैजिक मे 11अदद 06 गाय,03 बछिया,02बछड़ा लिए है जिसको बेचने के लिए अहिरौरा मिर्जापुर ले जा रहे है।वही कोतवाली पुलिस ने गिरफ्तारीध्बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0–912ध्2024 धारा 11ध10 पशुओं के प्रति क्रूरता का निवारण अधिनियम पंजीकृत कर अग्रिम करवाई में जुटी।

अक्टूबर में भारत का सेवा निर्यात 22.3 प्रतिशत बढकर 34.3 अरब डालर हो गया : आरबीआई

नई दिल्ली ,30 नवंबर। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा जारी लेटेस्ट आंकड़ों के अनुसार, भारत के सेवा निर्यात में लगातार दूसरे महीने अक्टूबर में बढ़ोतरी दर्ज हुई है। अक्टूबर में देश का सेवा निर्यात सालाना आधार पर 22.3 प्रतिशत बढकर 34.3 अरब डॉलर हो गया।

इससे पहले अगस्त में देश का सेवा निर्यात जुलाई के 30.58 अरब डॉलर से घटकर 30.34 अरब डॉलर पर आ गया था। जो कि इससे अगले महीने सितंबर में बढकर 32.57 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया था।

निर्यात के साथ–साथ अक्टूबर में देश के आयात में भी वृद्धि दर्ज की गई है, जो कि सालाना आधार पर 27.9 प्रतिशत बढकर अब 17.21 अरब डॉलर हो गया है। इससे पहले सितंबर में देश का सेवा आयात 16.50 अरब डॉलर रहा था।

भारत का सेवा निर्यात वित्त वर्ष 2024 में 339.62 अरब डॉलर रहा, जो पिछले वित्त वर्ष में 325.33 अरब डॉलर था।

पिछले दिनों आई ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) की एक रिपोर्ट के मुताबिक भारत का सेवा निर्यात 2030 तक वस्तु निर्यात से आगे निकल जाएगा। जीटीआरआई की रिपोर्ट में कहा गया था कि वित्त वर्ष 2030 तक सेवा निर्यात 618.21 अरब डॉलर पहुंचने का अनुमान है, जो 613.04 अरब डॉलर के माल निर्यात से अधिक होगा।

इस रिपोर्ट में कहा गया था कि वित्त वर्ष 2019 और वित्त वर्ष 2024 के बीच, 5 वर्षों में सेवा निर्यात 10.5 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से बढ़ा, जो कि माल निर्यात के 5.8 प्रतिशत सीएजीआर से लगभग दोगुना है। देश का सेवा क्षेत्र मुख्य रूप से आईटी और सॉफ्टवेयर द्वारा संचालित है, इसके अलावा यह क्षेत्र अन्य व्यावसायिक सेवाओं (ओबीएस) द्वारा संचालित है।

जीटीआरआई की इस रिपोर्ट में जानकारी दी गई थी कि 'दूरसंचार, कंप्यूटर और सूचना सेवाओं' के तहत सॉफ्टवेयर और आईटी सेवाओं ने वित्त वर्ष 2024 में भारत के कुल सेवा निर्यात में 190.7 बिलियन डॉलर या 56.2 प्रतिशत का योगदान दिया।

इसी के साथ एआई, इंटरनेट ऑफ थिंग्स को लेकर वैश्विक स्तर पर भारत की आईटी विशेषज्ञता को लेकर मांग में बढ़ोतरी को लेकर महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

अप्रैल-अक्टूबर तक राजकोषीय घाटा चालू वित्त वर्ष के लक्ष्य का 46.5 प्रतिशत रहा

नई दिल्ली ,30 नवंबर। हाल ही में जारी आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष के पहले सात महीनों (अप्रैल–अक्टूबर) के अंत में केंद्र का राजकोषीय घाटा पूरे साल के लक्ष्य का 46.5 प्रतिशत रहा।यह सरकार की मजबूत आर्थिक वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। सरकार का लक्ष्य चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के 4.9 प्रतिशत पर लाना है, जो 2023–24 में 5.6 प्रतिशत था।

महालेखा नियंत्रक (सीजीए) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, कुल मिलाकर राजकोषीय घाटा सरकार के व्यय और राजस्व के बीच का अंतर इस साल अप्रैल–अक्टूबर के दौरान 7,50,824 करोड़ रुपये था।2024–25 के पहले सात महीनों के लिए केंद्र सरकार के राजस्व–व्यय के आंकड़ों से पता चला है कि शुद्ध कर राजस्व लगभग 13 लाख करोड़ रुपये और चालू वित्त वर्ष के बजट अनुमान का 50.5 प्रतिशत था।

सरकार का लक्ष्य चालू वित्त वर्ष के दौरान राजकोषीय घाटे को 16.13 लाख करोड़ रुपये पर सीमित रखना है।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) द्वारा जारी लेटेस्ट आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष के दौरान 1 अप्रैल से 10 नवंबर तक भारत का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह, जिसमें कॉर्पोरेट कर और व्यक्तिगत आयकर शामिल हैं, 15.4 प्रतिशत बढकर 12.1 लाख करोड़ रुपये हो गया।2023–24 के केंद्रीय बजट में प्रत्यक्ष संग्रह का लक्ष्य 18.23 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था और बाद में संशोधित अनुमान (आरई) में इसे बढ़ाकर 19.45 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया।सीबीडीटी ने कहा कि रिफंड के बाद अनंतिम प्रत्यक्ष कर संग्रह बजट अनुमान से 7.40 प्रतिशत और संशोधित अनुमान से 0.67 प्रतिशत अधिक रहा है।

इसी तरह, आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि के कारण जीएसटी संग्रह में भी शानदार वृद्धि हुई है।

कर संग्रह में उछाल से सरकार के खजाने में अधिक धनराशि आती है, जिससे सरकार को आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के निवेश में मदद मिलती है।

इससे राजकोषीय घाटे को नियंत्रित रखने और अर्थव्यवस्था के आर्थिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने में भी मदद मिलती है।

कम राजकोषीय घाटे का मतलब है कि सरकार को कम उधार लेना पड़ता है, जिससे बैंक के पास बड़ी कंपनियों के लिए उधार लेने और निवेश करने के लिए अधिक पैसा बचता है।

इससे आर्थिक विकास दर बढ़ती है और अधिक नौकरियां पैदा होती हैं। कम राजकोषीय घाटा मुद्रास्फीति दर को भी नियंत्रित रखता है, जिससे अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलती है।

अर्थव्यवस्था के प्रमुख सेक्टरों की विकास दर अक्टूबर में रही 3.1 प्रतिशत

नई दिल्ली ,30 नवंबर। भारत के प्रमुख सेक्टरों के उद्योगों की विकास दर अक्टूबर में 3.1 प्रतिशत रही है। यह जानकारी वाणिज्य मंत्रालय द्वारा शुक्रवार को दी गई।

प्रमुख उद्योगों में कोयला, बिजली, स्टील और सीमेंट को शामिल किया जाता है।

सितंबर की 2 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले अक्टूबर में प्रमुख उद्योगों की विकास में उछाल दर्ज किया गया है।आठ प्रमुख उद्योगों के सूचकांक (आईसीआई) की संचयी वृद्धि दर चालू वित्त वर्ष के अप्रैल से अक्टूबर के बीच पिछले वर्ष की समान अवधि के मुकाबले 4.1 प्रतिशत रही है।

अक्टूबर 2023 की तुलना में अक्टूबर 2024 में कोयला उत्पादन में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

अक्टूबर 2023 की तुलना में अक्टूबर 2024 में स्टील उत्पादन में 4.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि इसी अवधि में सीमेंट उत्पादन में 3.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसकी वजह बड़े इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स का बनना और कंस्ट्रक्शन गतिविधियों में उछाल आना है।

उर्वरक उत्पादन में भी पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में इस वर्ष अक्टूबर में 0.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

मुख्य उद्योगों के सूचकांक में 19.85 प्रतिशत भार वाले बिजली उत्पादन में अक्टूबर 2023 की तुलना में अक्टूबर 2024 में 0.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

सूचकांक में 28.04 प्रतिशत भार रखने वाले पेट्रोलियम रिफाइनरी उत्पादन में पिछले वर्ष के इसी महीने की तुलना में अक्टूबर, 2024 में 5.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जो परिवहन क्षेत्र में आर्थिक गतिविधि के उच्च स्तर को दर्शाता है।

अक्टूबर के दौरान कच्चे तेल के उत्पादन में पिछले साल के इसी महीने के मुकाबले 4.8 प्रतिशत की गिरावट आई। वहीं, प्राकृतिक गैस उत्पादन में भी पिछले साल के अक्टूबर के मुकाबले 1.2 प्रतिशत की गिरावट आई।

जुलाई 2024 के लिए आईसीआई की अंतिम वृद्धि दर 6.3 प्रतिशत रही है।आठ प्रमुख उद्योगों की औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आईआईपी) में हिस्सेदारी 40 प्रतिशत से अधिक है और इस वजह से यह समग्र औद्योगिक विकास का संकेत देता है।

उत्पादन घटने से छोटी इलायची एक माह में 500 रुपए किलो उछली

जयपुर ,30 नवंबर। छोटी इलायची की घरेलू फसल कमजोर होने तथा निर्यात में निरंतर बढ़ोतरी के चलते इसकी कीमतों में जोरदार मजबूती दर्ज की गई है। वर्तमान में स्थानीय किराना मेवा बाजार में गायत्री ब्रांड छोटी इलायची 7 एमएम के भाव 2750 रुपए प्रति किलो पहुंच गए हैं। ज्ञात हो करीब एक माह पहले इसके भाव 2250 रुपए प्रति किलो के आसपास चल रहे थे।

व्यापारियों के मुताबकि इस साल छोटी इलायची के उत्पादन में भारी कमी होने के समाचार मिल रहे हैं। नई फसल को आए चार महीने निकल चुके हैं, लेकिन सप्ताह के किसी भी ऑक्शन सेंटर पर इलायची की आवक का दबाव नहीं बन पा रहा है। उधार ग्वाटेमाला में ऊंचे भाव होने से भारतीय इलायची की डिमांड लगातार बनी हुई है। वायदा बाजार में भी छोटी इलायची के भाव मजबूत बोले जा रहे हैं।

जानकार बताते हैं कि पिछले सप्ताह वायदा में छोटी इलायची का 2400 रुपए प्रति किलो में व्यापार हुआ था, जो कि अब बढकर 2800 रुपए प्रति किलो हो गया है। दूसरी ओर सट्टे में खरीद किए गए सौदों में विवाद भी देखा जा रहा है। इस बीच बड़ी इलायची भी सट्टेबाजी में 50 रुपए उछलकर 1740 रुपए प्रति किलो पर पहुंच गई है। इन भावों पर भी बिकवाली नहीं के बराबर है।

आपको बता दें फिलहाल दोनों प्रकार की इलायची में तेजी का माहौल बना हुआ है। नीलामी केन्द्रों पर छोटी इलायची की आपूर्ति घटने की खबरें लगातार मिल रही हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार बड़ी इलायची में भूटान एवं नेपाल से आयात सौदे तेजी से होने लगे हैं। क्योंकि यहां सटोरियों 1770 रुपए प्रति किलो में माल पकडने लगे हैं।

कोच के तौर पर गौतम गंभीर का इतनी जल्दी आकलन करना गलत होगा: अजय जेडजा

मध्यक्रम के पूर्व बल्लेबाज अजय जडेजा ने न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में मिली 0–3

की हार के बाद आलोचना का सामना कर रहे राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर का बचाव करते हुए कहा है कि इतने कम समय में किसी के प्रदर्शन का आकलन करना अनुचित है।

नयी दिल्ली । भारत के मध्यक्रम के पूर्व बल्लेबाज अजय जडेजा ने न्यूजीलैंड के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला में मिली 0–3 की हार के बाद आलोचना का सामना कर रहे राष्ट्रीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर का बचाव करते हुए कहा कि इतने कम समय में किसी के प्रदर्शन का आकलन करना अनुचित है। भारत के 2011 विश्व कप खिताब जीत के नायकों में शामिल गंभीर ने जुलाई में राहुल द्रविड़ का कार्यकाल समाप्त होने के बाद भारतीय टीम की कमान संभाली थी। उन्होंने अपने कार्यकाल का आगाज श्रीलंका के खिलाफ टी20 श्रृंखला में जीत के साथ शानदार तरीके से किया था लेकिन इसके बाद टीम को उस दौरे पर एकदिवसीय श्रृंखला में हार का सामना करना पड़ा।सके बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ उसे शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। जडेला ने 'फिक्की टर्फ' स्पर्धा के इतर 'पीटीआई–वीडियो' से कहा, ''मुझे लगता है कि आप उसके साथ अनुचित व्यवहार कर रहे हैं। किसी के प्रदर्शन का आकलन के लिए यह काफी कम समय है। हमें इस समय उनका मूल्यांकन करने की जगह उनका लुत्फ उठाना चाहिये।''न्यूजीलैंड के खिलाफ खराब प्रदर्शन के बाद पर्थ में बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के पहले टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत की 295 रन की बड़ी जीत टीम के लिए मनोबल बढ़ाने वाली रही है और जडेजा का मानना है कि गंभीर को उनकी नियुक्ति के छह महीने के भीतर नहीं आंका जाना चाहिए। भारत के लिए 196 एकदिवसीय में 5000 से ज्यादा रन बनाने वाले जडेजा ने कहा, ''हर किसी के साथ कुछ चरण (समय का उतार–चढाव) आते हैं, कभी आप जीतते हैं और कभी आप हारते हैं। इसलिए मैं उस दिशा में नहीं जाऊंगा और छह महीने में उनका (गंभीर का) मूल्यांकन करना शुरू नहीं करूंगा।''उन्होंने कहा, ''आप जानते थे कि आप उनसे क्या उम्मीद रखते है और आपको क्या मिल रहा था। वह बहुत स्पष्ट व्यक्ति हैं और उन्होंने अपने पूरे जीवन में अपना दृष्टिकोण बिलकुल साफ रखा है। इसलिए, अब आप जो देख रहे हैं वह वही है जो हर कोई उनसे करने की उम्मीद करता है।'' जडेजा ने कहा कि नियमित टेस्ट कप्तान रोहित शर्मा की छह दिसंबर से एडिलेड में होने वाले दूसरे टेस्ट के लिए वापसी से भारत का आत्मविश्वास बढ़ेगा। उन्होंने कहा, '' उनके (रोहित शर्मा) टीम में वापस आने से निश्चित रूप से भारत का आत्मविश्वास बढ़ेगा। वह एक नेतृत्वकर्ता हैं। जब टीम मुश्किल में थी तब उन्होंने खराब प्रदर्शन की जिम्मेदारी ली और अब जब टीम जीत रही थी तब भी उन्होंने अपनी भूमिका को अच्छे से निभाई।

आखिर मान गया पाकिस्तान, हाइब्रिड माडल से हो सकती है चौंपियंस ट्राफी, जानें पूरा अपडेट

दरअसल, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार हो गया है। लेकिन इसकी आधिकारिक घोषणा अभी बाकी है। पीसीबी चौंपियंस ट्रॉफी को लेकर यूएई से बात करेगा। टीम इंडिया के मुकाबले न्यूट्रल वेन्यू पर होने हैं। लिहाजा भारत अपने मैच यूएई में खेल सकता है।चौंपियंस ट्रॉफी 2025 को लेकर बड़ा अपडेट सामने आया है। दरअसल, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार हो गया है। लेकिन इसकी आधिकारिक घोषणा अभी बाकी है। पीसीबी चौंपियंस ट्रॉफी को लेकर यूएई से बात करेगा। टीम इंडिया के मुकाबले न्यूट्रल वेन्यू पर होने हैं। लिहाजा भारत अपने मैच यूएई में खेल सकता है। चौंपियंस ट्रॉफी को लेकर फाइनल फैसले की जानकारी शनिवार रात या रविवार सुबह तक आधिकारिक रूप से आ सकती है। दरअसल, चौंपियंस ट्रॉफी को लेकर आईसीसी ने शुक्रवार को एक मीटिंग रखी थी। इसमें भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और पाकिस्तान बोर्ड के अधिकारी शामिल हुए। लेकिन इस मीटिंग में कुछ फैसला नहीं हुआ तो इसे आगे बढ़ा दिया गया। सूत्रों के मुताबिक पाकिस्तान अब हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार है। लिहाजा टीम इंडिया अपने मैच यूएई में खेल सकते हैं। लेकिन इसकी आधिकारिक घोषणा अभी बाकी है। पीसीबी और यूएई बोर्ड के बीच चौंपियंस ट्रॉफी के वेन्यू को लेकर बातचीत चल रही है। अगर सबकुछ ठीक रहा तो टीम इंडिया अपने मैच दुबई में खेल सकती है। इसको लेकर आईसीसी शनिवार रात या रविवार सुबह जानकारी दे सकती है। पासीबी इससे पहले हाइब्रिड मॉडल के लिए तैयार नहीं थी। वह चाहती थी कि टीम इंडिया टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान आए। लेकिन भारतीय बोर्ड ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए साफ इंकार कर दिया।

पर्थ के बाद आस्ट्रेलियाई गेंदबाज अपनी गेंदबाजी योजनाओं में बदलाव कर सकते हैं: Boland

अंतिम एकादश में शामिल होने के लिए तैयार स्कश्ट बोलैंड ने खुलासा किया कि पर्थ में हार के बाद एडिलेड में होने वाले दिन रात्रि टेस्ट के लिए यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल के खिलाफ अश्स्ट्रेलिया की गेंदबाजी योजनाओं में कुछ बदलाव होंगे। हेजलवुड को मांसपेशियों में खिंचाव के कारण बाहर कर दिया गया है।

कैनबरा । चोटिल जोश हेजलवुड की जगह अंतिम एकादश में शामिल होने के लिए तैयार स्कॉट बोलैंड ने खुलासा किया कि पर्थ में हार के बाद एडिलेड में होने वाले दिन रात्रि टेस्ट के लिए यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया की गेंदबाजी योजनाओं में कुछ बदलाव होंगे। हेजलवुड को मांसपेशियों में खिंचाव के कारण बाहर कर दिया गया है और 2021 में अपने टेस्ट पदार्पण के बाद से 10 टेस्ट खेलने वाले 35 वर्षीय बोलैंड भारतीय बल्लेबाजी लाइन–अप के खिलाफ मुश्किल लेंथ पर गेंदबाजी करने के लिए दावेदार हैं। भारत और ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री एकादश के बीच पहले दिन का खेल बारिश की भेंट चढ़ गया। इसके बाद बोलैंड ने पत्रकारों से कहा, ''हमने बतौर टीम सभी भारतीय बल्लेबाजों के लिए अपनी योजनाओं के बारे में बात की है। मैं आपको वे बातें नहीं बताऊंगा लेकिन हमारे पास काफी अच्छी योजनायें है। पर्थ में खिलाड़ियों को फिर से देखने के बाद इसमें थोड़ा बदलाव कर सकते हैं।

''जायसवाल (161) और राहुल (77) ने पहले विकेट के लिए ऑस्ट्रेलियाई सरजमीं पर रिकॉर्ड 201 रन की साझेदारी की जिसके बाद विराट कोहली ने अपना 30वां टेस्ट शतक बनाया।

बार्डर-गावस्कर ट्रश्फी के बीच विराट कोहली के बैग से निकला खतरनाक सामान

विराट कोहली ने पर्थ टेस्ट में शानदार शतक लगाया था। वहीं अब सीरीज का दूसरा टेस्ट 6 दिसंबर से एडिलेड ओवल में खेला जाएगा। लेकिन उससे पहले सोशल मीडिया पर एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें विराट कोहली के बैग से कुल्हाड़ी और तलवार निकलती हुई दिख रही है।

मौजूदा समय में टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर है। वहीं विराट कोहली भी टीम इंडिया का अहम हिस्सा हैं। उन्होंने पर्थ टेस्ट में शानदार शतक लगाया था। वहीं अब सीरीज का दूसरा टेस्ट 6 दिसंबर से एडिलेड ओवल में खेला जाएगा। लेकिन उससे पहले सोशल मीडिया पर एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें विराट कोहली के बैग से कुल्हाड़ी और तलवार निकलती हुई दिख रही है। बता दें कि, इसे देखकर हैरान मत हाइए, विराट कोहली के बैग से जो तलवार और कुल्हाड़ी निकली वह नकली है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, कोहली के बैग से कुल्हाड़ी और तलार निकलने वाली वीडियो कोई प्रमोशनल वीडिया है जिसका फिलहाल एक ही हिस्सा रिलीज हुआ है। वीडियो में एक शख्स विराट कोहली से पूछना है कि आपके बैग में क्या है? इसके बाद कोहली अपने बैग सबसे पहले एक कुल्हाड़ी, फिर बेसबॉल बैट, कुछ तलवारें और सुरक्षा कवच निकलते हैं।

पर्थ टेस्ट में कोहली ने 8 चौके और 2 छक्कों की मदद से नाबाद रहते हुए 100 रन बनाए थे। पहली पारी में कोहली 05 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट गए थे। हालांकि, वह दोनों ही पारियों में अच्छी लय में दिखाई दिए थे। अब फैंस चाहेंगे कि कोहली पूरी सीरीज में अपनी फॉर्म बरकरार रखें।

विजडम इण्डिया R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608 हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

sheelshukla100@gmail.com

सोनभद्र में वाहन फिटनेस सेंटर का निर्माण कार्य शुरू, आठ तरह के टेस्ट से गुजरेंगे वाहन

सोनभद्र(एजेंसी)। जनपद में पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल पर एक वाहन फिटनेस सेंटर बनकर तैयार हो रहा है। जल्द ही वाहनों के फिटनेस टेस्ट के लिए अब डिजिटल और ऑटो मेटिक मशीनों की टेस्टिंग से गुजरना पड़ेगा। फिटनेस से जुड़े सारे काम अब ऑटो मेटिक तरीके से होंगे। इसके लिए एआरटीओ कार्यालय से करीब 15 किमी की दूरी पर वाराणसी–शक्तिनगर मार्ग पर पसही में ऑटोमेटिक व्हीकल फिटनेस सेंटर तैयार हो रहा है। इसकी इमारत तैयार हो गई है। हालांकि अभी इसमें कई तरह के तकनीकी और इलेक्ट्रिक काम होने हैं। जिसके बाद इसका संचालन दिसम्बर तक कर दिया जाएगा।

परिवहन विभाग के एआरटीओ प्रशासन धनवीर यादव ने बताया कि दिसंबर माह से फिटनेस सेंटर से ही वाहनों का फिटनेस होगा। यह स्वचालित उपकरणों के माध्यम से वाहनों का फिटनेस परीक्षण की प्रक्रिया होगा। डिजिटल प्रक्रिया से वाहनों की जांच होगी। प्रमाण पत्र ऑनलाइन होगा। ऑटोमेटिक व्हीकल फिटनेस सेंटर में जिले के सभी वाहनों की जाँच डिजिटल प्रक्रिया से की जाएगी।शासन की गाइड लाइन के अनुसार टेस्टिंग का काम होगा।मशीनों के जरिए आठ प्रकार की जांचें हो सकेंगी। मशीनों के जरिये जांच होने पर काम में पारदर्शिता तो आएगी साथ ही वाहन खराबी दूर की जा सकेगी।फिटनेस सेंटर में टायरों की जांच, लाइटिंग की व्यवस्था, पहियों की गति, इंजन की आवाज, सीटों की जांच, प्रेशर हार्न, हेड लाइट से लेकर इंडिकेटर, बैक लाइट समेत अन्य कई प्रकार की जांचें हो सकेंगी। इसके आधार पर प्रणाम पत्र जारी किए जाएंगे। दिसंबर से जिले में भी वाहन स्वामियों को ये सुविधा मिल सकेगी। एआरटीओ ने बताया कि परिवहन विभाग में अभी तक वाहनों की मैनुअल जांच होती थी। इससे विभाग पर आरोप लगते थे। वाहनों में तकनीकी दिक्कतों के कारण दुर्घटनाएं भी हो रही थी। दिशा निर्देशों में कहा गया है कि यदि कोई वाहन परीक्षण में विफल होता है, तो पंजीकृत मालिक या अधिकृत व्यक्ति पुनरूपरीक्षण के लिए उचित शुल्क जमा कराकर वाहन की फिर से जांच का अनुरोध कर सकता है. यदि इसके बाद भी वाहन फिटनेस जांच में फेल होता है तो संबंधित वाहन के जीवन चक्र (ईएलवी) को समाप्त घोषित कर दिया जाएगा।

गैस सिलेंडर से झुलसी बालिका, इलाज के दौरान मौत

बीजपुर / सोनभद्र(एजेंसी)। स्थानीय थाना क्षेत्र अंतर्गत सेवकामोड़ पर गुरुवार की सांय गैस सिलेंडर पर खाना बनाते समय एक बालिका बुरी तरह से जल गई जिसकी इलाज के दौरान शुक्रवार की सुबह मृत्यु हो गई। जानकारी के अनुसार अंशिका शर्मा पुत्री संतोष शर्मा निवासी सेवकामोड़ ग्राम पंचायत जरहा 13 वर्ष गुरुवार की सायं लगभग 7 बजे खाना बनाने के लिए गैस जलाने गई थी कि अचानक उसके कपड़े में आग लग गई आनन–फानन में आग पर काबू पाकर परिजन इलाज के लिए बैढ़न ट्रामा सेन्टर ले गए जहाँ पर प्राथमिक इलाज के दौरान अंशिका गंभीर हालत देखते हुए चिकित्सक ने वाराणसी के लिए रेफर कर दिया। परिजन तत्काल उसे वाराणसी लेकर पहुंचे जहां समुचित इलाज के दौरान घायल अंशिका की मृत्यु हो गई मौत की खबर सुनते ही परिजनों में कोहराम मच गया। इधर अंशिका की असामयिक मृतु की खबर पर शिवम शंकल्प विद्यालय में शोक की लहर दौड़ गयी।बताया गया कि बालिका उक्त विद्यालय में कक्षा 6 की छात्रा थी।इस बाबत थाना बीजपुर निरीक्षक अपराध आर के सिंह ने कहा कि हमारे पास अभी तक कोई सूचना इस तरह की नही आयी है।

उत्कृष्ट कार्य करने महिलाओं को डीएम द्वारा प्रशस्ति-पत्र देकर किया गया सम्मानित

सोनभद्र(एजेंसी)। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट के जनसुनवाई कक्ष में मिशन शक्ति अभियान–5.0 के तहत महिलाओं द्वारा सामाजिक व अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किये, शिक्षा, खेलकूद, उद्यम, समाजसेवा, चिकित्सा व कला–संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालीं 10 महिलाओं को मिशन शक्ति फेज 5.0 के अंतर्गत नारी शक्ति सम्मान से महिलाओं को अंग वस्त्र और प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित कर प्रोत्साहित किया गया, सम्मानित होने वाली महिलाओं में सुमंगला को खेल के क्षेत्र में, अनीता गुप्ता को योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में, मीनाक्षी को स्वास्थ्य के क्षेत्र में, प्रतिभा कनोड़िया को सामाजिक कार्य क्षेत्र में, रंजना अग्रवाल को शिक्ष एवं सामाजिक कार्य के क्षेत्र में, अंकिता केजरीवाल को सामाजिक कार्य के क्षेत्र में, चित्रा जालान को सामाजिक कार्य क्षेत्र में, डॉ0 अनुपमा सिंह को चिकित्सा के क्षेत्र में, सरिता श्रीवास्तव को शिक्षा एवं सुरक्षा के क्षेत्र में, संगीता श्रीवास्तव को महिला उत्पीड़न के प्रति जागरूक करने एवं सुरक्षा के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने पर इन महिलाओं सम्मानित किया गया है, इस मौके पर अपर जिलाधिकारी नमामीगंगे राहुल यादव, अपर पुलिस अधीक्षक कालू सिंह उपस्थित रहें। इस दौरान सम्मानित महिलाओं ने अपने अनुभव साझा किए, उन्होंने कहा कि महिलाओं का समाज में वर्चस्व बढ़ रहा है, वह चाहे प्रशासनिक हो, शिक्षा का क्षेत्र हो या चिकित्सा, कला, खेल–कूद, संस्कृति, उद्यम हो या नवाचार। समाज में महिलाओं के सामाजिक योगदान की स्वीकार्यता बढ़ी है। जिलाधिकारी ने कहा कि नारी शक्ति ही सभ्यता की पहचान है और नारी सशक्तिकरण हम सबका दायित्व है। मौके पर अपर जिला सूचना अधिकारी विनय कुमार सिंह, जिला बाल संरक्षण इकाई से ओ आर डब्ल्यू शेषमणि दुबे महिला थाना प्रभारी सविता सरोज, दीपिका सिंह एवं संरक्षण अधिकारी रोमी पाठक सहित अन्य महिलाएं उपस्थित रहीं।

पेशाब कांड के एक और आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

शक्तिनगर।(एजेंसी) शर्मसार करने वाली वारदात मामले में बता दें कि बीते 26 सितंबर की रात लगभग 8 बजे शक्तिनगर थाना क्षेत्र के खड़िया बैरियर के समीप हुए पेशाब कांड का पांचवा आरोपी प्रीतम उर्फ अजीत पुत्र रामकेश उर्फ अन्नू निवासी चिल्काडांड को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश करने के बाद जेल रवाना कर दिया।

पीड़ित पवन खरवार के भाई शिवकुमार खरवार ने बीते 2 अक्टूबर को शक्तिनगर थाने की पुलिस को तहरीर देकर पांच नामजद लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। आरोप था की भाई पवन खरवार को उक्त युवकों द्वारा लाठी डंडे से बेरहमी पिटाई के बाद उसके ऊपर पेशाब कर वीडियो भी बनाया था। शक्तिनगर थाना प्रभारी कुमुद शेखर सिंह ने बताया कि अंबेडकर नगर मोड़ के समीप से प्रीतम उर्फ अजीत कहीं जाने के फिराक में था। पुलिस ने तत्काल घेराबंदी कर उक्त युवक को गिरफ्तार कर अग्रिम करवाई में जुटी।

मेडिकल स्टोर पर आई महिला का बैग लेकर युवक हुआ फरार

शक्तिनगर(एजेंसी)। अनपरा थाना अंतर्गत बाजार स्थित एक मेडिकल स्टोर में दवा लेने आई महिला का पैसों से भरा बैग छीनकर एक युवक फरार हो गया। जिसकी पूरी वारदात मेडिकल स्टोर में लगी सीसीटीवी फुटेज में कैद हो गई। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई है।जिसकी पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी शिव प्रताप वर्मा ने बताया कि मोबाइल मीडिया से मामले की जानकारी मिली है।जानकारी पर पता चला की सीदहवा की रहने वाली महिला अनपरा बाजार में एक मेडिकल स्टोर पर आई थी बगल में अपना बैग रखकर दवा ले रही थी कि एक युवक पीछे से आया और बैग लेकर फरार हो गया।

पीएम किसान सम्मान निधि के लिए अनिवार्य हुआ फार्मर रजिस्ट्री

मीरजापुर(एजेंसी)। उप निदेशक विकेश पटेल ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से जानकारी देते हुए बताया है कि जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन द्वारा फार्मर रजिस्ट्री के अन्तर्गत प्रदेश के कृषक विवरण को एग्री स्टैक के अन्तर्गत तैयार कर डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में संकलित किया जायेगा। इस हेतु भारत सरकार द्वारा भूलेख के डेटाबेस को समेकित कर प्रत्येक राजस्व ग्राम के प्रत्येक समान नाम व पिता के नाम वाले कृषकों के ऑनलाइन बकेट तैयार कर राजस्व को ऑनलाइन उपलब्ध कराया जायेगा, जिसका प्रयोग कर राज्य स्तर से फार्मर रजिस्ट्री तैयार किया जाना है। फार्मर रजिस्ट्री हेतु किसान स्वयं से अपने एण्ड्राएड मोबाइल के माध्यम से या नजदीकी जन सेवा केन्द्र से या अपने गांव में आयोजित कैम्प के माध्यम से अपना आधार कार्ड, मोबाइल नम्बर एवं खतौनी की प्रति लेकर आवेदन कर सकते है। आवेदन करने के उपरान्त डाटा को कृषि, पंचायत विभाग, राजस्व कर्मी के सत्यापनोपरान्त गोल्डेन कार्ड कृषक को उपलब्ध कराया जायेगा। फार्मर रजिस्ट्री कार्य को समय से सम्पादित करने हेतु जनपद के राजस्व विभाग से 283 लेखपाल, कृषि विभाग से 56 कर्मचारी, पंचायत विभाग से 742 पंचायत सहायक की ड्यूटी राजस्व ग्रामवार लगायी गयी है। जिसमें तहसील स्तर पर नोडल अधिकारी उप जिलाधिकारी तथा विकास खण्ड स्तर पर खण्ड विकास अधिकारी को नोडल नामित किया गया है। पर्यवेक्षीय दायित्व हेतु सम्बन्धित विकास खण्ड के सहायक विकास अधिकारी (कृषि) व सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) को दिया गया है। जो अपनी देख–रेख में फार्मर रजिस्ट्री का कार्य निर्धारित समय सीमा के अन्दर करायेंगे। साथ ही जिलाधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि फार्मर रजिस्ट्री तैयार कराने हेतु जनपद व तहसील स्तर पर मास्टर ट्रेनर का चयन कर लिया गया है व समस्त तहसील स्तर पर सभी कार्मिकों को प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षित किया जा चुका है। 2 दिसम्बर 2024 से सभी कर्मचारी अपने–अपने नामित राजस्व ग्राम में कैम्प लगाकर किसानों का फार्मर रजिस्ट्री का कार्य उपलब्ध कराये गये ऐप के माध्यम से प्रारम्भ करेंगे। फार्मर रजिस्ट्री के कार्य को सफलता पूर्वक संचालित करने हेतु जनपद स्तर पर कमेटी का गठन किया गया है जिसमें जिलाधिकारी अध्यक्ष तथा मुख्य विकास अधिकारी उपाध्यक्ष, प्रोजेक्ट ऑफिसर तथा उप कृषि निदेशक सदस्य, सचिव नामित किये गये है। जनपद स्तर पर फार्मर रजिस्ट्री तैयार करने हेतु मुख्य विकास अधिकारी द्वारा योजना सम्बन्धी समस्त कार्य अपने मार्गदर्शन में सुनिश्चित करायेंगे। जनपद स्तर पर नोडल अधिकारी के रूप में अपर जिलाधिकारी भू राजस्व मुख्य राजस्व अधिकारी को नामित किया गया है। जो अपनी देख–रेख में एग्री स्टैक फार्मर रजिस्ट्री का कार्य सम्पन्न करायेंगे तथा समय–समय पर समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी को अवगत कराया जायेगा। साथ ही यह भी बताया गया कि एग्री स्टैक फार्मर रजिस्ट्री का प्रथम चरण का कार्य 2 दिसम्बर 2024 से प्रारम्भ होकर 31 दिसम्बर 2024 तक किया जाना है। उन्होंने यह भी बताया कि समस्त खण्ड विकास अधिकारी अपने–अपने विकास खण्ड में डुग्गी के पिटवाकर प्रचार–प्रसार करायें, जिससे अधिक से अधिक मात्रा में किसान भाइयों को जानकारी प्राप्त हो सके और अपना फार्मर रजिस्ट्री करवा सकें। पीएम किसान योजना के अन्तर्गत मिलने वाले किस्त हेतु फार्मर रजिस्ट्री का होना अनिवार्य होगा। अतः यह आवश्यक है कि सभी कृषक भाई और विशेष रूप से पीएम किसान के लाभार्थियों का फार्मर रजिस्ट्री में अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाए। जिसमें किसान का नाम, पिता का नाम, स्वामित्व वाले समस्त गाटा संख्या, सहखातेदार होने की स्थिति में गाटे में किसान का अंश, मोबाइल नम्बर, आधार संख्या, ईकेवाईसी विवरण फार्मर रजिस्ट्री में दर्ज होगा। किसी प्रकार के स्वामित्व हस्तांतरण वरासत, बैनामा इत्यादि होने पर फार्म रजिस्ट्री स्वतः ही अधावधिक हो जायेगी। किसान भाईयों को अवगत कराना है कि सभी किसान भाई अपना आधार, मोबाइल नम्बर व सभी खतौनी लेकर फार्मर रजिस्ट्री का कार्य जन सेवा केन्द्र के माध्यम से या कैम्प में करायें। जिन किसान भाईयों द्वारा फार्मर रजिस्ट्री नहीं कराया जायेगा, उनकी पीएम किसान सम्मान निधि की अगली किस्त का भुगतान देय नहीं होगा।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय जूनियर बालक नेटबाल प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

मीरजापुर(एजेंसी)। खेल निदेशालय उप्र लखनऊ के सौजन्य से एवं क्षेत्रीय खेल कार्यालय, विन्ध्याचल मण्डल, मीरजापुर के तत्वावधान में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय जूनियर बालक नेटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन शुक्रवार को स्पोर्ट्स स्टेडियम, क्षेत्रीय खेल कार्यालय, विन्ध्याचल मण्डल, भिस्कुरी पहाड़ी में आयोजित हुई। प्रतियोगिता का उध्द्घाटन विवेक कुमार मिश्रा सचिव जिला नेटबाल संघ, मीरजापुर एवं अमित कुमार उप क्रीड़ा अधिकारी द्वारा पं दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर शुभारम्भ किया। मुख्य अतिथि को अनवर हुसैन द्वारा बैज लगाकर स्वागत किया गया। उक्त प्रतियोगिता में कुल 8 टीमों ने ने भाग लिया। नेटबॉल प्रतियोगिता का पुल–1 में पहला मैच स्टेडिमय एवं शाहपुर चौसा के मध्य हुआ, जिसमें स्टेडियम भिस्खुरी पहाड़ी 3–2 से विजेता हुई। दूसरा मैच बजरंगबली स्पोर्टिंग क्लब एवं डंगहर स्पोर्टिंग क्लब के मध्य हुआ, जिसमें 11–10 बजरंगबली स्पोर्टिंग क्लब विजेता हुई। पुल–2 में पहला मैच विन्ध्यवासिनी क्लब एवं भिस्खुरी के मध्य हुआ, जिसमें विन्ध्यवासिनी क्लब 7–2 से विजेता हुई। दूसरा मैच रायपुर स्पोर्टिंग क्लब एवं पड़री स्पोर्टिंग क्लब के मध्य हुआ, जिसमें पड़री क्लब 9–6 से विजेता हुई। पहला पहला सेमीफाइनल मैच स्टेडियम एवं बजरंगबली स्पोर्टिंग क्लब के मध्य खेला गया, जिसमें स्टेडियम मीरजापुर 12–7 से विजेता होकर फाइनल में प्रवेश किया। दूसरा सेमीफाइनल मैच विन्ध्यवासिनी स्पोर्टिंग क्लब एवं पड़री क्लब के मध्य हुआ, जिसमें विन्ध्यवासिनी स्पोर्टिंग क्लब 13–08 से विजेता होकर फाइनल में प्रवेश किया। नेटबाल प्रतियोगिता का फाइनल मैच स्टेडियम मीरजापुर एवं विन्ध्यवासिनी स्पोर्टिंग क्लब के मध्य खेल गया, जिसमें स्टेडियम मीरजापुर 12–02 से फाइनल मैच में विजेता हुई। प्रतियोगिता में खेल निदेशालय के निर्देशानुसार विजेता व उप विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार की धनराशि प्रथम–रू–700 एवं द्वितीय स्थान–रू–600 एवं निर्णायक को रू–600 सम्बन्धित के खाते में आरटीजीएस के माध्यम से स्थान्तरित किया जायेगा। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका विवेक कुमार मिश्रा, राजन मौर्या, सतीश विश्वकर्मा, आशिष मौर्या, राघव मिश्रा, शैलेश कुमार, शिवांग मिश्रा, आदर्श मिश्रा आदि लोगो ने निभाई। प्रतियोगिता के अन्त में क्रीड़ा अधिकारी द्वारा खिलाड़ियों को आशिर्वचन देते हुए उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। एवं शनिवार को जिला स्तरीय जूनियर बालक पावरलिफ्टिंग प्रतियोगिता आयोजित होगी।

सरकारी विधालयों में दी जा रही है उत्तम शिक्षा: सतीष शर्मा

ब्लाक स्तरीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम में बोले राज्यमंत्री

बाराबंकी (एजेंसी)। तहसील रामसनेहीघाट में स्थित सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज के सभागार में एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय उन्मुखीकरण एवं सँगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमे समस्त ग्राम प्रधान सहित समस्त परिषदीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापको द्वारा प्रतिभाग किया गया। कार्यक्रम में विकासखंड बनीकोडर १२ न्यायापंचायत के २४ निपुण बच्चो एवं २४ अध्यापको को प्रमाणपत्र और पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप राज्यमंत्री सतीश चंद्र शर्मा उपस्थित रहे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राज्यमंत्री द्वारा बताया गया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की उत्तम व्यवस्था की जा रही है।

सरकार द्वारा प्रदेश के समस्त परिषदीय विद्यालयों का कायाकल्प योजना के अंतर्गत सौंदर्यीकरण किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा बच्चों के शैक्षिक गुणवत्ता में उन्नयन के साथ उनके शारीरिक विकास के लिए मिड डे मील में पौष्टिक भोजन भी दिया जा रहा है।मंत्री द्वारा अपील की गई कि अभिभावक ज्यादा से ज्यादा बच्चो का नामांकन परिषदीय विद्यालयों में कराये और सरकारी योजनाओं को साकार बनाये। सरकार बच्चो को बेहतर शिक्षा और सुविधा देने के लिए कृत संकल्प है इसलिए समाज का सहयोग भी आवश्यक है। राज्यमंत्री द्वारा ग्राम प्रधानों से भी इसमें सहयोग की अपील की गई और उनसे काया कल्प योजना के अंतर्गत विद्यालयों को १६ विन्दुओ से संतृप्त के लिए कहा गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रुप में उपस्थित भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष अवधेश श्रीवास्तव ने कहा कि परिषदीय विद्यालय अब कान्वेंट विद्यालयों से आगे निकल रहे है। यहाँ के बच्चे समाज और राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे रहे है। कार्यक्रम में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी संतोष कुमार देव पाण्डेय ने कायाकल्प योजना से विद्यालय को संतृप्त करने के प्रयासों पर ग्राम प्रधानों की सराहना करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के आयोजक खंड शिक्षा अधिकारी संजय कुमार राय ने बताया कि विकास खाड़ बनीकोडर मे २०६ विद्यालय संचालित है। अभिभावक अध्यापकों एवं बच्चो के सम्मिलित प्रयास से जल्दी ही ब्लॉक को निपुण ब्लाक बना दिया जाएगा। कार्यक्रम में राज्यमंत्री द्वारा विकासखंड में नवनिर्मित ४ विद्यालय भवनो का भी उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम में सुधा जायसवाल, नंदन पांडेय, प्रदीप कुमार सिंह, आशा मिश्रा,नीरज सिंह, राकेश लोधी, विवेक तिवारी, अशोक कुमार सहित विकासखंड बनीकोडर के समस्त विद्यालयों के अध्यापको सहित विकासखंड के ग्राम प्रधान उपस्थित रहे।

श्री लोधेष्वर महादेवा में सात दिवसीय महोत्सव का हुआ भव्य आगाज

बाराबंकी (एजेंसी)। राम नगर स्थित श्री लोधेष्वर महादेवा में सात दिवसीय महोत्सव शुक्रवार से आरंभ हो गया है। जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार ने शुक्रवार की दोपहर महादेवा पहुंचकर बैंड की मधुर धुनों के बीच विष्व कल्याण द्वार पर फीता काटकर व भोलेनाथ के दरबार में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा–अर्चना कर महादेवा महोत्सव का शुभारंभ किया। महादेवा महोत्सव इस बार ओम नमः षिवाय की थीम पर आयोजित किया जा रहा है। मंदिर परिसर से लेकर मंदिर में फूल–मालाओं से सजावट की गई है। गर्भगृह को रंग–बिरंगी लाइटों से सजाया गया है। श्री लोधेष्वर महादेव के दरबार में शुक्रवार को पूजन–अर्चन हरि ओम स्वस्ति न इंद्रो स्वस्ति। स्वस्ति नः पूषा स्वस्ति न वृहस्पति दधाति... के वैदिक मंत्र गूंजते रहे। विष्व कल्याण द्वार पर जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार ने फीता काटकर महोत्सव का शुभारंभ किया। इसके बाद जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार व पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह सहित पूर्व विधायक शरद अवस्थी आदि भोलेनाथ की आराधना के लिए मंदिर पहुंचे जहाँ पर अनिल शास्त्री, आदित्य तिवारी व मंदिर के पुजारी वीरेंद्र शास्त्री द्वारा अंग वस्त्र, नारियल, पुष्प, अक्षत, दूध, गंगाजल, शहद आदि से वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विधि विधान से पूजा–अर्चना कराई गई। इस दौरान पूरा परिसर हर–हर महादेव के जयकारों से गूंज उठा। इसके बाद जिलाधिकारी मेला मैदान में सांस्कृतिक मंच पर पहुंचे और दीप प्रज्ज्वलित कर महादेवा महोत्सव के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का शुभारंभ किया।बाक्स

तम्बाकू व मद्यपान निषेध एवं उपभेत्ता जागरुकता शिविर कार्यक्रम

मीरजापुर(एजेंसी)। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के संयुक्त सहयोग से उप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के निर्देशन में जनपद न्यायाधीश अरविन्द कुमार मिश्रा–।। के आदेशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में तहसील सदर के राजकीय पॉलटेक्निक कालेज के परिसर में शराब, तम्बाकू व मद्यपान निषेध तथा उपभोक्ता फोरम विषय पर विधिक साक्षरता, जागरूकता कार्यक्रम का शुभारम्भ डीएलएसए सचिव विनय आर्या, एवं उपस्थित अध्यापकों ने किया। कार्यक्रम का संचालन लवकेश कुमार पाल रिर्सोस पर्सन ने किया।डीएलएसए सचिव, अपर जनपद न्यायाधीश विनय आर्या ने उपस्थित छात्र एवं छात्राओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि तम्बाकू सेवन समाज के लिये अभिशाप है। आज के समय में नौजवानों में नशे के प्रति उत्साहिता ज्यादा होती है। जबकि तम्बाकू सेवन से कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी होती है। जिसमे नशा करने वाला व उसका परिवार दोनो परेशान होते है। सचिव ने यह भी जानकारी दी की तम्बाकू के सेवन से हम कैसे खुद को तथा अपने परिवार के सदस्यों को बचा सकते है। द्वारा उपभोक्ता विषय पर भी चर्चा किया गया। उन्होंने बताया कि उपभोक्ता फोरम क्या है, और इसका हमें लाभ कैसे मिल सकता है। परिसर में उपस्थित सभी छात्र एवं छात्राओं ने सचिव के साथ जागों ग्राहक जागो का नारा भी लगाया। शिविर में उपस्थित डा राजेश कुमार यादव ने परिसर में उपस्थित छात्र एवं छात्रों को तम्बाकू व मद्यपान सेवन से होने वाली गम्भीर बिमारियों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकरी दी और सभी छात्रों का शपथ दिलाया की वह खुद अथवा अपने परिवार, मित्र को तम्बाकू सेवन होने वाले बिमारियों के बारे में बतायेंगे तथा इसका सेवन करने से रोकेंगे। कार्यक्रम में डीएलएसएस कम्पयूटर सहायक रंजीत कुमार, महिला डा माण्डवी देवी, व्याख्याता सविता कुमारी, पवन कुमार विश्वकर्मा, जयकेश यादव, विजय बहादुर सिंह, जंग बहादुर पटेल व पीएलवी जय प्रकाश सरोज व कृष्ण कुमार के सराहनी सहयोग से तम्बाकू व मद्यपान निषेध एवं उपभोक्ता विषयक विधिक जागरूकता शिविर को सफल बनाया गया।

सुरक्षा से संपूर्ण सुरक्षा विषय पर एडवोकेसी कार्यशाला का आयोजन

सोनभद्र(एजेंसी)। शुक्रवार को संपूर्ण सुरक्षा केंद्र म्वशामी राज्य चिकित्मा महाविद्यालय (जिला चिकित्सालय) सोनभद्र में सुरक्षा से संपूर्ण सुरक्षा तक ंज तपो ीपअ नेगेटिव क्लाइंट के जन जागरुक हेतु एक एडवोकेसी मीटिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें जिला अधिकारीध्मुख्य चिकित्सा अधिकारीध्प्रधानाचार्य एवं मुख्य चिकित्सा अधीक्षक कि अध्यक्षता में कार्य क्रम आयोजित किया गया जिसमे उ0प्र0 राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के अधिकारी दिशा क्लस्टर के जिला कार्यक्रम अधिकारी डा० रोहित पाण्डेय, नागेन्द्रमणि मिश्रा, जी द्वारा ीपअ 4 कि बात जैसे कि ीपअ किन किन कारणों से फैलता है तथा इसका बचाव क्या है साथ ही साथ ीपअ कि जाँच और सुविधाओं के बारे में वृस्तित जानकारी दी गयी। जिला अधिकारीध्प्रतिनिधि डा० सुरेश कुमार सिंह प्रधानाचार्य ने ीपअ से बचने उपाय भी बताये तथा लोगों को ीपअ से सतर्क रहने का उअपय भी बतया कार्यकर्म जिला समाज कल्याण अधिकारी, थम परिवर्तन अधिकारी जिला कार्यकर्म अधिकारी लक्ष्यगत हस्तक्षेप परियोजना अधिकारी (टी आई) संपूर्ण सुरक्षा केंद्र से सुनील कुमार श्रीवास्तव व० परामर्शदाता, मयंक पाण्डेय (प्रबंधक संपूर्ण सुरक्षा केंद्र) फील्ड बोर्कर सुनीता पाण्डेय, अशोक कुमार सिंह, वाचस्पति मिधा महित चिकित्सालय के अन्य चिकित्सा अधिकारी मौजूद रहे। उपस्थित अधिकारीध्कर्मचारी में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० अश्वनी कुमार, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 जी एस यादव, जिला क्षय रोग अधिकारी डा० आर जी यादव, प्रधानाचार्य डा० सुरेश कुमार सिंह, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डा० वी सागर, जिला समाज अकल्याण अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, श्रम परिवर्तन अधिकारी,डा0 एस एस पाण्डेय व० चिकित्सा अधिकारी, डा0 जी रहमान, डा० प्रीतम पाठक असिस्टेंट प्रोफेसर, डा0 दीप्ती सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर, डा0 मोनिका सिंह, डा0 वी के श्रीवास्तव, डा0 संदीप सिंह,आर दी कौशल स्ज, सुनील कुमार श्रीवास्तव परामर्शदाता,मयंक पाण्डेय (प्रबंधक),मयंक पाण्डेय (प्रबंधक), शिवशंकर सिंह ज्प् प्रोजेक्ट मेनेजर, वाचस्पति मिश्रा, अशोक कुमार अवनीश मिश्रा अमित मुकला अशोक अभिजित अन्य लोग उपस्थित रहे। साथ ही साथ 1 दिसम्बर विश्व एड्स दिवस मनाये जाने कि भी जानकारी दी गयी और ीपअ क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों को परस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया।

खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग की कार्यवाही से मचा हड़कंप, कई मेडिकल स्टोर की हुई जांच

मीरजापुर(एजेंसी)। जिलाधिकारी के निर्देश के क्रम में जनपद में तथा प्राप्त शिकायतों नार्कोटिक दवाओं, नकली अधोमानक दवाओं की अवैध बिक्री, भण्डारण की रोकथाम हेतु शुक्रवार को खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा विंध्याचल स्थित औषधि प्रतिष्ठान विंध्य मेडिकल स्टोर, ममता मेडिकल स्टोर, कुशवाहा फार्मा, संजय फार्मेसी एवं जायसवाल मेडिकल स्टोर, विंध्याचल का निरीक्षण किया गया। साथ ही निर्देशित किया गया की शासन द्वारा जो संख्या निर्धारित की गयी उतनी मात्रा में ही नार्कोटिक दवाओं का भण्डारण करें एव डाक्टर के पर्चे के माध्यम से ही नार्कोटिक दवाओं को बेचे यदि कोई भी दुकानदार बिना डाक्टर के पर्चे के नार्कोटिक दवा बेचते हुए पाया जाता

चप्पे-चप्पे पर पुलिस का पहरा, ड्रोन कैमरा तीसरी आंख से होती रही निगहबानी

मीरजापुर(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के संभल कांड को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था कड़ी करने के साथ ही जिले में आकाश मार्ग से निगहबानी की जा रही है. पुलिस अधीक्षक मिर्जापुर अभिनन्दन के निर्देशन में जनपद के समस्त थानों द्वारा पर्याप्त पुलिस बल के साथ कानून एवं शांति व्यवस्था के दृष्टिगत भ्रमण कर शुक्रवार जुम्मे की नमाज को सकुशल संपन्न कराया गया है. साथ ही साथ तीसरी आंख ड्रोन कैमरे से सतत रूप से पैनी नजर रखी जा रही है. दरअसल, सूबे के संभल जिले में उत्पन्न हालात को देखते हुए सरकार पूरी तरह से सख्त हो उठी है. कहीं भी किसी प्रकार की हीलाहवाली न हो इसके लिए पुलिस प्रशासन को कड़े निर्देश दिए गए हैं इसके लिए पुलिस की मुस्तैदी बढ़ाएं जाने के साथ–साथ हर संभव जतन किए जा रहे हैं ताकि कहीं से भी कोई चूक न होने पाएं शुक्रवार को जुमा होने के नाते नगर क्षेत्र सहित अन्य इलाकों में भीड़–भाड़ वाले इलाके, मस्जिदों से लगाएं बाजारों में पुलिस का पहरा रहा है. खघसकर ड्रोन कैमरे से नजर रखी जा रही थी, खुद क्षेत्राधिकारी से लगाएं अन्य पुलिस अधिकारी पुलिस बल के साथ चक्रमण करते हुए नजर आए हैं नगर क्षेत्र के इमामबाड़ा, रामबाग, वारसलीगंज, कंतित, गजिया टोला, कटरा कोतवाली, जसोवर पहाड़ी, बरकछा इत्यादि इलाकों में पुलिस की नजर रही है.

हाईवा से बालू उतरवाते समय हुआ कुछ ऐसा कि खलासी की चली गई जान,

मीरजापुर(एजेंसी)। जिले के मड़िहान थाना क्षेत्र के कोटवा मोड़ मगर मुडेल गांव में हाईवा से बालू उतरवाते समय बालू के नीचे दबने से हाईवा खलासी की घटना स्थल पर हुई मौत ने सभी को झकझोर कर रख दिया है. कुछ लोगों के आंखों के सामने घटित इस घटना और देखते ही देखते मौत के मुंह में समा जाना अत्यंत हृदयविदारक बताया जा रहा है. जानकारी के मुताबिक मिर्जापुर जिले के हलिया थाना क्षेत्र अंतर्गत हलिया गांव निवासी फूलचंद्र पाल का 17 वर्षीय पुत्र गांव निवासी हाईवा चालक के साथ हाईवा वाहन पर खलासी का कार्य करता था. वह शुक्रवार की सुबह जिले के ही मड़िहान थाना क्षेत्र के कोटवा मोड़ मगर मुडेल गांव में बालू गिराने के लिए हाईवा का डाला खोलकर बालू गिरवा रहा था कि अचानक बालू के नीचे आने से उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई. हाईवा चालक ने बालू के नीचे दबे खलासी के शव को बालू से बाहर निकालकर उपचार के लिए जिला अस्पताल लेकर गये, जहां चिकित्सक ने खलासी को देखते ही मृत घोषित कर दिया. घटना की सूचना हाईवा चालक ने खलासी के परिजनों को देकर पुलिस को भी दे दी. बेटे की मौत की खबर मिलते ही मौके पर पहुंचे खलासी के परिजनों में कोहराम मच गया था. सूचना पर पहुंची पुलिस विधिक कार्रवाई में जुटीं रही है. मृत खलासी तीन भाइयो में दूसरे नंबर का था, जिसकी मौत से परिजनों सहित पूरे गांव में शोक छा गया है.

जंगल में पलटी डीसीएम, श्रमिक की मौत ,चालक फरार

मीरजापुर(एजेंसी)। मड़िहान थाना क्षेत्र के कुनबिया मार जंगल के पास गुरुवार की रात घोरावल से भूसी लादकर भदोही जा रही डीसीएम पलट गई। हादसे में वाहन के नीचे दबकर श्रमिक विशाल निवासी मझलीपुर जमुई मड़िहान की मौत हो गई। वहीं चालक वाहन छोड़कर फरार हो गया।

गुरुवार को डीसीएम पर भूसी लादकर तीन श्रमिक विशाल, विष्णु निवासी जमुई व सुक्खु निवासी गुरहवा घोरावल भदोही के लिए जा रहे थे। इसी बीच मड़िहान जंगल में पहुंचते ही गाड़ी अनियंत्रित होकर पलट गई जिसमें दबकर विशाल ललुहान हो गया। मौके पर पहुंची स्थानीय पुलिस के द्वारा तत्काल उसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया। जहां चिकित्सकों द्वारा उसे मृत घोषित कर दिया गया। घटना के बाद अंधेरे का लाभ उठाकर चालक मौके से फरार हो गया। मृतक तीन भाइयों में सबसे छोटा था। समाचार लिखे जाने तो स्वजन नहीं पहुंचे थे।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, मंगलवार 03 दिसंबर 2024
sheelshukla100@gmail.com

वाहन पार्किंग समेत विभिन्न समस्याओं को लेकर वकीलों ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज तहसील में शनिवार को औचक निरीक्षण के दौरान अधिवक्ताओ के प्रतिनिधिमण्डल ने भी संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा महामंत्री सूर्यकांत निराला के नेतृत्व में विभिन्न समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा। सौपे गये ज्ञापन में अधिवक्ताओं ने जिलाधिकारी से तहसील मे वाहन पार्किंग की

व्यवस्था को पूर्ण कराए जाने की मांग उठाई। डीएम संजीव रंजन ने एसडीएम को चिन्हित जमीन का निरीक्षण कर समुचित कार्रवाई के निर्देश दिये। रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने जन्म व मृत्यु प्रमाण पत्र से जुड़े वादो में विलम्ब को लेकर डीएम का ध्यान आकृष्ट कराया। संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा महामंत्री सूर्यकांत निराला ने न्यायालयों में राजस्व वादो के विलंबित रहने को लेकर डीएम से वादकारियो के हित में प्रभावी कदम का अनुरोध किया। पूर्व अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश ने लालगंज बाजार में अतिक्रमण तथा निराश्रित मवेशियों की समस्या के समाधान की बात रखी। डीएम ने अधिवक्ताओं को समस्याओं के समाधान कराए जाने का भरोसा दिलाया। इस मौके पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष विभाकर नाथ शुक्ल, उपाध्यक्ष बालेन्द्र त्रिपाठी आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

धीरेन्द्र शास्त्री के सनातन हिन्दू एकता यात्रा के समर्थन में श्रद्धालुओं का शंखनाद

लालगंज, प्रतापगढ़। बागेश्वर धाम के धीरेन्द्र शास्त्री जी के सनातन हिन्दू एकता पदयात्रा को लेकर शनिवार को जगदगुरू स्वामी करपात्री जी की जन्मस्थली भटनी में अनुयायियों ने समर्थन को लेकर सामूहिक संकल्प ग्रहण किया। स्वामी करपात्री जी सेवा संस्थान के तत्वाधान में श्रद्धालुओं ने श्रीरामचरितमानस के सामूहिक पाठ में सहभागिता दी। हवन पूजन के बाद महाआरती में भी श्रद्धालुओं का उत्साह देखा गया। सनातन हिन्दू एकता पदयात्रा को लेकर श्रद्धालुओं ने देवी देवताओं के जयकारे के साथ धर्म की जय हो का शंखनाद किया। वही दोपहर बाद हुए भण्डारे मे देर शाम तक श्रद्धालुओं ने पंक्तिबद्ध प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम का संयोजन संस्थान के सचिव राकेश त्रिपाठी व संचालन कोषाध्यक्ष अनुराग तिवारी ने किया। आयोजन में अध्यक्ष सुरेन्द्र तथा कृपाशंकर तिवारी, अशोक सिंह ने बागेश्वर धाम के पूज्य संत धीरेन्द्र शास्त्री जी के संकल्पों को पूरा किये जाने के लिए एकता का आहवान किया। कार्यक्रम में सनातन संस्कृति की महिमा पर भी वक्ताओं ने प्रकाश डाला। इस मौके पर राजकरन तिवारी, रविशंकर तिवारी, विवेक तिवारी, नागेन्द्र तिवारी, श्रीकांत तिवारी, अमृत लाल पटेल, राजेश कोरी, शिवशंकर, आनन्द, प्रदीप, रौनक, आदर्श, अर्पित आदि रहे।

वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु के जन्मदिन पर बाल मेले व विज्ञान प्रदर्शनी समेत प्रतियोगिताओं में चमका मेधावियों का हुनर

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर स्थित सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज में वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु के जन्मदिवस पर बाल मेला व विज्ञान प्रदर्शनी एवं खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि लालगंज सीओ रामसूरत सोनकर व विद्या मंदिर के प्रबंधक एवं पूर्व मंत्री प्रो. शिवाकांत ओझा ने किया। विशिष्ट अतिथि ब्लाक प्रमुख इं. अमित सिंह पंकज व अति विशिष्ट अतिथि प्रशिक्षु सीओ शशांक शेखर त्रिपाठी रहे। प्रदेश के पूर्व मंत्री प्रो. शिवाकांत ओझा ने उदघाटन समारोह में कहा कि महान वैज्ञानिक अबुल कलाम ने सपनों को देखने के साथ उसे पूरा करने की प्रेरणा दी है। उन्होनें विज्ञान को आधुनिक प्रगति का भी आधार बताया। कार्यक्रम में जिला प्रचारक कुण्डा संभाग सतीश तथा निदेशक आचार्य रामअवधेश मिश्र ने जगदीशचंद्र बसु के वैज्ञानिक योगदान पर प्रकाश डाला। बाल मेले में मेधावियो ने विज्ञान माडल का आकर्षक प्रदर्शन किया। वही कबडडी तथा कुश्ती की प्रतियोगिताओं मे भी विद्या मंदिर के मेधावियों का हुनर दिखा। कार्यक्रम का संयोजन प्रधानाचार्य उमाशंकर मिश्र ने किया। इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव, केशवराम ओझा, उमेशपाल मिश्र, प्रमोद पाण्डेय, प्रदोष नारायण सिंह, हर्षद शुक्ल, जितेन्द्र सिंह, वैभव त्रिपाठी आदि रहे।

सेंधमारी कर चोरों ने पचीस हजार नकदी समेत उड़ाये जेवरात, जांच मे जुटी पुलिस

लालगंज, प्रतापगढ़। अज्ञात चोरों ने पीडित के घर से पचीस हजार नकदी समेत सोने चांदी के कीमती जेवरात उडा लिये। लालगंज कोतवाली के मदनगढ़ बेलहा में बीती शुक्रवार की रात अज्ञात चोर एक घर में चोरी की वारदात में सेंधमारी कर कीमती सामान पर हाथ साफ कर दिया। गांव के बुधई के पुत्र उमाकांत गौतम के घर चोरी की घटना मे नकदी समेत जेवरात की चोरी को लेकर शनिवार को हडकंप मच गया। पीडित के मुताबिक रात करीब दो बजे घर मे खटखटाहट की आवाज हुई तो उसकी बेटी शालू जग गयी। पीडिता ने घर वालो को जगाया तो दो कमरों मे सेंधमारी हुई देख परिजन आशंकित हो उठे। चोरों ने कमरे मे बाक्स का ताला तोडकर सोने चांदी के जेवरात व पचीस हजार की नकदी पर हाथ साफ कर दिया। सूचना पर डायल एक सौ बारह पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की छानबीन की। चोरों द्वारा बाक्स एक खेत में फेंक दिया गया था। पीडित की तहरीर पर शनिवार की सुबह कोतवाली पुलिस भी मौके पर पहुंची। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव का कहना है कि जांच कर शीघ्र ही घटना का खुलासा किया जाएगा।

औचक निरीक्षण में खामियों पर चढ़ा डीएम का पारा, मातहतों को लगायी फटकार

लालगंज, प्रतापगढ़। जिलाधिकारी के शनिवार को अचानक तहसील तथा लालगंज ब्लाक के औचक निरीक्षण से प्रशासनिक अमले मे हडकंप मच गया। तहसील परिसर व ब्लाक में साफ सफाई न देखकर डीएम संजीव रंजन खासे नाराज दिखे। वही तहसील में न्यायिक पत्रावलियो के अवलोकन में जन्म व मृत्यु प्रमाण पत्र से जुडे वादो के निस्तारण मे ढ़िलाई देख डीएम का पारा चढ़ गया। डीएम ने एसडीएम नैंनसी सिंह से इसे जनता के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए पत्रावलियो को शीघ्रता से निस्तारण कराए जाने को कहा। राजस्व वादो के निस्तारण मे भी डीएम ने एसडीएम तथा प्रभारी तहसीलदार को गुणवत्ता से सुनवाई करते हुए शीघ्र निस्तारण कराए जाने के कडे निर्देश दिये। एसडीएम चौंबर में राजस्व निरीक्षको को भी डीएम ने तलब किया। फरियादियो की शिकायत पर मौके के निरीक्षण व आख्या मे लापरवाही पर राजस्व निरीक्षको को डीएम की कडी फटकार झेलनी पड़ी। सार्वजनिक सम्पत्तियो तथा चक मार्गो व तालाबी अराजी की जमीनों पर अतिक्रमण के बाबत कार्रवाईयो मे ढिलाई पर भी तहसील प्रशासन को डीएम की नाराजगी झेलनी पड़ी। शासकीय योजनाओं को लेकर आख्या के बाबत भी जिलाधिकारी संजीव रंजन ने राजस्व निरीक्षको को समयबद्ध समुचित आख्या दिये जाने को लेकर आगाह किया। डीएम ने तल्ख चेतावनी दी कि लोगों की शिकायतो के निस्तारण तथा शासन से जुडे मामलो मे आख्या देने में पारदर्शिता न दिखी तो दोषी अब निलंबन की जद में भी लाये जाएंगे। जिलाधिकारी का चढ़ा पारा देख राजस्वकर्मियों की बोलती बंद दिखी। वही तहसील मे साफ सफाई मे भी कमी देख डीएम ने प्रभारी तहसीलदार पंकज कुमार को फटकार लगायी। लेखपालों व राजस्व निरीक्षको के कार्यो के पर्यवेक्षण में भी लापरवाही पर डीएम ने प्रभारी तहसीलदार को जमकर कर्रा किया। डीएम का तल्ख तेवर देख प्रभारी तहसीलदार की घिघ्घी बंधी नजर आयी। राजस्व वसूली तथा अतिक्रमण से जुडी कार्रवाईयो व प्रार्थना पत्रो के निस्तारण के बाबत एसडीएम नैंनसी सिंह ने डीएम को वांछित जानकारियां प्रदान की। निरीक्षण के बाद डीएम संजीव रंजन ने एसडीएम चौंबर में फरियादियो की भी शिकायतो की सुनवाई की। उन्होने एसडीएम तथा प्रभारी तहसीलदार को इन शिकायतों के निस्तारण कराए जाने के साथ आख्या भी भेजवाए जाने के निर्देश दिये। इसके बाद डीएम अचानक लालगंज ब्लाक आ धमके। यहां मनरेगा के कार्यो में एक एक कर समीक्षा में डीएम ने पारदर्शिता पर जोर दिया। मनरेगा के कराए गए कार्यो मे फोटोग्राफ की फीडिंग के आंकड़ो में समन्वय न पाए जाने पर डीएम ने एपीओ रमेश को फटकार लगायी। ब्लाक परिसर में सरकारी तालाब के समीप कूड़े का डंप देख जिलाधिकारी खासे नाराज हुए। एडीओ पंचायत विमलेश मिश्र को तलब कर डीएम ने जमकर खरीखोटी सुनाई। उन्होने ब्लाक परिसर में किसी भी प्रकार के निजी आयोजनो को लेकर भी ब्लाक प्रशासन को आगाह किया। वही ब्लाक परिसर के समीप निर्मित जलनिगम की टंकी के अर्से से खराब होने की जानकारी पर भी डीएम ने जलनिगम के अधिशाषी अभियंता से स्पष्टीकरण लिये जाने के निर्देश दिये। बीडीओध्एआर सहकारिता देवेन्द्र वर्मन ने जिलाधिकारी को मनरेगा समेत ग्रामीण विकास से जुडी परियोजनाओं पर अब तक की प्रगति का आंकडा पेश किया। अवर अभियंता अनुज पाण्डेय ने विभागीय कार्यो से डीएम को अवगत कराया। ब्लाक प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह पंकज ने प्रधान विद्युत मिश्र तथा उधम सिंह आदि के साथ डीएम को बुकें भेंट कर सम्मानित किया। ब्लाक प्रमुख अमित सिंह ने क्षेत्र पंचायत की कार्ययोजनाओं के समुचित संचालन की जानकारियां प्रदान की। डीएम ने रामपुर संग्रामगढ़ ब्लाक मुख्यालय का भी औचक निरीक्षण किया। यहां डीएम ने उपस्थिति पंजिका के साथ अभिलेखों का भी अवलोकन किया। अवर अभियंता ग्रामीण अभियंत्रण शुभम त्रिपाठी व ग्राम विकास अधिकारी राकेश मिश्र ने उन्हें वांछित जानकारियां दी। डीएम ने यहां भी परिसर में साफ सफाई के साथ योजनाओं के संचालन में समयबद्ध कार्रवाई के निर्देश दिये। वहीं जिलाधिकारी के अचानक तहसील तथा लालगंज एवं रामपुर संग्रामगढ़ ब्लाक परिसर में औचक निरीक्षण से घण्टों अफरातफरी का माहौल दिखा।

मोदी सरकार की खराब अर्थव्यवस्था से देश की साख को लग रहा है बट्टा- प्रमोद तिवारी

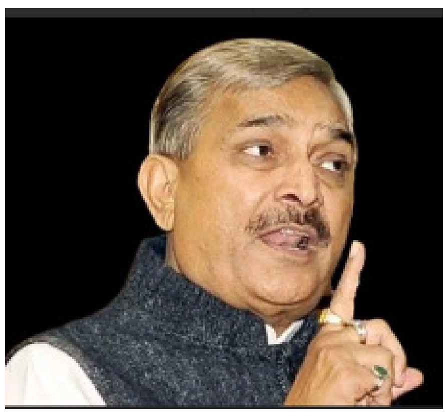

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने जीडीपी में लगातार न्यूनतम स्तर पर हो रही गिरावट को देश की साख के लिए चिंताजनक कहा है। उन्होने कहा कि पिछले सात तिमाही में जीडीपी सात प्रतिशत की जगह घटकर 5.4 के मानक पर पहुंचना मोदी सरकार की अर्थनीति की खामियों को उजागर कर गया है। उन्होने कहा कि आर्थिक क्षेत्र में मंदी को लेकर पिछले अठारह माह में अर्थव्यवस्था के चौपट होने के लिए मौजूदा केन्द्र की भाजपा सरकार सीधे तौर पर दोषी है। उन्होने कहा कि मोदी सरकार की बद से बदतर कमजोर आर्थिक नीतियों के चलते इस समय डालर के मुकाबले रूपये का रोज कमजोर होना भी बेहद चिन्ताजनक है। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने हाल ही में एनएसओ के ताजा आंकडे का हवाला देते हुए कहा कि मौजूदा केंद्र सरकार की अपरिपक्वता के कारण सकल घरेलू उत्पाद के क्षेत्र में कमजोरी आ रही है। उन्होनें कहा कि सर्वाधिक चिन्ताजनक यह है कि निर्माण के क्षेत्र में 7.7 फीसदी तथा कृषि क्षेत्र में 3.5 फीसदी व बिजली एवं गैस के क्षेत्र में भी 3.3 फीसदी का भाजपा सरकार के कार्यकाल में सबसे खराब प्रदर्शन सामने आया है। उन्होनें कहा कि खाने पीने की आम आदमी की जरूरत की चीजों मे ऊंची मंहगाई चरम पर है। उन्होने कहा कि रूपये की साख का दिनोंदिन घटना व देश के विदेशी मुद्रा भण्डारण में भी लगातार गिरावट के साथ राजकोषीय घाटे में भी बढोत्तरी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खोखले दावों को बेनकाब कर गया है। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने अर्थव्यवस्था के चौपट हालात को लेकर मोदी सरकार से अब देश से क्षमायाचना करने पर भी जोर दिया है। उत्तर प्रदेश के संभल में विपक्षी नेताओं के दौरे को रोकने पर प्रतिक्रिया जताते हुए राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि आखिर सरकार और जिला प्रशासन इस प्रकार के प्रतिबन्ध से कौन सी सच्चाई छिपाने की फितरत में है। अदाणी मुददे पर भी सरकार की मंशा पर सवाल उठाते हुए राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि तेईस सौ करोड़ की भारी भरकम रकम के रिश्वतखोरी के मामले मे सरकार का नजरिया जनता के बीच दाल मे कुछ काले के अंदेशे को लगातार बढ़ाता जा रहा है। उन्होने कहा कि केन्द्र सरकार देश की प्रतिष्ठा को बहाल रखने के लिए विपक्ष की अदाणी समूह के द्वारा रिश्वतखोरी के इस बडे मामले में जेपीसी गठन की मांग को अनदेखी करने से बाज आये। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी का यह बयान शनिवार को यहां मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल के हवाले से निर्गत हुआ है।

बिजली बकायेदार से वसूली के दौरान जेई पर चाकू से हमले का प्रयास

सुल्तानपुर जिले के कादीपुर कोतवाली अंतर्गत सूरापुर का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। जिसमें एक युवक ने बिजली विभाग के जेई पर चाकू से हमले का प्रयास किया। बिजली विभाग की टीम शनिवार को उससे बकाया वसूलने पहुंची थी। जिस पर पहले तो आरोपी युवक ने अभद्रता किया और फिर चाकू लाकर हमले का असफल प्रयास किया। शनिवार को कादीपुर उपकेंद्र के जेई सुमित कुमार मंडल अपनी टीम के साथ सूरापुर क्षेत्र में बकायदारों से वसूली के लिए निकली थी। इस बीच बाजार में वसूली करते हुए टीम जब सिनेट्री दुकानदार सतीश पुत्र बाके लाल के पास पहुंची और बकाया जमा करने को कहा तो वो बिजली विभाग की टीम से उलझ गया। पहले तो उसने जेई से अभद्रता किया।फिर जब बात बढ़ी तो दौड़कर दुकान के अंदर गया और एक चाकू लेकर आया। उसने चाकू निकालकर हमले का असफल प्रयास किया। हालांकि आसपास के लोगों ने मौके पर पहुंचकर बीच बचाव किया तब कही जाकर जेई की जान बची। इसी दौरान जेई ने पुलिस को फोन किया। जिस पर पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंच गई। पुलिस ने आरोपी युवक को हिरासत में लिया और थाने लेकर आई है। वही जेई सुमित कुमार मंडल ने आरोपी के विरुद्ध तहरीर कोतवाली में दी है। सीओ कादीपुर विनय गौतम ने बताया कि तहरीर के आधार पर विधिक कार्रवाई की जा रही है। वही जेई सुमित कुमार मंडल ने बताया कि आरोपी सतीश का लगभग 80 हजार रूपए का बिजली का बिल बकाया था। उससे बिल जमा करने को कहा गया तो वो अभद्रता पर उतर आया। उन्होंने ये भी बताया कि जब से कनेक्शन लिया गया है तब से आजतक एक बार ही जमा हुआ है।

गभड़िया ओवर ब्रिज पर गंभीर मरीजों के जीवन के साथ हो रहा है खिलवाड़

सुलतानपुर (एजेंसी)। नगर कोतवाली क्षेत्र के गभड़िया ओवरब्रिज के ऊपर रोज शाम दर्जनों बारात निकलने की वजह से लगने वाले ट्रैफिक जाम में अक्सर गंभीर मरीजों को इलाज के लिए ले जाती एंबुलेंस फंस रही हैं। ऐसे में समय रहते इलाज न मिलने के चलते जहां मरीजों की स्थिति क्रिटिकल हो जाती है वहीं अब तक न जाने कितने मरीजों की जान इलाज में देरी होने के चलते जा चुकी होगी। विदित हो कि गभड़िया ओवरब्रिज के आसपास के इलाके में दर्जनों मैरिज लान है, जहां पर जाने के लिए सभी बारातों को ओवर ब्रिज से गुजरना पड़ता है। पुल के ऊपर डीजे बजाने पर रोक न होने के चलते बारात में शामिल महिला पुरुष पूरे ओवरब्रिज को पार करने के दौरान नाचते गाते रहते हैं। जिसके चलते पुल पर भयंकर जाम लग जाता है और सैकड़ों गाड़ियां सड़क पर फंस जाती है। दुखद पहलू यह है कि इस दौरान गंभीर मरीजों को इलाज के लिए ले जाती एंबुलेंस भी वहां लगे ट्रैफिक जाम में फंस जाती है। मरीजों के साथ चलने वाले उनके परिजन एंबुलेंस से उतर कर जाम खुलवाने का प्रयास करने लगते हैं। जाम में फंसे सभी वाहन चालक एंबुलेंस की सायरन को सुन कर उसको तत्काल आगे जाने हेतु यथासंभव अपने वाहन को किनारे लगाने का प्रयास करते हैं परंतु ओवरब्रिज पर सीमित जगह होने के चलते समय रहते जाम से छुटकारा नहीं मिल पाता। डीजे की तेज आवाज में नाचते गाते बरातियों को न एंबुलेंस की सायरन सुनायी देती है और न ही उन्हें एंबुलेंस में फंसे मरीजों की जान की परवाह ही होती है। इस बाबत मानव अधिकार संरक्षण के राष्ट्रीय प्रभारी डी पी गुप्ता एडवोकेट ने जनसुनवाई पोर्टल के माध्यम से जिला प्रशासन से मांग किया कि जब तक शादी विवाह का सीजन चले तब तक गभड़िया ओवर ब्रिज पर रोज शाम छः बजे से रात दो बजे तक पर्याप्त पुलिस कर्मियों की नियमित तैनाती हो जो वहां से गुजरने वाली प्रत्येक बारात का डीजे ओवरब्रिज के ऊपर बजाने व नाच गाने पर रोक लगायें ताकि पुल पर ट्रैफिक जाम न लगे।

मार्ग दुर्घटना में तीन युवक घायल, रेफर

लालगंज, प्रतापगढ़। दो अलग अलग मार्ग दुर्घटनाओं में तीन लोग घायल हो गये। लालगंज के देल्हूपुर निवासी राज सरोज उर्फ लल्लू 25 पुत्र लालजी सरोज शुक्रवार की देर शाम बाइक से किसी काम से सांगीपुर बाजार गया था। वहां से वापस घर जाते समय उदयपुर थाना अन्तर्गत भइयापुर के पास जेसीबी मशीन से बाइक की टक्कर हो गयी। जिसमें राज सरोज गंभीर रूप से घायल हो गया। सीएचसी सांगीपुर से चिकित्सकों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहीं दूसरी घटना में रोहाड़ा निवासी राहुल दुबे 24 पुत्र अरूण कुमार दुबे अपने चचेरे भाई रोहित दुबे 22 पुत्र अनिल कुमार दुबे के साथ शनिवार सुबह करीब दस बजे बाइक से रिश्तेदारी जा रहा था। रास्ते में कैथन का पुरवा के पास सामने से आ रहे अज्ञात वाहन ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे दोनों गंभीर रूप से घायल हो गये। इलाज के लिए सांगीपुर सीएचसी पहुंचाए जाने पर यहां हालत गंभीर देख चिकित्सकों ने दोनों घायलों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

साले का हत्यारोपी जीजा पिस्टल समेत गिरफ्तार

सुल्तानपुर (एजेंसी)। एसटीएफ ने रमेश अग्रहरि मर्डर केस में हत्यारोपी जीजा को गिरफ्तार कर लिया है। उसके पास से लाइसेंसी पिस्टल, मैगजीन व मोबाइल पुलिस को मिला है। कोतवाली नगर के लोहरामऊ रोड स्थित अंकित पेट्रोल पंप के पास से उसे पकड़ा गया। गुरुवार की रात हत्यारोपी ने साले को अपने ही घर पर गोली मारकर मौत की नींद सुला दिया था। गुरुवार को धनपतगंज थानाक्षेत्र के नरसड़ा गांव निवासी लखपती देवी बेटे रमेश चंद्र (44) के साथ एक रिलेटिव की बरात में शामिल होने शहर के महुअरिया स्थित धर्मशाला आई थी। लखपति की पुत्री सीमा अपने पति संतोष कुमार अग्रहरि के साथ कोतवाली नगर के शास्त्रीनगर स्थित कटहल वाली बाग में किराए के मकान में रहती है। संतोष जयसिंहपुर कोतवाली अंतर्गत पुरुषोत्तमपुर गांव का मूल निवासी है। शादी में शामिल होने से पूर्व बेटे रमेश के साथ बेटी के मकान पर शाम को पहुंची थी। मां–बेटे को घर में देखकर संतोष आग बबूला हो गया। आरोपी संतोष ने पत्नी से बदसलूकी किया जिस पर सीमा का भाई रमेश विरोध करने लगा। यही पर वाद–विवाद बढ़ गया और संतोष ने रमेश को लाइसेंसी पिस्टल से गोली मारा और फरार हो गया। रमेश को राजकीय मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। जहां डॉक्टर ने रमेश को मृत घोषित कर दिया। शुक्रवार को हुए पोस्टमार्टम में रमेश को बाई ओर एक गोली लगने की पुष्टि हुई है। बताया जा रहा है कि उसका हार्ट तक फट गया था। मृतक की मां लखपती की तहरीर पर आज दामाद संतोष, उसकी प्रेमिका सान्या यादव, सास मालती, देवर राजेश व देवरानी सुमन के खिलाफ केस दर्ज किया है। मां ने इन सब पर बेटी को प्रताड़ित करने का आरोप लगाया है। मृतक रमेश चंद्र अग्रहरि का शुक्रवार देर शाम पैतृक गांव में अंतिम संस्कार किया गया।

मोहम्मद साहब की बेटी की शहादत पर तीन दिवसीय मजलिस का आयोजन

सुल्तानपुर (एजेंसी)। मोहम्मद साहब की इकलौती बेटी जनाबे फातमा जहरा के शहादत के मौके पर 3 दिसम्बर से 5 दिसंबर तक शिया बाहुल्य क्षेत्र अमहट गोराबारिक, अलीगढ़, अलीनगर, तुराबखानी, ऊँचवा, मेड़ई खॉ का पुरवा, खैराबाद, सैदपुर, करौंदिया ,चुनहा, हयातनगर, कोटवा, सुरौली, मूँगर, बेलहर, पियारेपुर, कादीपुर, दोस्तपुर, माल्हा, भाई लौहर दक्षिण, पीथापरु, हसनपुर, मनियारपुर, जूडूपुर, प्रतापपुर मनियारी, सैदखानपुर, लुसहा वलीपुर, कारीभीट, इसौली धवरहरा, सजैयाकरीमपुर, छतौना आदि इलाकों में प्रतिदिन रात 8 बजे मजलिस का आयोजन किया जायेगा। इसके साथ–साथ अमहट में मौलाना जायर हसन खान की तरफ से हुसैनिया बादल खॉ में 2 दिसंबर से 6 दिसंबर तक प्रतिदिन रात 8बजे मजलिस का आयोजन किया गया है। जिसको मौलाना सैयद तहकीक हुसैन रिजवी गुजरात मौलाना सैयद कमर अब्बास नकवी बंगलौर मौलाना सैयद अफजल अब्बास लखनऊ मौलाना सैयद एकरार रजा रामपुर मजलिस पढ़ेंगे 5दिसंबर को दिनभर हुसैनिया बादल खॉ गोराबारिक में मजलिस होगी और यही मौलाना मजलिस पढ़ेंगे और अंजुमन असगरिया कदीम अमहट नौहा पढ़ेगीऔर मातम करेगी और 5दिसंबर को रात 8बजे अंजुम असगरिया अमहट की तरफ से हुसैनिया नौतामीर अमहट में एक मजलिस होगी जिसमें पेशख्वानी जोहेर अकबरपुरी आरिफ रजा लखनऊ अंसार ,आबिस रजा संचालन मौलाना फैज अब्बास मौलाना जीशान हैदर करेंगे। और मजलिस मौलाना रेहान हैदर जैदी आस्ट्रेलिया पढ़ेंगे इसके बाद अमहट की सभी अंजुमने नौहा मातम करेंगी और जनाबे फातमा जहरा सलामुल्लाह अलैहा के शबीह ताबूत का जुलूस हुसैनिया नौतामीर से उठकर जामा मस्जिद अमहट पर खत्म होगा। दौराने जुलूस मौलाना मोहम्मद जाफर खान मौलाना मौलाना सैयद मोहम्मद आबिद मुजफ्फर नगर तकरीर करेंगे।

संगठन के विस्तार पर भी कार्य किया जाना चाहिए

सुल्तानपुर।पत्रकार एसोसिएशन की मासिक बैठक नगर के प्रेस क्लब में डा0 अवधेश शुक्ला की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में संगठन के द्वारा पत्रकार हितों में किए गए अब तक के कार्यों पर चर्चा की गई। अध्यक्ष डॉ0 अवधेश शुक्ला ने पत्रकार हित में किए जा सकने वाले कार्यों पर उपस्थित पत्रकारों से सुझाव मांगे।

संगठन की ओर से प्रत्येक वर्ष प्रकाशित किए जाने वाले नव वर्ष के कलेंडर में विज्ञापन के लिए चर्चा की गई। संगठन सचिव विनोद पाठक ने जनपद की सभी तहसीलों में संगठन की इकाई बनाने की बात कही। संगठन द्वारा पत्रकार हित में कार्य करने पर सभी उपस्थित पत्रकारों ने सहमति जताई। अध्यक्ष की अनुमति से बैठक समाप्ति की घोषणा की गई।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।